अंग्रेज़ जासूस के ऐतराफात
और
अंग्रेज़ो की इस्लाम के खिलाफ दुश्मनी
मो० सिद्दिक गूमूश

अंग्रेज़ जासूस के ऐतराफात

और

अंग्रेज़ो की इस्लाम के खिलाफ़ दुश्मनी

मौ० सिद्दिक गूमूश

14वाँ ऐडिशन

हकीकत बुकस्टोर

दारूश्शफ़ेका कैड. 57 पी.के : 35 34083

फोन: 90.212.523 4556 - 532 5843 फैक्स: 90.212.523 3693

फातिह-इस्तानबुल/तुर्की

http://www.hakikatkitabevi.com
e-mail: info@hakikatkitabevi.com

हुसैन हिल्मी इशिक 'रहमतुल्लाही अलैहि'

हुसैन हिल्मी इशिक 'रहमतुल्लाही अलैहि' हकीकत किताबेवी की इशाअतों के नाशिर, अय्युब सुल्तान, इस्तानबुल **1329** (**1911** ए.डी) में पैदा हुए थे।

उनकी इशाअत करदा **140** किताबों मे से, **60** अरबी मे, **25** फ़ारसी मे, **14** तुर्की में, और बाकी दूसरी किताबों को अंग्रेज़ी, फ्रेन्च, जर्मन, रशिया और दूसरी ज़ुबानों मे इशाअत किया।

हुसैन हिल्मी इशिक 'रहमतुल्लाही अलैहि' सय्यद अब्बदुल हकीम अरवासी के ज़रिए सिखाए गए इस्लाम के एक अच्छे आलिम और तस्व्वुफ़ के फ़ज़ाइल के बहतर और मुरीदों को पक्के तरीके से राह दिखाने के काबिल शौहरत और अकलमंदी के हाकिम ऐसे मिजाज़ के थे, इस्लाम के महान आलिम खुशियों की राह दिखाने के काबिल थे, और वे **25** अक्तूबर सन **2001** की बीच रात के दौरान (**8** शाबान **1422**) मे वफ़ात पा गए। जहाँ वे पैदा हुए थे, अय्युब सुल्तान मे उन्हे दफ़नाया गया।

पब्लिशर नोट

अगर कोई इस किताब को इसकी असली शक्ल में छपवाना चाहे या किसी और ज़बान मे तर्जुमा करके छपवाना चाहे तो उसको हमारी तरफ से इसकी इजाज़त है। जो लोग इस किताब को तर्जुमा या छपवाकर आगे देंगे हम अल्लाह तआला से उनके लिए दुआ करेंगे और उनके शुक्रगुज़ार हैं।

हमारी यह इलतिजा है कि अगर कोई इस किताब को छपवाऐ तो इसके सफ़हों की क्वालीटी अच्छी हो, बिल्कुल सही तरीके से और बग़ैर गलती के छपवाया जाए।

एक अहम नोट: ईसाई मिशनरी अपनी बातों को फ़ैलाने की कोशिश कर रहे हैं, यहूदी लोग भी अपनी बातों को फ़ैलाने की कोशिश में लगे हुए हैं। हकीकत किताबेवी (बुकस्टोर) जोकि इस्तानबुल में है। इस्लाम को फ़ैलाने की जद्दोजहद कर रहे हैं जबकि बहुत लोग इस्लाम को नुकसान पहुँचाने मे लगे हुए हैं। जो इन्सान अक्ल रखता है जानकारी रखता है और दिल से सही रास्ते की तलब करता है तो वह यकीनन सीधी राह को पा लेगा। जितनी भी राहें उसे मिलें वह उनमें से वे राह चुनेगा जो इन्सानियत की निजात के लिए हो। इससे ज़्यादा अच्छा या कीमती और कुछ नहीं हो सकता के इन्सानियत की भलाई के लिए काम करते रहना यही हमारा मकसद है।

तुर्की मे छापा और इशाअत किया गया:

ILHAS GAGETECILIK A.S.

मर्कज़ माह. 29 एकिम जद्र. इहलास प्लाज़ा नः 11A.]41

34197 येनिबोसना-इस्तानबुल फोनः 90.212.454 3000

दिबाचा

अल्लाह तआला ने कुरआन अल करीम की **सूरह माएदा** की बयासीवीं आयत में फरमाया, "इस्लाम के सबसे बड़े दुश्मन यहूदी और मुश्रिकीन हैं।" इस्लाम को अंदर से खत्म करने के लिए भड़काया गया पहला फसाद यमन के एक यहूदी, जिसका नाम अब्दुल्लाह बिन सेबे की तदबीर से था। उसने **अहल अस-सुन्ना** एक सच्ची मुस्लिम जमात के खिलाफ़ शिया उल्मा के लिबादे में हर सदी में इस फिरके को मज़बूत करते आए हैं। 'ईसा अलैहिस्सलाम' के इरतफ़ाह/उठाए लिए जाने के बाद कई खराब बाएबलें लिखी गई। ज़्यादातर ईसाई **मुशिरक** (वो जो एक से ज़्यादा खुदा को मानें) बन गए। दूसरे **काफिर** (कुफ्र करने वाले) बन गए क्योंकि वे मुहम्मद अलैहिस्सलाम पर यकीन नहीं रखते। इन्ही यहूदीयों को **अहल-ए किताब** (आसमानी किताब के साथ वाले लोग) कहा जाता था। जब इस्लाम कायम हुआ, तो पादरियों की हुकमारानी, जैसे कि सियाह ज़माने में थी, उसे खत्म कर दिया गया। उन्होने इस्लाम को खत्म करने के लिए मिशनरी तनज़ीमों की बुनियादी रखी। फिरंगी इस सिलसिले में नकीब थे। इस्लाम के खिलाफ लड़ने के नुकत ए-नज़र से दौलत मुशरका की एक वज़ारत लंदन में कायम की गई। लोग जो इसमें काम करते थे उन्हें यहूदी दाओ पैच सिखाए गए। बगैर सोचे समझे शैतानी मंसूबो की तदबीर की गई। इस्लाम पर हमला करने के लिए उन्होंने सारी दस्तायब फौजी और सियाही ताकतों का इस्तेमाल किया ।

हज़ारों मर्द और औरत एजंट वुज़ारत के ज़रिए नौकरी पर रखें गए और सारे मुल्कों मे भेजे गए उन्ही मे एक हेमफर था। जिसने एक शख्स जिसका नाम मुहम्मद था नजद का को बसरा मे, फँसाया, और कई साल उसे गुमराह

किया, और 1125 [1713 ए. डी] में **वहाबी** फ़िरका कायम करने का सबब बना। उन्होने 1150 में इस फिरके का एलान किया।

हेमफर एक ब्रिटिश/अंग्रेज़ है जिसे अंग्रेज़ी मुशतरका दौलत की वज़ारत के ज़रिए मिस्र, इराक, हिजाज़ और इस्तानबुल, (इस्लामी) ख्विलाफत क मर्कज़ में जासूसी सरगर्मियों को चलाने का, मुसलमानों को गुमराह करने और ईसाईयत की ख्विदमत करने का काम सौंपा गया था। ।कोई बात नहीं चाहे कितना ही इस्लाम के दुश्मन मेहनत कोशिश करलें इस्लाम का सफ़ाया करने की, फिर भी वो कभी अल्लाह तआला की रोशनी को बुझाने मे कामयाब नहीं हो सकते।इसलिए अल्लाह तआला ने मंदरजाज़ेल फरमाया, जैसे के सूरह यूसुफ़ की बारहवीं और तिरसठवीं आयतों और सूरह हिजर की नवीं आयत में कुरआन अल करीम में वाज़ेह हैः **"मैंने ये कुरआन तुम पर नाज़िल किया।हकीकत में मैं इसका मुहाफ़िज़ हूँ।"** काफ़िर इसकी बेहुरमती, तबदील या इसे नापाक नहीं कर सकेंगे। वो कभी रोशनी को नहीं बुझा सकते। अल्लाह तआला ने कुरआन अल करीम को अपने महबूब नबी मुहम्मद 'अलैहिस्सलाम' पर अपने फरिश्ते जिबरईल के ज़रिए थोडा-थोडा तेईस साल में उतारा। अबू बक्र "रज़ीअल्लाहु तआला अन्ह," पहले ख्वलीफ़ा, के पास 6236 आयतें थीं जो अल्लाह तआला के ज़रिए भेजी गईं, उन्हें मिलाया/मरतब किया गया, और इस तरह एक आला किताब **मसहफ़** तशकील की गई। मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने अपने असहाब-ए किराम को पूरा कुरआन अल करीम वाज़ेह किया।इस्लामी आलिमो ने जो कुछ असहाव-ए किराम से सुना उसे लिख्व लिया। इस तरह हज़ारों तफ़सीर (वज़ाहत) की किताबें कायम हुई और हर मुल्क में उन्हें छापा गया। सारी जो कुरआन अल करीम की कॉपियाँ जो आज दुनिया में मौजूद हैं वो सब एक जैसी हैं।उनमें से एक में भी कोई वाहिद लग़वी या तफ़रीकी निशान की अलामत नहीं मिलती। चौदह सादियों से मुसलमान कुरआन अल करीम के ज़रिए सिखाए गए बराईट तरीके से काम कर रहें हैं और इल्म में,

अख़्लाकियात में, साईस, फ़नून, तिजारत और सियासत में तरक्की कर रहें हैं। उन्होंने बड़ी रियास्तें कायम कीं। फ्रांसीसी इंकलाब के बाद 1204 [सी.ई .1789] में, यूरोपीय जवानों ने बेहयाई, मज़ालिमों, डकैतियों और झूठ को गिरजा घरों और पादरियों के ज़रिए बढ़ावा देते हुए देखा, और, जिसके नतीजे में, उनमें से कुछ मुसलमान बन गए, जबकि दूसरे मुलहिद बन गए। ईसाई मज़हब से दूर, उन्होंने साईन्स और टेक्नॉलोजी में ज़्यादा तरक्की की। ईसाईयत दुनियावी कोशिशों और तरक्की के लिए रूकावट थी। और कुछ मुसलमान, ईसाईयत पर तंकीद करने के लिए इन नौजावान लोगों के ज़रिए लिखी गई किताबों को पढ़ते हैं, और अंग्रेज़ मिशनारियों के ज़रिए इस्लाम के खिलाफ़ झूठ और तोहमतों की हिदायत पर यकीन रखते हैं, वो इस्लाम से बिल्कुल गाफ़िल हो जाते हैं। जैसे के वो इस्लाम से परे होते हैं, वो साईन्स में कम होने लगते हैं। इस्लाम के खास अहकाम में से एक में दुनियावी तरक्की के लिए काम करना है।

अंग्रेज़ी सरकार की पॉलिसी बुनियादी तोर पर दुनिया की कुदरती दौलत, खासतौर से जो अफ्रिका और भारत में हैं उसको इस्तेहासील करने और वहाँ के रहने वालों को जानवरों की तरह काम पर लगाकर और सारी बरामद आमदनी ब्रिटेन में भेजने पर मुबनी है। लोग जिनको इस्लाम पाने की खुशकिस्मती हासिल हैं, वो मज़हब जो इंसाफ़, आपसी प्यार और ज़कात का हुकूम देता है, वो अंग्रेज़ी मज़ालिम और झूठ के लिए एक बड़ी रूकावट बनें।

हमने अपनी इस किताब को तीन हिस्सों में तैयार किया है:

पहला हिस्सा, जिसके सात हिस्से हैं, जो अंग्रेज़ जासूसों की गिबतों पर मुशतमिल है। इन्हे इस्लाम का सफ़ाया करने के लिए अंग्रेज़ों के ज़रिए डिज़ाइन किया गया।

दूसरा हिस्सा अंग्रेज़ी कपट के बारे में है के किस तरह उन्होंने मुस्लिम मुल्कों में अपनी गददार मंसूबाबदी को डाला, किस तरह उन्होंने सियासतदानों को धोखा दिया, किस तरह उन्होंने नाकाबिले गौर तलब अज़ाब मुसलमानों पर नाज़िल किया, और किस तरह उन्होंने हिंदुस्तानी और उसमानिया रियास्तों को खत्म किया। किस तरह यहूदी और अंग्रेज़ों ने इस्लाम पर हमला किया ये **हकीकत-उल यहूद** से कोटेशन के साथ बताया गया, जिसे फौद बिन अबर्दु रहमान रूफ़ाई के ज़रिए लिखा गया और मकतबातुसहाबेतुज इस्लामिया कुवैत-सफ़ात-सनिमिया में छापा गया। हमारी किताब के इस हिस्से को ऐसी दस्ताविज़ात के साथ तसदीक किया गया है जो उन गरीब मुसलमानों को जगा देंगे जो वहाबियों के जाल में फँस गए हैं और अहल अस सुन्नत के आलिमों की तहरीरों की हिमायत करेंगे।

मिलादी	हिजरी शमसी	हिजरी कमरी
2001	**1380**	**1422**

सेकशन एक

पहला हिस्सा

हेमफर का कहना है:

हमारा ग्रेट ब्रिटेन बहुत वसीअ है। सूरज इसके समुंद्रों के ऊपर उगता है, और दोबारा, इसके समुंद्रो में गुरूब होता है। अभी तक हमारी रियास्त भारत, चीन और मशरिक बस्ती में इसकी कालोनियों के नसबतन कमज़ोर है। ये मुल्क पूरी तरह हमारे कबज़े में नहीं है। ताहम, हम इन जगाहों पर फआन और कामयाब पॉलिसी चला रहें हैं। हम बहुत जल्दी इन सब पर अपना पूरा काबू कर लेंगे। दो बातें अहमियत की हामिल हैं:

1- जो जगहें हम पहले ही हासिल कर चुके हैं उन्हे बरकारार रखनें के लिए कोशिश करना;

2- जो जगहें हमने अभी तक हासिल नहीं की हैं उनको हा्सिल करने के लिए कोशिश करना।

मुशतरका दौलत की विज़ारत ने हर कालोनी से इन सब कामों को करने के लिए एक कमीशन की तफ़वीज़ की। जैसे ही मैं मुशतरका दौलत की विज़ारत में शामिल हुआ, वज़ीर ने मुझ पर भरोसा कर लिया और मुझे मशरीकी भारत में हमारी कम्पनी का मुनतज़िम बना दिया। देखने मे ये एक तिजारती कम्पनी थी। लेकिन इसका असली मकसद भारत की बड़ी ज़मीनों पर काबू हासिल करने के तरीकों को ढूँढने का था।

हमारी सरकार भारत के बारें में बिल्कुल परेशान नहीं थी। भारत एक ऐसा मुल्क था जहाँ मुख्तलिफ़ कौमों के लोग, मुख्तलिफ़ ज़बानें बोलने वाले,

और मुख्तलिफ़ मफ़ादात रखने वाले लोग एक साथ रहते थे। नाही हम चीन से भयभीत थे। चीन में बौद्ध और कन्फयूशीवाद मज़हब थे, जिनमें से कोई एक भी ज़्यादा खतरे वाला नहीं था। वो दोनो मुरदा मज़हब थे जो सिवाए बुतों की शक्लों के कुछ और नहीं थें। इस वजह से, इन दोंनो मुल्कों में रहने वाले लोगों में मुश्किल से ही वतन परस्ती की भावनाएँ थी। ये दोनों मुल्कों से हमें, अंग्रेज़ी सरकार को कोई परेशानी नहीं थी। फिर भी जो वाक्यात बाद में हुए वो हमारी सोच से बाहर नहीं थे। इसलिए, इन मुल्कों में झगड़े, जहालत, गरीबी, और बीमारियों को भी छेड़ने का हमारा लम्बा मंसूबा था। हम इन दोंनो मुल्कों के रस्मों रिवाज की नकल करते थे, इस तरह आसानी से अपनी नीयतों को छुपा लेते थे।

हमारे असाब पर जो भारी था वो था इस्लामी मुमालिक। हम कुछ इकरारनामें पहले से ही कर चुके थे, वो सारे ही हमारी तरक्की के लिए थे,

sich man (उसमानिया सल्तनत) के साथ। मुश्तरका दौलत की विज़ारत के तर्जुबेकार रूकन का अंदाज़ा था के ये sich man एक सदी से भी कम अरसे में खत्म हो जाएगी। इसके साथ, हमने कुछ खुफ़िया करारदादें ईरान सरकार के साथ भी कीं और इन दोंनो मुल्कों में सियासतदान भेजे जिन्हें हमने मेअमार बनाया। रिश्वतखोरी, नाकाबिल मुनतज़िम और थोड़ी मज़हबी तालीम जैसी बुराइयाँ पनपी, जो बदले में खुबसूरत औरतों और लगातार अपने फराईज को नज़रअंदाज़ करने में तबदील हो गई, जिसने इन दोंनो मुल्कों की रीढ़ की हडडी तोड़ दी। इन सबके बावजूद, हम परेशान थे के हमारी सरगरमीया हमारी उम्मीद के मुताबीक नतीजा नहीं दे पा रहीं थी। जिनकी वजाहों का में नीचे हवाला देने जा रहा हूँ।

1- मुसलमान पूरे तरीके से इस्लाम पर कुर्बान थे। हर वाहिद मुसलमान इस्लाम से इतनी मज़बूती से जुड़ा है जैसे के एक पादरी या दरवेश ईसाईयत से,

जैसे के जाना जाता है, पादरी और दरवेश ईसाईयत को छोड़ने के बाजाए मरना पसंद करेंगे। इनमें सबसे ज़्यादा खतरनाक लोग ईरान में शियाअ हैं। इसलिए वो जो शियाअ नहीं होते उन लोंगो को काफ़िर और गंदा मानते हैं और नीचे रखते हैं। शियाओं के मुताबिक ईसाई नुकसानदह गंदगी हैं। ज़ाहिर है, एक शख्स अपने आपको गदंगी से बचाने के लिए अपना अच्छा ही करेगा। एक बार मैंने एक शियाअ से ये पूछाः तुम ईसाईयों को इस तरह क्यों देखते हो? मुझे जो जवाब दिया गया वो ये थाः "इस्लाम के नबी बहुत दाना शख्स थे। उन्होंने ईसाईयों को रूहानी जबर में रखा ताकि उनको अल्लाह के मज़हब, इस्लाम में शामिल होने के लिए सही रास्ता ढूँढने की वजह मिले। दरअसल, ये एक रियास्ती पॉलिसी है के ऐसे शख्स को जिसे खतरनाक पाया जाए उसे रूहानी जबर में रखाना जब तक के वो फरमाबरदारी की कसम न खाले। मैं जो गंदगी की बात कर रहा हूँ वो माली नहीं है; ये रूहानी जबर है जो सिर्फ़ अकेले इसाईयों पर नहीं है। ये सारे सुन्नियों और सारे काफ़िरों को भी शामिल करता है। हमारे कदीमी magian ईरानी बुर्जुग भी शियाओं के मुताबिक गंदगी थे। "मैंने उससे कहाः" ठीक है। सुन्नी और ईसाई अल्लाह में, नाबियों में, और आखिरत के दिन, में भी यकीन रखते हैं; फिर क्यों वो, गंदगी हुए? उसने जवाब दिया, "वो दो सबब की वजह से मैले हैंः वो हमारे नबी, हज़रत मुहम्मद-पर झूठा होने की तोहमत लगाते हैं-अल्लाह हमें ऐसे किसी भी काम को करने से बचाए।" और हम, इस वहशियाना तोहमत के जवाब में, इस कानून को मानते हैं जो इस में कहा गया है, अगर एक शख्स तुम पर अज़ाब करता है, 'तुम बदले में उस पर अज़ाब करो, और उनसे कहोः तुम गंदे हो।' दूसरी बात; ईसाई अल्लाह के नबियों पर गलत तोहमतें लगाते हैं। मिसाल के तौर पर, वो कहते हें ः "ईसा (जिस्स) अलैहिस्सलाम शराब पीते थे क्योंकि वो लानती थे, उन्हें सूली पर चढ़ाया गया।"

नोट ः असलियत, जो हमारे नबी पर झूठ की तोहमत लगाते हैं वो शियाअ और ईसाई हैं। भटके हुए ईमान, हुरूफ़ और गंदे काम शियाओं के जो हमारे नबी और कुरआन अल-करीम के साथ नहीं मिलते वो लिखे गए हैं और हर एक गलत साबित किया गया है। अहल-ए-सुन्नत की किताबों में जैसे के **अस सवाइक उल-मुहरिका, तोहफा-ए इस्ना अशारिया, तेयईद-ए किराम, हुजाज-ए कतिये, और मिलान व निहाल।सवाइक** के लिखने वाले अहमद इबनि हजर मक्की **974** [**1566** ए.डी.] ने मक्का में वफ़ात पाई; **तोहफ़ा** के लिखने वाले अब्दुल अज़ीज़ ने **1239** [**1834** ए.डी.] में दिल्ली में वफ़ात पाई ; **तेयईद** के लिखने वाले इमाम-ए रब्बानी अहमद फारूकी ने **1034** [**1624**ए.डी.] में सरहिंद में वफ़ात पाई, **नाहिये** के लिखने वाले अबदुल अज़ीज़ फरहारवी ने **1239** [**1824** ए.डी.] में वफ़ात पाई; **असहाब-ए किराम** के लिखने वाले अब्दुलहकिम अरवासी ने **1362** [**1945** ए.डी.] में अकांरा में वफ़ात पाई; **हुजाज** के लिखने वाले अबदुल्लाह सुवेदी ने **1174** [**1760**ए.डी.] में बग़दाद में वफ़ात पाई; **मिलाल** के लिखने वाले मुहम्मद शिहरिस्तानी ने **548** [**1154** ए.डी.]में बग़दाद में वफ़ात पाई]

सहम में, मैंने आदमी से कहा के ईसाईयों ने ऐसा कुछ नहीं कहा। "हाँ, उन्होंने किया," उसका जवाब था," और तुम नहीं जानते।ऐसा पाक बाएबल में भी लिखा है।" मैं चुप हो गया। आदमी पहले मामले में सहीं था, लेकिन दूसरे मामले में सहीं नहीं था। मैं झगडें को जारी नहीं रखना चाहता था। वरना, वो मेरे बारे में शक में पड़ जाते मैं इस्लामी कपडों में था। इसलिए मैं ऐसे झगडें नज़र-अंदाज़ करता था।

2- इस्लाम हुकूम और मुनतज़िम का मज़हब था। और मुसलमानों को इज़्जत दी जाती थी। इन इज़्जतदार लोगों को ये बताना बहुत मुश्किल था के अब वो गुलाम हैं। नाही ये मुमकिन था के इस्लामी तारीख को झूठा करार दिया जाएः इज़्जत और मरतबा जो तुमने एक बार हासिल किया वो कुछ (हिमायत)

शर्तों का नतीजा थी। वो दिन अब जा चुके हैं, और वो कभी वापिस नहीं आएंगे।

3- हम बहुत परेशान थे के उसमानिया सल्तनत और ईरानी हमारे मसूंबे को समझ जाएंगे और उसे नाकाम करेंगे। इस हकीकत के बावजूद के यें दोंनो रियास्तें काबिले और गौर कमज़ोर हो चुकी थीं, हम फिर भी मुतमईन नहीं थें क्यांकि उनके पास माल, हथियार, और ताकत के साथ मरकज़ी हुकूमत थी।

4 हम इस्लामी आलिमों के बारे में बिल्कुल बेसुकून थे। क्योंकि इस्तानबुल, अल-अज़हर, ईराक़ी और दमीकश के आलिम हमारे मकासिद में कभी पार न की जाने वाली रूकावटे थे। वो इस तरह के थे जो कभी अपने उसूलों को छोटी सी हद से भी सुलह नहीं कर सकते क्योंकि वो दुनियावी नापाएदार ख़ुशियों और चाहतों से परे कर चुके हैं और अपनी आँखे जन्नत की तरफ लगा दी हैं और जिसका कुरआन अल करीम ने वादा किया है। लोग उनकी तकलीद करते थे। यहाँ तक के सुल्तान भी उनसे ड़रता था। सुन्नी शियाओं की तरह आलिमों से जुड़ें हुए नहीं थें। शियाअ किताबें नहीं पढ़ते थे; वो सिर्फ़ आलिमों को पहचानते थे, और सुल्तान को कोई इज़्ज़त नहीं देते थें। दूसरी तरह, सुन्नी, किताबे पड़ते थे, और आलिमों और सुल्तान की इज़्जत करते थे।

इसलिए हमने मजलिसों का एक सिलसिला तैयार किया। फिर भी हर बार जब हम कोशिश करते हमें नाकामी के साथ देखना पड़ता के हमारे लिए रास्ता बंद था। जों ख़बरें हमें अपने जासूसों से मिलतीं वो हमेशा महरूमी वाली होंती और यें मजलिसों सिफ़र पर आ जातीं। फिर भी, हमने उम्मीद नहीं छोड़ी। क्योंकि हम ऐसे लोग थे जो एक गहरी सांस लेने के आदी थे और इतमिनान सें काम करने वाले थे।

खुद वज़ीर, आला पादरियों के हुकूम, और कुछ माहिरीन ने हमारी मजलिसों में से एक में शिरकत की। हम वहाँ पर बीस लोग थे। हमारी मुलाकात तीन घंटे तक चली, और आखिरी बैठक बग़ैर किसी फाएदेमंद नतीजे पर पहुँच बंद हो गई। फिर भी एक पादरी ने कहा," परेशान मत हों! मसिहा और उसके साथियों ने हुकूमत कष्टों के बाद ही हासिल की जो तीन सौ सालों तक कायम रहीं। ये उम्मीद है के, अनजानी दुनिया से, वो हम पर अपनी नज़र करे और हमें काफ़िरों (उसका मतलब था मुसलमान) को बेदखल करने की खुशकिस्मती बख्शे, उनको मरकज़ों से, चाहें वो तीन सौ साल बाद हो। मज़बूत यकीन और लम्बे सबर के साथ, हमें अपने आपको मुसल्लह करना चाहिए! ताकत हासिल करने के लिए, हमें सारी तरह के ज़रिए पर काबू करना होगा, हर मुमकिन तरीका इस्तेमाल करना होगा। हमें मुसलमानों के दरमियान ई-साईयत को फैलाने की कोशिश करनी चाहिए। ये हमारे लिए अच्छा है के हम अपने मकसद को पहचाने, चाहे वो सदियों बाद ही क्यों न हो। इसलिए के बाप अपने बच्चों के लिए काम करते हैं। "एक मजलिस रखी गई, और रूस और फ्रांस यहां तक के इंग्लैण्ड़ से सफ़ीरों और मज़हबी आदमियों ने शिरकत की। मैं बहुत खुशकिस्मत था। मैंने, भी, इसमें शिरकत की क्योंकि मेरे और वज़ीर के अच्छे तअल्लुकात थे। मजलिस में, मुसलमानों को गुपों में तोड़ने और उन्हें अपने ईमान को छोड़ने और उन्हें घेर कर (ईसाईयत) के ईमान पर लाया जाए स्पेन की तरह ये सब मंसूबे इसमें बनाए गए। अभी तक नतीजे वहाँ तक नहीं पहुँचे जैसे के मैंने अपनी किताब "इला मलाकूत-इल-मसीह" में इस मजलिस में हुई सारी बातें लिख दी हैं। ये बहुत मुश्किल होता है के अचानक एक ऐसे पेड़ को जड़ से उखाड़ फैंकना जिसने अपनी जड़े ज़मीन की गहराइयों में पहुँचाई हुई हों। लेकिन हमें अपनी मुश्किलों को आसान बनाना होगा और उन पर काबू पाना होगा। ईसाईयत फैलेगी। हमारे आका मसीह ने इसका हमसे वादा किया हैं। बुरे हालात जो मशरिक और मग़रिब में हैं वो मुहम्मद की मदद कर रहें हैं। वो हालात चले जाएंगे, इस रूकावट (उसका मतलब हैं इस्लाम) को साथ

ले जाएगी जो उनके साथ हैं। हम आज खुशी से देखते हैं के हालात पूरे तौर पर तबदील हो चुकी हैं। हमारी विज़ारत और दूसरी ईसाई हुकूमतों के आला कामों और कोशिशें की वजह से अब मुसलमान तरक्की ज़वाल पर हैं। दूसरी तरफ़, ईसाई ऊरूज पा रहें हैं। ये वक्त हैं हमें उन जगहों को दोबारा हासिल कर लेना चाहिए जो हम सादियां से खो चुके हैं। ग्रेट ब्रिटेन की ताकतवर रियास्त ने इस मुबारक काम [इस्लाम को पामाल करने की] की रहनुमाई की।

सेकशन एक

दूसरा हिस्सा

हिजरी साल **1122**, सी.ई. **1710** में, मुशतरका दौलत की विज़ारत ने मुझे मुसलमानों को तोड़ने के लिए ज़रूरी और काफ़ी जानकारी हासिल करने के लिए जासूस बनाकर मिस्र, ईराक, हिदजाज़ और इस्तानबुल भेजा। इसी मिशन के लिए और इसी वक्त विज़ारत ने नौ और लोंगों का तकरूर किया, जो जोशिले/फुरतिले और बहादुरी से भरे थे। पैसे के साथ, हमें इतलाआत और नक्शे चाहिए थे, हमें एक फ़हरिस्त दी गई जिसमें सियास्तदानों, आलिमों, और कबिलों के सरदारों के नाम थे। मैं कभी भूल नहीं पाऊँगा! जब मैंने सैकरेटरी को विदाई दी, उसने कहा, "हमारी रियास्त का मसतकबिल तुम्हारी कामयाबी पर मुबनी हैं। इसलिए तुम अपनी सबसे ज़्यादा ताकत लगा देना।"

मैं इस्तानबुल, इस्लामी खिलाफ़त के मरकज़ के लिए जहाज़ से रवाना हुआ। मेरे बुनियादी फर्ज़ के अलावा, मुझे तुर्की ज़बान भी बहुत अच्छी तरह सीखनी थी,जो वहाँ के मुसलमानों की वो मादरी ज़बान थी। मैंने लंदन में तुर्की की अरबी (कुरआन की ज़बान) और फ़ारसी, ईरानियों की जुबान की अच्छी खासी मिकदार सीख ली थी। फिर भी एक ज़बान को सीखना उसे बोलने से ज़्यादा मुश्किल है वहाँ के रहने वाले बोलने वालों की तरह। जबकि महारत कुछ सालों में हासिल की जा सकती हैं, बाद वालो के लिए इसे वक्त से कई गुना ज़्यादा वक्त दरकार होता है इसे पाने के लिए। मुझे तुर्की उसकी पूरी बारिकियों के साथ सीखनी थी ताकि लोग मुझ पर शक न करें।

मैं परेशान नहीं था के वो मुझ पर शक करेंगे। इसलिए के मुसलमान बरदाशत वाले खुले दिल के,रहमदिल थे, जैसे के उन्होंने अपने नबी मुहम्मद अलैहिस्सलाम से सीखा था। वो हमारी तरह वहमी नहीं थे। फिर भी, उस वक्त में तुर्की हुकूमत के पास जासूसों को पकड़ने की कोई तंज़ीम नहीं थी।

बहुत थाकाने वाले समुंदरी सफ़र के बाद मैं इस्तानबुल आ गया। मैंने कहा मेरा नाम मुहम्मद था और मस्जिद, जाना शुरू कर दिया। मुझे मुसलमानों का नज़्मों ज़बत, सफ़ाई और फरमबरदारी को अपनाने का तरीका पसंद आया। एक लम्हें के लिए मैंने अपने आपसे कहाः हम क्यों इन मासूम लोंगो से लड़ रहे हैं? क्या इसकी हमारे आका ईसा मसीह ने सलाह दी थी? लेकिन मैं फौरन ही इस शैतानी [!] सोच से बाहर निकल गया, और अपने फ़र्ज़ को पूरे अच्छे तरीके से करने का फ़ैसला किया। इस्तानबुल में मैं एक बुढ़े आलिम जिनका नाम “अहमद एफ़ंदी” था उनसे मिला। खुबसूरत अतवार, खुले दिल, रूहानी हमवारी और रहमदिली के साथ, मैंने अपने किसी भी मज़हबी आदमी को उनके बराबर नहीं पाया। ये शख्स दिन और रात अपने आपको नबी मुहम्मद के जेसा बनाने की कोशिश मे थे। इनके मुताबीक नबी सबसे मुकम्मल, आला आदमी थे। जब भी वो उनका नाम लेते उनकी आँखे गिली हो जाती थीं। मैं बहुत ज़्यादा खुशकिस्मत था के, उन्होंने कभी मुझ से ये नहीं पूछा के मैं कौन हूँ या मैं कहा से आया हूँ। वो मुझे “मुहम्मद एफ़ंदी” कहकर बुलाते। वो मेरे सवालों के जवाब देते और मुझे ध्यान और शफ़कत के साथ सुलूक करतें। क्योंकि उन्होने माना की मे इस्तानबुल तुर्की में काम के लिए आया हूँ और ख़लिफा के साए में रहना चाहता हूँ। नबी मुहम्मद के नुमाइंदा। दरअसल, यही बहाना मेने इस्तानबुल मे टहरने के लिए किया था। एक दिन मैने अहमद एफ़ंदी से कहाः “मेरे वालदेन मर गए। मेरे कोई भाई और जाएदाद भी नहीं है। मैं इस्लाम के मरकज़ में आया हूँ रोज़ी कमाने और कुरआन अल-करीम और सुन्नत को सीखने, यानी, दुनियावी ज़रूरयात और आखिरत में मेरी

ज़िंदगी को सवारने के लिए कमाने के लिए। वो मेरी ये बातें सुनकर बहुत खुश हुए, और कहा, "तुम इन तीन चीज़ों की वजह से इज़्जत के लायक हों।" इन्होंने जो कहा था मैं बिल्कुल वहीं नीचे लिख रहा हूँः

"**1-** तुम एक मुसलमान हो। सारे मुसलमान भाई हैं।

"**2-** तुम एक मेहमान हो। रसूलुल्लाह 'सल्लल्लाहु आलैहि वसल्लम' ने फरमायाः

"अपने मेहमान के साथ अच्छी मेहमनदारी करों!"

"**3-** तुम काम करना चाहते हो। यहाँ एक अहदीस-ए शरीफ़ से ये बयान है "एक शख्स जो काम करता है वो अल्लाह का मुबारक हो जाता है।"

इन बातों ने मुझे बहुत ज़्यादा खुश किया। मैंने खुद से कहा, क्या ईसाईयत में भी ऐसी चमकदार सच्चाइयाँ हैं! ये एक शर्म की बात है के इसमे ऐसा कुछ नहीं। मुझे जिस बात से हैरानी हुई वो हकीकत थी के इस्लाम एक महान मज़हब हे। जैसे के ये इन बादज़ात लोगो की साज़िश के हाथो रज़ील हो रहा था जो ज़िंदगी में क्या चल रहा हे उस्से बिल्कुल वाबस्ता नही थे।

मैने अहमद एफ़ंदी से कहा मैं कुरआन अल-करीम सीखना चाहता हूँ। उन्होंने जवाब दिया के वो मुझे खुशी से सिखा देंगे, और मुझे (फ़ातिहा सूरह) पढानी शुरू की। जैसे हम पढ़ते वो मआनी बताते जाते। मुझे कुछ लफ़्ज़ कहने में बहुत मुश्किल थी। दो साल के वक्त में मैंने पूरा कुरआन अल-करीम पढ़ लिया। हर सबक से पहले वो वुज़ू करते थे और मुझे भी हुकूम देते थे वुज़ू करने के लिए। वो किब्ले (काबा) की तरफ़ बैठते थे और फिर पढ़ाते थे।

मुसलमान जिसे वुज़ू कहते हैं वो धुलाई का एक सिलसिला हैं, मंदरजाज़ेलः

1) मुँह को धोने;

2) सीधे हाथ को धोना उँगलियों से कोहनियों तक;

3) उल्टे हाथ को धोना उँगलियों से कोहनियों तक;

4) मसह करना (दोनों हाथों को गिला करना और आराम से रगड़ना) सिर का, कानों के पीछे, (पीछे से) गर्दन को;

5) दोनो पैरों को धोना।

मिस्वाक का इस्तेमाल करना मुझे बहुत ज़्यादा परेशान करता था। "मिस्वाक" एक टहनी हैं जिस के साथ वो अपने मुहँ और दाँतों को साफ करते हैं।मैं सोचता था ये लकड़ी का टुकड़ा मेरे मुहँ और दाँतों को नुकसान पहुँचाएगा।कभी-कभी ये मेरे मुहँ में लग जाती थी और खून निकलने का सबब बनती थी। फिर भी मुझे इसे इस्तेमाल करना पड़ता था।इसलिए, उनके मुताबिक, "मिस्वाक" का इस्तेमाल करना नबी की मुअक्कद सुन्नत हे। वो कहते थे ये लकड़ी बहुत फ़ाएदेमंद हैं। वाकई में, मेरे दाँतों से खून निकलना बंद हो गया। और गंदी सांस जो उस वक्त तक मेरे में थी, और जो ज़्यादातर अंग्रेज़ लोगों में होती है, वो चली गई।

1- इस्तानबुल में रूकने के दौरान मैं एक कमरे में रातें गुज़ारता था मैंने एक आदमी से किराए पर लिया था जो एक मस्ज़िद में काम करने की ज़िम्मेदारी पर था। इस नौकर का नाम "मरवन एफ़ंदी" था। मरवान नबी मुहम्मद के सहाबा (साथियों) में एक का नाम था।नौकर बहुत बैचन आदमी था।वो अपने नाम के बारे में मग़रूर था और मुझ से कहता के अगर आगे उसका कोई बेटा हुआ तो वो उसका "नाम मारवान, रखेगा, क्योंकि मारवान इस्लाम के आला जंगजुओं में से एक थे।" "मरवान एफंदी" शाम का खाना तैयार

करता। मैं जुमे में काम पर नहीं जाता, मुसलमानों के लिए छुट्टी होती हैं। हफ़्ते के बाकी दिन मैं एक बढ़ई जिसका नाम ख़ालिद था उसके लिए काम करता, हफ़्ते के हिसाब से पैसा मिलता, क्योंकि मैं आधा वक्त करता था, यानी सुबह से दोपहर तक, वो मुझे दूसरे मुलाज़िमों के मुकाबले आधी आमदनी देता। ये बढ़ई अपना ज़्यादातर ख़ाली वक्त "ख़ालिद बिन वालीद" की नेकियों को बताने में गुज़रता था। ख़ालिद बिन वालीद, नबी मुहम्मद के सहाबाओं में से एक, एक आला मुजाहिद (इस्लाम के लिए एक सिपाही) थे। उन्होंने बहुत सारी इस्लामी जंगे पूरी की। फिर भी (ख़ालिद बिन वालीद को) उमर बिन ख़त्ताब की ख़िलाफत के दौरान बर्ख़ास्त कर दिया गया जो बात बढ़ई के दिल को गुस्सा दिलाती थी। ([1] जब अबू उबैदा बिन जर्राह, जिन्हें ख़ालिद बिन वालीद की जगह रखा गया था, लगातार फतूहात दिलाते रहे, तो ये समझ आया के फतूहात की वजह अल्लाह तआला की थी, न की ख़ुद ख़ालिद की।] "ख़ालिद", बढ़ई जिसके लिए मैं काम करता था, वो एक बदअख़्लाक और इंतेहाई कमज़ोर शख़्स था। लेकिन किसी तरह वो मुझ पर बहुत भरोसा करता था। मैं नहीं जानता के क्यों, लेकिन शायद इसलिए क्योंकि मैं हमेशा उसकी ताबेदारी करता था। वो अपने ख़ुफ़िया तरीके से शरीअत (इस्लाम के एहकाम) को नज़रअंदाज़ कर देता था। जब वो अपने दोस्तो के साथ होता तो शरियत के हुकमो की बुहत एहमीयत दिखता वो जुमे की नमाज़े अदा करता था, लेकिन मैं दूसरी (रोज़ाना) नमाज़ों के बारे में पुरा यकीन नहीं हूँ।

मैं दुकान में नश्ता करता था। काम करने के बाद मैं दोपहर की नमाज़ के लिए मस्जिद चला जाता और अस्र की नमाज़ के बाद मैं अहमद एफ़ंदी पढ़ाते जैसे के कुरआन अल करीम (किरअत), अरबी और तुर्की ज़बानों को दो घंटों तक पढ़ाते। हर जुमा मैं उनको अपनी हफ़्ते की कमाई देता क्योंकि वो मुझे बहुत अच्छी तरह पढ़ाते थे। वाकई मुझे सिखाया कुरआन अल-करीम किस तरह इस्लामी मज़हब की ज़रूरयात और अरबी और तुर्की ज़बानों की बारिकियाँ

अच्छे से पढ़ते हैं। जब "अहमद एफ़ंदी" को पता चला के मैं अकेला हूँ, वो चाहते थे के अपनी लड़कियों में से एक की शादी मुझ से करदें। मैंने उनकी पेशकश से इंकार कर दिया। लेकिन वो बज़िद थे, ये कहकर के शादी नबी की सुन्नत हैं और ये के नबी ने फरमाया हैं के "एक शख्स जो मेरी सुन्नत से परे हो जाए वो मेरा नहीं हैं।" आशंका होते हुए के ये वाक्या कहीं हमारी निजी तअलुकात वो ख्त्म न करदें, मुझे उनसे झूठ बोलना पड़ा, ये कहते हुए के मेरे पास जन्सी ताकत की कमी हैं इस तरह मेने हमारी दोस्ती जान पहचान को बरकरार रखा। जब मेरा दो साल का वक्फ़ा इस्तानबुल में पूरा हो गया, मैंने कहा "अहमद एफ़ंदी" मैं घर वापिस जाना चाहता हूँ। इन्होंने कहा, "नहीं, मत जाओ। तुम क्यों जा रहें हों? तुम कुछ भी पा सकते हो जो तुम चाहते हो इस्तानबुल में। अल्लाह तआला ने एक वक्त में मज़हब और दुनिया दोनो ही इस शहर में रख दी हैं। तुमने कहा था तुम्हारे माँ बाप मर चुके हैं और तुम्हारे कोई भाई और बहने नहीं हैं। तुम इस्तानबुल में क्यों नहीं मुकिम हो जाते?... "अहमद एफ़ंदी" मेरी संगत में लाज़मी मुनहसिर से अलग नहीं होना चाहते थे और इसरार कर रहें थे के मैं अपना घर इस्तानबुल में बना लूँ। लेकिन मेरी कौम परस्ती का फर्ज़ मुझे वापिस लंदन जाने पर मजबूर कर रहा था, एक लम्बी खबर देने के लिए खिलाफत के मरकज़ के बारे में, और नए एहकाम लेने के लिए।

इस्तानबुल में रूकने के दौरान मैं अपनी जाँच की खबरें मुश्तरका दौलत की विज़ारत को भेजता था। मुझे याद हैं अपनी एक खबर में मैंने उनसे पूछा था के मैं उस वक्त क्या करूँ जबकि वो मुझ से लौंड़ेबाज़ी करने को कहें। जवाब ये थाः तुम ऐसा कर सकते हो अगर ये तुम्हारे मकसद को हासिल करने में मदद करे। मैं इस जवाब पर बहुत नाराज़ हुआ। मुझे लगा जैसे पूरी दुनिया मेरे सर पर गिर गई हो। मैं पहले से जनता था के ये बुरा काम इग्लैंड़ में बहुत आम हैं। फिर भी ऐसा मेरे साथ कभी ना हुआ था के मेरे बड़े मुझे इस काम को करने का हुकम दे देंगे। मैं क्या कर सकता था। मेरे पास कोई और रास्ता नहीं था

सिवाए मेल को खाली कर दावा करने के। इसलिए मैं खामोश हो गया और अपने फ़र्ज़ को अदा करता रहा। जब मैं "अहमद एफ़ंदी" से विदाई ले रहा था, उनकी आँखे नम थीं और उन्होंने मुझ से कहा, "मेरे बेटे! अल्लाह तआला तुम्हारे साथ हो! अगर तुम इस्तानबुल वापिस आओ और देखो के मैं मर गया, मुझे याद करना। मेरी रूह के लिए (सूरह) फातिहा पढ़ना! हम इंसाफ़ वाले दिल 'रसलुल्लाह' के सामने मिलेंगे।" वाकई, मुझे बहुत सदमा हुआ; इतना ज़्यादा के गरम आँसू निकल पड़े। ताहाम, मेरी फ़र्ज़ की तरफ़ ज़िम्मेदारी कुदरती मज़बूत थी।

सेकशन एक

तीसरा हिस्सा

मेरे दोस्त मुझसे पहले लंदन पहुँच चुके थे, और वो पहले से ही विज़ारत से नई हिदायत ले चुके थे। मुझे, भी वापिस पहुँचने पर नई हिदायत मिलीं। बदनसीबी से,हम सिर्फ़ छः ही वापिस आए थे।

चार लोंगो में से एक मुसलमान बन गया, सैकेटरी ने बताया और मिस्र में रह गया। फिर भी सैकेटरी बहुत खुश था क्योंकि, उसने कहा, उसने (वो शख्स जो मिस्र में रूक गया) कोई राज़ से गद्दारी नहीं की। दूसरा शख्स रूस गया था वो वहीं रूक गया। वो असल में रूसी था। सैकेटरी को उसका बड़ा अफसोस था, इसलिए नहीं के वो अपने घर वापिस चला गया बल्कि शायद इसलिए क्योंकि वो मुश्तरका दौलत की विज़ारत की रूस के लिए जासूसी कर रहा हो और वापिस इसलिए चला गया के उसका मिशन पूरा हो गया था। तीसरा शख्स, जैसे के सैकेटरी ने बताया, के "इमारा" नाम के एक शहर में जो कि बग़दाद के पड़ोस में हैं उसमें ताऊन से मर गया। चौथा शख्स विज़ारत के ज़रिए यमन के आहर सनाअ में पाया गया, और एक साल तक उन्हें उसकी खबरें हासिल होती रहीं, और, उसके बाद उसकी खबरें आनी बंद हों गई और सारी कोशिशों के बाद भी उसकी कोई खोज नहीं लग पाई। विज़ारत ने इन चारों के गायब होने को एक आसमानी आफत समझ कर बंद कर दिया। इसलिए हम एक कौम हैं बड़े फराईज़ के साथ एक छोटी सी आबादी के मुकाबले। इसलिए हमने हर एक आदमी पर अच्छा हिसाब लगाया।

चारों के ज़रिए दी गई खबरों को जाँचने के लिए। जब मेरे दोस्तों ने अपने कामों के बारे में खबरें दीं, तो मैंने भी, अपनी खबर दे दी। उन्होंने मेरी

ख़बर में से कुछ नोटस निकालें। वज़ीर, सैकेटरी, और दूसरे कुछ और जिन्होंने उस बैठक में शिरकत की थी मेरे काम की तारीफ़ की। इसपर भी, मैं तीसरा अच्छा था। पहला ग्रड़े मेरे दोस्त “George selcons” ने जीता, और “henry fans” दूसरे शुमार पर था।

मैं बिलाशक तुर्की, अरबी, कुरआन और शरीअत को सीखने में कामयाब रहा। फिर भी मैं विज़ारत के लिए एक ख़बर नहीं बना सका जो उस्मानिया सल्तनत की कमज़ोरियों को उजागर करती। दो घंटे की बैठक के बाद, सैकेटरी, ने मेरी नाकामी का सबब पूछा। मैंने कहा, “मेरी ज़रूरी फर्ज़ ज़बानों और कुरआन और शरीअत को सीखना था। मैं किसी भी इज़ाफ़ी चीज़ के लिए फालतू वक्त नहीं दे सकता था। लेकिन इस बार मैं आपको खुश कर सकता हूँ अगर आप मुझ पर भरोसा करें।” सैकेटरी ने कहा के तुम बेशक कामयाब होंगे लेकिन वो चाहते ये के मैं पहला ग्रेड़ हासिल करूँ। (और वो कहता रहा); “ ए हेमफ़र/hempher, तुम्हारा अगला मिशन इन दों कामों पर मुश्तमिल हैं;

1- मुसलमानों के कमज़ोर नुक्तों को पकड़ो और ऐसे नुक्तें जिनके ज़रिए हम उनके जिस्मों में घुस जाएँ और उनके अज़ू को तोड़ दें। दरअसल, दुश्मन को हराने का यही तरीका हैं।

2- जिस वक्त तुम इन नुक्तों को खोज लेंगे और जैसा मेने बताया वैसा करोगे, [दूसरे लफ़ज़ो में, जब तुम मुसलमानों के बीच में झगड़ा ड़ालने में कामयाब हो जाओगे और उन्हें एक दूसरे के सामने करने को खड़ा कर दोगे], तो तुम सबसे ज़्यादा कामयाब एजेंट बन जाओंगे और विज़ारत से एक तमगा पाओगे।”

मैं लंदन में छ: महीने रहा। मेरी शादी पहली चाचेरी बहन मरिया शेवी से हो गई, उस वक्त मेरी उमर **22** साल थी, और उसकी **23** साल। “मरिया शेवी बहुत खुबसूरत लड़की थी, आम समझ और मामूली मज़बी पसमंज़र के साथ। मेरी ज़िंदगी के सबसे खुशी और मस्ती वाले दिन वो थे जो मैंने उसके साथ गुज़ारे। मेरी बीवी हामला थी। हम अपने नए मेहमान की उम्मीद लगा रहें थे जब मुझे ये इतलाअ मिली के मुझे ईराक के लिए जाना है। इस खबर का उस वक्त मिलना जबकि में अपने बेटे की पैदाइश का इंतेज़ार कर रहा था मुझे उदास कर गया। ताहम, जो अहमियत मैंने अपने मुल्क को दे रखी थी, वो उस इच्छा के साथ मिल गई थी के मैं अपने साथियों में सबसे अच्छा चुना जाऊँ और शौहरत हासिल करूँ, ये सब मेरे शौहर और एक बाप होने के जज़बात से ऊपर थे। इसलिए मेने ये काम बग़ैर किसी हिचकिचाहट के कबूल कर लिया। मेरी बीवी इस मिशन को हमारे बच्चें के जन्म तक मुल्तवी कराना चाहती थी। फिर भी जो वो कह रहीं थी मैंने उसे नज़रअंदाज़ किया। जब हम एक दूसरे को विदाई दे रहे थे तो हम दोंनो ही रो रहें थे। मेरी बीवी ने कहा, “मुझे लिखना बंद मत करना। मैं तम्हें अपने नए घर के बारें में खत लिखूँगी, जोकि सोने की तरह कीमती होंगे।” उसके इन अलफ़ाज़ ने मेरे दिल में तूफ़ान मचा दिया। मैं बिल्कुल अपना सफ़र मंसूख कर चुका था। फिर मैंने अपने जज़बात पर काबू पाया। मैंने उसे अलविदा कहा, मैं विज़ारत से आखिरी हुकूम लेने के लिए चला गया।

छ: महीने बाद मैंने अपने आपको बसरा शहर, ईराक में पाया। इस शहर में आधे सुन्नी और आधे शियाअ थे। बसरा कबिलों का शहर था जिसमें मिली जुली अरबी, फारसी और बहुत थोड़ी तादाद में ईसाई आबादी थी। ये मेरी ज़िंदगी में पहली बार था के मैं फ़ारसियों से मिला। वैसे, मैं शियाअ और सुन्नियों को भी छू लूँ। शियाओं का कहना था के वो अली बिन अबू तालिब, जोकि मुहम्मद अलैहिस्सलाम की बेटी फातिमा के शौहर थे और उसी वक्त

मुहम्मद अलैहिस्सलाम के चचेरे भाई भी थे, की तकलीद करते हैं। वो कहते हैं के मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने अली और बारह इमामों की तकर्रूरी की, अली की औलादें जो ख़लीफ़ा के तौर पर उनकी जानशीन बनेंगी। मेरी राए में, अली, हसन, और हुसैन की ख़िलाफ़त के बारे में शियाअ लोग सही हैं। इसलिए, जैसा के मैंने इस्लामी तारीख़ से समझा हैं, अली मुम्ताज़ और आला तालीमात वाले शख्स थे जो ख़िलाफ़त के लिए चाहिए होती हैं। ना ही मुहम्मद अलैहिस्सलाम के लिए ग़ैर लगा के हसन और हुसैन को ख़लीफ़ा के तौर पर तकर्रूर करना। मुझे किसी ने शक में डाला के, तो भी मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने हुसैन के बेटे और उनके आठ पोतो को ख़लीफ़ा मुकर्रर किया। इसलिए के हुसैन मुहम्मद अलैहिस्सलाम की वफ़ात पर बच्चे थे उनको कैसे पता के उनके आठ पोते होंगे। अगर मुहम्मद अलैहिस्सलाम असल में नबी थे, तो ये मुमकिन है उनके लिए के अल्लाह तआला के ज़रिए इतलाअ दिए जाने पर मुस्तकबिल को जान लेना, जैसे के जिजस/ईसा मसीह को मुस्तकबिल के बारे में वही आती थी। फिर भी मुहम्मद अलैहिस्सलाम की नब्बुवत हम ईसाइयों के लिए शक का मामला हैं।

मुसलमानों का कहना हैं " के यहाँ पर बहुत सारे सबूत हैं मुहम्मद अलैहिस्सलाम की नब्बुवत के। उनमें से एक कुरआन (कोरान) है। " मैंने कुरआन पढ़ा है। वाकई, ये एक आला किताब हैं। ये तोरह (तौरह) और बाएबल से भी ज़्यादा आला हैं। इसलिए के इस में उसूल, कवानीन, अख़लाफी कानून वग़ैरह सब हैं।

ये मेरे लिए हैरानी की बात है के किस तरह एक अनपढ़ शख्स मुहम्मद अलैहिस्सलाम इतनी ऊँची किताब को ला पाएं, और किस तरह वो सारी अख़लाकी, दानिशराना और ज़ाती काबलियत रखते थे जो किसी एक आदमी जोकि बहुत पढ़ता हो और बहुत ज़्यादा घूमता हो उसके पास भी

नहीं। मैं हैरान हूँ अगर य हकीकतें मुहम्मद अलैहिस्सलाम की नब्बुवत के सबूत हैं?

मैं हमेशा गोर और खोज करता रहता हुँ मुहम्मद अलैहिस्सलाम की नब्बूवत की हकीकत सच्चाई जानने के लिए। एक बार मैंने अपनी दिलचस्पी लंदन में एक पादरी को बताई। उसका जवाब मज़हबी और सख्त था, और राज़ी करने वाला बिल्कुल भी नहीं था। जब मैं तुर्की में था तब मैंने कई बार अहमद एफ़ंदी से पूछा, उनसे भी मुझे कोई मुतमाईन जवाब नहीं मिला। हकीकत में, मैं अहमद एफ़ंदी से इस मामले में डायरेकट सवाल करने से बचता था के ऐसा न हो मेरी जासूसी के बारे में शक में पड़ जाएँ। मैं मुहम्मद अलैहिस्सलाम के बारे में बहुत सोचता था। इसमें कोई शक नहीं, के वो अल्लाह के नबियों में से एक हैं जिनके बारे में हम किताबों में पढ़ते हैं। फिर भी अभी तक एक ईसाई होने के नाते, मैं उनकी नब्बुवत में अभी तक यकीन नहीं रखता।

ये ज़रूर है के वो सब आकिलों से आला थे। दूसरी तरफ़, सुन्नियों का कहना हैं के, नबी की वफ़ात के बाद मुसलमान अबू बकर, उमर, उस्मान और अली को खिलाफ़त को लायक समझते हैं।" इस तरह की तकरारें सब मज़ाहिब में चलती हैं, ईसाईयत सब से ज़्यादा। क्योंकि उमर और अली आज दोनो फ़ौत हो चुके हैं इस तरह की बहसें करना किसी मकसद को हल नहीं करतीं। मेरे मुताबिक, अगर मुसलमान साहिबे अकल हैं, तो उन्हें आज के बारे में सोचना चाहिए, न की उन बहुत पुराने दिनों के बारे में।

[1] शियाओं में ये ज़रूरी हैं के खिलाफ़त के मामले में एक खास यकीन पर बात करना। सुन्नी ईमान के मुताबिक ये ज़रूरी नहीं है।

[जवान अंग्रेज़ आदमी मज़हबी इतलाआत को दुनियावी से तअल्लुक रखने वाली इतलाआत मे अस्तव्यस्त हो जाता हैं। मुसलमानों की , दुनियांवी

जानकारी उन्की सलाहीयतें, हमेशा अनोखेपन और हमेशा साईस फन, रियांज़ी, इमरत का हुनर और बरतरी। जब मशहूर इटली के माहिरे फलकियात गलिलिओ ने कहा के दुनिया घूम रहीं थी-कोई शक नहीं के उसने ये हकीकत मुसलमानों से सीखी-न सिर्फ़ उसे पादरियों के ज़रिए बददुआएँ दी गई, बल्कि उसे जेल में भी ड़ाल दिया गया। ये सिर्फ़ तब हुआ जब उसने तपस्सिया की, और अपने पहले हवाले को तर्क किया और कहा "नहीं, वो नहीं घूम रही है," इस तरह उसने अपने आपको पादरियों के हाथों से बचाया। मुसलमान इस्लाम और ईमान की तालीम हासिल करने के लिए कुरआन अल करीम और अहदीस-ए शरीफ़ की तकलीद करतें हैं। ईसाइयों की तरह वो, इस इल्म को शामिल नहीं करते, जोकि दिमाग़ की हरकत की हद से बाहर हो।]

एक दिन मुश्तरका दौलत की विज़ारत में मैंने सुन्नियों और शियाओं के बीच के फर्क का हवाला दिया, ये कहते हुए, "अगर मुसलमान ज़िंदगी के बारे में कुछ जान जाएँ वो अपने बीच इस शियाअ और सुन्नी फर्क को हल करलें और एक साथ हो जाएँ।" किसी ने बीच में मुझे टोका और संगदिली से कहा, "तुम्हारा काम इस फर्क को बढ़ाना हैं, न की इस बात को सोचना के मुसलमानों को एक साथ कैसे लाया जाए।"

मेरे ईराक के सफ़र पर जाने से पहले, सैकेटरी ने कहा, "ए hempher, तुम्हें जानना चाहिए के जब ईश्वर ने हाबिल और काबिल को बनाया था तब से ही इंसानो के बीच कुदरती तफ़रके हैं। ये बहसें चलती रहेंगी जब तक के ईसा मसीह वापिस न आ जाएं। यही हालत नसल परस्ती, कबाइली, इलाकाई, कौमी, और मज़हबी बहसों के साथ हैं। इस बार तुम्हारा काम हैं के इन बहसों को अच्छी तरह जाँचना और विज़ारत को खबर करना। जितने ज़्यादा तुम मुसलमानों के बीच तनाज़ो को हवा दोगे उससे ज़्यादा बड़ी कारकरदगी तुम इंग्लैंण्ड़ के लिए करोगे।"

हम, अंग्रेज़ लोग, बुराई और फूट जगाते हैं अपनी सारी कालोनियों में ताकि हम भलाई और आराम से रह सकें। इस तरह फितनों के ज़रिए हम उस्मानिया सल्तनत को खत्म करने के काबिल हो सकते हैं। वरना, किस तरह एक छोटी आबादी वाली कौम किस तरह एक बड़ी आबादी को अपने हाथ में ले सकती है? अपनी पूरी ताकत के साथ उस शगाफ़ के मंह को देखो, और जैसे ही तुम उचे ढूँढ लो उसके अंदर घुस जाओ। तुम्हें पता होना चाहिए के उसमानिया और ईरानी सलतनतें अपने वजूद की नीचले नुकते तक पहुँच चुकी हैं। इसलिए, तुम्हारा पहली फर्ज़ हैं के लोगों को इंतेज़ामिया के खिलाफ़ भड़काओ! तारीख ने दिखाया हैं के 'सारे इंकालाबात का ज़ारिया आवामी बड़ावतें हैं। जब मुसलमानों की एकता टूटेगी और उनके बीच आम हमदर्दी बदतर हो जाएगी, उनकी ताकते खत्म हो जाएंगी और इस तरह हम उन्हें आसानी से खत्म कर सकते हैं।"

सेकशन एक

चौथा हिस्सा

मैं जब बसरा आया, तो मैं मस्जिद में मुकिम हो गया। उस मस्जिद का इमाम एक सुन्नी शख्स था अरबी नसब का जिनका नाम शैख उमर ताई था। जब मैं उनसे मिला मैंने उनसे बातचीत शुरू करदी। फिर भी शुरू में वो मुझ पर शक करता रहा और मुझ पर सवालों की बोछार करदी। मैं मंदरजाज़ेल तरीके से इस खतरनाक बातचीत से बचा "मैं तुर्की के इगदिर इलाके से हूँ। मैं इस्तानबुल के अहमद एफ़ंदी का शर्गिद हूँ। मैं एक बढ़ई जिसका नाम खालिद (हालिद) था उसका काम करता था। मैंने उसे तुर्की के बारे में जानकारी दी, जो मैंने वहाँ रूकने के दौरान हासिल की थीं। मैंने उसे तुर्की में कुछ जुमले कहे। ईमाम ने वहाँ लोंगो में से एक को आँख का इशारा किया और उससे पूछा के क्या मैं सही तुर्की बोल रहा हूँ उसका जवाब पोज़ीटीव था। ईमाम को मुतमईन करने के बाद, मैं बहुत खुश था। फिर भी मैं गलत था। इसलिए के कुछ दिनों बाद, मुझे बड़ी मायूसी हुई के इमाम ने मुझ पे तुर्की जासूस होने का शक किया। मेने पता लगाया के इमाम और गर्वनर के बीच जिसे (उस्मानिया) सुल्तान ने तकर्रुर किया था कुछ नारज़ामंदी और दुश्मनी थी।

शैख उमर एफ़ंदी की मस्जिद को छोड़ने की ज़बरदस्ती पर, मैंने एक मुसाफ़िरों और गैरमुल्कियों की सराए में कमरा किराए पर लिया और वहाँ चला गया। सराए का मालिक मुर्शिद एफ़ंदी नाम का एक बेवकूफ़ था। हर सुबह वो मेरे दरवाज़े पर ज़ोर ज़ोर से दस्तक देता जैसे ही सुबह की नमाज़ की अज़ान दी जाती। मुझे उसकी ताबेदारी करनी पड़ती। इसलिए, मैं उठता और सुबह की नमाज़ पढ़ता। उसके बाद वो कहता, "तुम्हें सुबह की नमाज़ के बाद कुरआन

अल करीम पढ़ना चाहिए।" जब मैं उससे कहता के ये फर्ज़ (इस्लाम के ज़रिए बताया गया एक हुकूम) नहीं के कुरआन अल करीम पढ़ा जाए और उससे पूछता के वो इतना ज़्यादा क्यों ज़ोर देता हैं, तो वो जवाब देता, "दिन के इस वक्त मे सोना उसकी सराए पे और उसमे रहने वालो पर गरीबी और बदकिस्मती ला सकता है।" मुझे उसके इस हुकूम को मानना पड़ता।इसलिए के वो कहता वरना मैं तुम्हें सराए से निकाल दूँगा।जैसे ही अज़ान होती, मैं सुबह की नमाज़ अदा करता और फिर एक घंटे तक कुरआन अली-करीम पढ़ता।एक दिन मुर्शिद मेरे पास आया और बोला, "जब से तुमने ये कमरा किराए पर लिया हैं मेरे ऊपर बदनसीबी आ गई हैं।मैं इसे तुम्हारें अशुभ होने पर ड़ालता हूँ।इसलिए के तुम अकेले हो।अकेले (कुवांरा) होना बुरा शगुन होता हैं।तुम या तो शादी करलो या फिर सराए छोड़ दो।" मैंने उससे कहा मेरे पास इतना माल नहीं हैं के मैं शादी कर सकूँ।मैं उसे वो नहीं बता सकता था जो मैंने अहमद एफ़ंदी को बताया था।इसलिए के मुर्शिद एफ़ंदी इस तरह का शख्स था के वो मुझे नंगा करके मेरे जन्नांगो/पेशिदा हिस्सें को जाँचता ये देखने के लिए के क्या मैं सही कह रहा हूँ।मैंने जब ऐसा कहा तो, मुर्शिद एफ़ंदी ने कहा कमज़ोर ईमान हैं तुम्हारा! क्या तुमने अल्लाह की वो आयत नहीं पढ़ी जिसका मतलब हैं, **'अगर वो गरीब हैं, अल्लाह तआला उन्हें अपनी रहमत से अमीर बना देगा,** ([1] सूरह नूर, आयतः 32)

में हैरान था ।कमसकम में ये कह पाया के में कर लुंगा लेकिन तुम मुझे ज़रूरत के मुताबिक पैसे दोगे या ऐसी लड़की डुडंने मे मदद करोगे जो मेरा कम ख़र्चा कराये।

ये सुनने के बाद, मुर्शिद एफ़ंदी ने कहा मुझे परवाह नहीं ।या तो रजब महीने की शुरआत तक शादी करो या सराए छोड़ दो।रजब महीने की शुरआत में केवल 25 दिन ही बाक़ी थे।

इततेफाक से में अरबी कलेंडर का भी ज़िकर करुंगा, मुहररम , सफ़र , रबी उल अव्वल , रबी उल आख़िर , जेमाज़ीया उल अव्वल , जेमाज़ीया उल आख़िर , रजब , शाबान , रमज़ान , शव्वाल, ज़िलकादा , ज़िलहीज्जा। ये महीने न तो तीस दिनों से उपर होते हैं , ना ही उन्नतीस से नीचे। वो कमरी कलेंडर पर मुबनी होते हैं।

मेने एक बढ़ई के यहाँ हेल्परी का काम ले लिया, और मुर्शिद की सराए छोड़ दी। हमने बहुत कम मज़दूरी पर मुआहिदा किया, लेकिन मेरा रहना और खाना मालिक के खर्चे पर था। मैं अपना सारा सामान रजब के महीने से पहले ही बढ़ई की दुकान में ले आया। बढ़ई एक दिलेर शख्स था। वो अपने बेटे की तरह सुलूक करता था। वो खुरासन, ईरान का एक शिया था। और उसका नाम अब्दुर-रिदा था। उसके साथ का फाएदा उठाते हुए, मैंने फारसी सीखना शुरू कर दिया। रोज़ दोपहर ईरानी शिया उसकी जगह पर मिलते और सियासत से लेकर मआशियत तक के सारे मज़मूनों पर बात करते। ज़्यादा कसरत से नहीं, वो अपनी सरकार के बारे में और इस्तानबुल के खलीफ़ा के बारे में भी गलत बोलते थे। जब कभी कोई अजनबी अंदर आ जाता तो वो अपना मज़मून बदल देते और ज़ाती मामलों पर बातचीत शुरू कर देते। वो मुझ पर बहुत भरोसा करते थे। ताहम, बाद में मुझे पता चला, वो सोचते थे के में एक अज़रबाएजानी हूँ क्योंकि मैं तुर्की बोलता था। वकतन फवकतन एक जवान लड़का हमारे बढ़ई की दुकान में आता था। उसके लिबास तालिबे इल्म जैसे होता हे जो साईन्सी खोजबीन कर रहा हो, और वो अरबी, फारसी और तुर्की समझता था। उसका नाम **मुहम्मद बिन अबद-उल-वहाव नजदी** था। ये जवान बहुत खुश्क और बहुत असाबी शख्स था। उस्मानिया सरकार को बहुत बुरा कहते हुए, वो कभी ईरानी सरकार की बुराई नहीं करता था। एक आम बात जो उसे और दुकान के मालिक अबद उर-रिदा को इतना दोस्त बनाती थी वो भी दोंनो ही इस्तानबुल में खलीफ़ा की तरफ़ नाइतेफ़ाकी रखते थे। लेकिन ये कैसे मुमकिन था के ये

जवान आदमी, जो एक सुन्नी था, फारसी समझता था और अबद-उर-रिदा के साथ दोस्त था, जोकि एक शिया था? इस शहर में सुन्नी शियाओं के साथ दोस्ती बल्कि भाईचारा का बहाने भी बनाते थे। ज़्यादातर इस शहर के रहने वाले अरबी और फारसी दोंनो समझते थे। और बहुत लोग तुर्की भीं समझते थे। बाहर से नजद का नजदी मुहम्मद सुन्नी था। हालांकि ज़्यादातर सुन्नी शियाओं पर इल्ज़ाम लगाते थे, -दरअसल, वो कहते थे के शिया काफ़िर हैं- ये आदमी कभी शियाओं को गाली नहीं देता था। नजद के मुहम्मद के मुताबिक, सुन्नियों के लिए कोई सवब नहीं हैं के चारों मसलों में से किसी एक को अपनाएँ; उसका कहना था, "अल्लाह की किताब में इन मसालिक का कोई सबूत नहीं हैं।" वो जानबुझकर इस मज़मून पर आयत ए करीम को नज़रअंदाज़ करता था और अहदीस-ए शरीफ़ को हल्का समझता था।

चारों मसलकों के मामलों के मुतअलिकः उनके नबी मुहम्मद अलैहिस्सलाम की वफ़ात की एक सदी बाद, सुन्नी मुसलमानों में से चार आलिम आगे आएः अबू हनीफ़ा, अहमद बिन हंबल, मालिक बिन अनस, और मुहम्मद बिन इदरि शाफ़ी-ई कुछ खलीफ़ाओ ने सुन्नीयों पर ज़ोर डाला इन चारों आलिमों में एक की तकलीद करने के लिए। उन्होंने कहा कोई और नहीं इन चारों के अलावा जिन्होंने कुरआन अल करीम में या सुन्नत के साथ इजतिहाद अदा किया। इस तहरीक ने इल्म और समझ के दरवाज़े मुसलमानों के लिए बंद कर दिए। ये इजतिहाद की मुमनिअत इस्लाम के लिए रूकावट का सबब बनी। शियाओं ने इस गलत बयानी का इस्तेहसाल किया अपने फिरके को मशहूर करने के लिए। शियाओं की तादाद सुन्नियों के दस गुना से भी कम/छोटी थी। लेकिन अब वो बढ़ गए थे और वो तादाद में सुन्नियों के बराबर हो गए। ये नतीजा कुदरती था। इजतेहाद एक हथियार की तरह हें। जो इस्लाम के फिकह को सुधारेगा और कुरआन अल-करीम और सुन्नत की समझ को बेहतर करेगा। दूसरी तरफ, इजतिहाद की मुमनिअत, एक ज़ंग लगे औज़ार

की तरह हैं। ये मसलकों को एक खास दाएरे में बाँध देगी। और ये, बदले में इसका मतलब हैं के मफ़हूम के दरवाज़े बंद करदे और वक्त की ज़रूरयात की तरफ़ बेपरवाही करना। अगर तुम्हारा औज़ार ज़ंग आलूद हैं और तुम्हारा दुश्मन मुकम्मल, तो तुम अपने दुश्मन के ज़रिए जल्दी या देर में मर के खत्म कर दिए जाओगे। मैं समझता हूँ, सुन्नियों में चलाक लोग मुस्तकबिल इजतिहाद के दरवाज़े खोज लेंगे। अगर वो ऐसा नहीं करेंगे तो, वो अल्पसंख्यक बन जाएंगे, और शिया कुछ ही सदियों में बहुमत बन जाएंगे। [ताहम, चारों मसलकों के इमाम (रहनुमा) एक ही मज़हब, एक ही ईमान के थे। उनमें कोई फर्क नहीं था। उनका फर्क सिर्फ़ इबादात में था। और इसके नतीजे में ये मुसलमानों के लिए एक सहुलियत हैं। दूसरी तरफ़, शिया, बारह फिरकों में बंट गए, इस तरह एक ज़ंगी औज़ार बन गया। इस सिलसिले में **मिलाल व निहाल** में तफ़सीली जानकारी हैं।] घमंड़ी नौजावान, नजद का नजदी मुहम्मद और सुन्नत को समझने में अपने नफ़स (निफ़सानी इच्छाओं) की तकलीद करता था। वो पूरे तौर पर आलिमों की राए को नज़रअंदाज़ करता था, न सिर्फ़ अपने वक्त के आलिमों और चारों मसलकों के रहनुमाओं, बल्कि नाम वर सहाबी जैसे के अबू बकर और उमर की भी राए को नज़रअंदाज़ करता था। जब भी वो किसी (कुरआन) की आयत पर आया था जिसे वो समझता था के उन लोगो की राए के बरखिलाफ़ हैं, तो वो कहता, "नबी ने कहाः **'मैंने कुरआन और सुन्नत तुम्हारें लिए छोड़ा हैं।'**" उन्होंने ये नहीं कहा, "मैंने कुरआन, सुन्नत, सहाबा और मसलकों के इमामों को तुम्हारें लिए छोड़ा है।

नोट ः[1] उसका ये बयान इस अहदीस-शरीफ़ में इंकार करता है जो हमें सहाबा की तकलीद करने का हुकूम देती हैं।) इसलिए, चीज़े जो फर्ज़ हैं वो हैं कुरआन और सुन्नत की तकलीद करना चाहे वो मसालिक की राए या सहाबा और आलिमों के बयानात के कितने ही बरखिलाफ़ ज़ाहिर हों।"

नोट ः[2] आज सारी इस्लामी मुल्कों में जाहिल और धोखेबाज़ लोग मज़हबी लोगों के रूप में अहल-अस सुन्नत के आलिमों पर हमला कर रहे हैं। वो सऊदी अरब से बड़ी रकम हासिल कर रहें हैं। वो सब नजद के मुहम्मद के ऊपर बताए गए हवालों को हर मौके पर एक औज़ार की तरह इस्तेमाल करते हैं। हकीकत ये हैं के कोई भी हवाला जो अहले अस-सुन्नत या चार इमामों के ज़रिए दिया गया वो कुरआन अल करीम और अहदीस-ए शरीफ़ के मुख्तलिफ़ नहीं। उन्होंने इन ज़राए में कोई इज़ाफ़ा नहीं किया, बल्कि उन्होंने उन्हें वाज़ेह किया। वहाबी, अपने अंग्रेज़ नमूनों की तरह, झूठ बनाते थे और मुसलमानों को गुमराह करते थे।) अबद-उर रिदा के घर पर एक रात के खाने की बातचीत के दौरान, नजद के नजदी मुहम्मद और कुम से आए एक शियाअ आलिम मेहमान जिसका नाम शैख जवाद था मंदरजाज़ेल झगड़ा हो गयाः शैख जवाद -जबकि तुम ये मानते हो के अली एक मुजतहिद थे, तो क्यों नहीं तुम उनकी एक शिया की तरह तकलीद करते? नजद का नजदी मुहम्मद-अली उमर या दूसरे सहाबा से मुख्तलिफ़ नहीं हैं। उनके हवाले सनदी अहलियत नहीं रखते। सिर्फ़ कुरआन और सुन्नत खरी शहादतें हैं। [दरहकीकत असहाब-ए किराम के ज़रिए दिए गए हवाले बयानात खरी शहादतें हैं। हमारे नबी ने उनमें से किसी एक की तकलीद करने को कहा है।] ([1] एक मुसलमान जिसने मुहम्मद अलैहिस्सलाम के खुबसूरत, मुबारक चेहरे को देखा उन्हें **सहाबी** कहते हैं। **सहाबी** की जमा **सहाबा है , या अस-हाब,**

शैख जवाद-हमारे नबी ने फरमाया, "**मैं इल्म का शहर हूँ, और अली उसका दरवाज़ा हैं,**" क्या अली और दूसरे सहाबा के बीच फर्क नहीं हैं? नजद का मुहम्मद-अगर अली के बयानात खरी शहादते होते, तो क्या नबी ये नहीं कहते, "मैं तुम्हारे लिए कुरआन, सुन्नत, और अली को छोड़ गया"? शैख जवाद-हाँ, हम ऐसा मान सकते हैं के उन्होंने (नबी ने) ऐसा कहा होगा। इसलिए आपने एक अहदीस-ए शरीफ़ में फरमाया, "**मैं (अपने पीछे)**

अल्लाह की किताब और अपने अहल-ए-बैत छोड़ गया।" नजद के नजदी मुहम्मद ने इस बात से इंकार किया के नबी ने ऐसा कुछ कहा होगा। शैख़ जवाद ने नजद के मुहम्मद को पक्के सबूतों के साथ गलत साबित कर दिया। ताहम, नजद के मुहम्मद ने इस पर एतराज़ किया और कहा, "तुम दावा कर रहे हो के नबी ने कहा," "**मैंने अल्लाह की किताब और अपने अहल-ए बैत तुम्हें छोड़े।**" फिर, नबी की सुन्नत का क्या हुआ? शैख़ जवाद-अल्लाह के नबी की सुन्नत कुरआन की वज़ाहत हैं। अल्लाह के नबी ने कहा, "**मैंने छोड़ा** (तुम्हें) **अल्लाह की किताब और अपने अहल-ए-बैत को।**" फिकरा 'अल्लाह की किताब' सुन्नत को भी शामिल करता हैं, जोकि साबका वाले की वज़ारत हैं। नजद का नजदी मुहम्मद-क्योंकि अहल-ए-बैत के बयानात कुरआन की वज़ारतें हैं, तो ये क्यों ज़रूरी हैं के इसी अहदीस से वाज़ेह किया जाए? शैख़ जवाद - जब हज़रत नबी रहलत फरमा गए, तो उनकी उम्मत (मुसलमानों) ने सोचा के वहाँ पर कुरआन की वज़ारत होनी चाहिए जोकि वक्त की ज़रूरयात को मुतमईन करे। इसलिए कुरआन की तकलीद करने का हुकूम दिया, जोकि असली है , और उनकी अहल-ए बैत, जो कुरआन की इस तरीके से वाज़ेह करेगी के वक्त की ज़रूरयात मुतमईन हो सके। मुझे ये झगड़ा बहुत पसंद आया। नजद का मुहम्मद शैख़ जवाद के सामने बिल्कुल चुप था, एक शिकारी के हाथों में घर की चिड़िया की तरह। नजद का नजदी मुहम्मद बिल्कुल उसी तरीके का था जैसा मैं ढूँढ रहा था। उसकी वक्त के आलिमों के लिए नफ़रत, यहाँ तक के (कदीम तरीन) चार ख़ालिफाओं को मामूली मानना कुरआन फहमी और सुन्नत में आज़ाद नुकता नज़र रखना उसका शिकार करने और उसे हासिल करने के लिए सबसे कमज़ोर इशारे थे। ये मग़रूर नौजावान अहमद एफ़ंदी जिन्होंने मुझे इस्तानबुल में पढ़ाया था उनसे बहुत मुख़तलिफ़ था। वो आलिम, अपने बुज़ुर्गों की तरह, एक पहाड़ की याद ताज़ा कराते थे। कोई ताकत उनको हिला नहीं सकती थी। जब भी वो अबू हनीफ़ा का नाम लेते थे, वो खड़े होते थे, और जाकर वुज़ू करके आते थे। जब कभी उनका

मतलब होता था अहदीस की किताब जिसका नाम **बुखारी** था उसे पकड़ने का तो वो, दोबारा, वुज़ू करते थे। सुन्नी इस किताब पर बहुत भरोसा करते हैं। नजद का नजदी मुहम्मद, दूसरी तरफ़, अबू हनीफ़ा को बहुत हिकारत से देखताा था। वो कहता, "मैं अबू हनीफ़ा से ज़्यादा जानता हूँ।" ([1] कुछ लाइल्म बग़ैर एक खास मस्लक के आज भी ऐसा कहते हैं।) इसके अलावा, उसके मुताबिक, **बुखारी** की आधी किताब गलत हैं। ([2] इस शख्स की इन इल्ज़ामो के बाद ये ज़ाहिर होता हैं के वो अहदीस के इल्म से कितना अंजान हैं) [जैसा के मैं hempher इन एतलाफ़ात का तुर्की में तजुर्मा कर रहा था, ([3] hempher के एतराफ़ात तुर्की किए गए और, लिखने वाले की वज़ाहतों के साथ, एक किताब कायम की गई। ये मतन उस तुर्की किताब का अंग्रेज़ी तर्जुमा हैं।) मुझे मंदरजाज़ेल वाक्या याद आयाः मैं हाई स्कूल में उस्ताद था। एक सबक के दौरान मेरे शार्गिदों में से एक ने पूछा, "सर, अगर एक मुसलमान एक जंग में मारा जाए, तो क्या वो शहीद बन जाएगा? "हाँ, वो बन जाएगा, मैंने कहा।" क्या ऐसा नबी ने फरमाया हैं? "हाँ, उन्होंने फरमाया।" क्या वो अगर समुंद्र में डूब जाते तब भी शहीद बन जाते? "हाँ, मेरा जवाब था।" और इस मामले में उसे ज़्यादा सवाब मिला।" फिर उसने पूछा, "क्या वो एक शहीद बन जाते अगर वो एक जहाज़ से गिरते? "हाँ, वो बनते," मैंने कहा। "क्या हमारे नबी ने ये भी फरमाया हैं? "हाँ, फरमाया हैं।" इस बात पर वो फतेहमंदाना हँसा और कहा, "सर! क्या उन दिनों में जहाज़ हुआ करते थे?" मेरा जवाब उसे मंदरजाज़ेल तरीके से थाः "मेरे बेटे! हमारे नबी के निन्यानवें नाम हैं। आपका हर नाम एक खुबसूरत वसफ़ के साथ बख्शा गया है। आपके नामों में एक **जामि उल-कलिम** हैं। वो एक लफ़ज़ में बहुत से हकाईक बयान करते हैं। मिसाल के तौर पर, आप कहते हैं, '**वो जो ऊंचाई से गिरेगा एक शहीद बन जाएगा।**' बच्चे ने तारीफ़ और शुक्रिए के साथ मेरे इस जवाब का एतराफ़ किया। इसी में बहुत सारे लफ़ज़ कानून, एहकामात और ममनुआत हैं जिनमें से हर एक दूसरे बहुत सारे माआनी रखता

हैं। साईन्सी काम ये हैं के इन माआनी को ढूँढा जाए और सही वाले को सही मामले पर नाफ़िस किया जाए, इसे **इजतिहाद** कहते हैं। इजतिहार अदा करने के लिए गहरा इल्म होना चाहिए। इस वजह से, सुन्नी जाहिल लोंगो को इजतिहाद करने से मना करते हैं। इसका मतलब ये नहीं के इजतिहाद को ममनुअ करना। हिजरी दौर की चौथी सदी के बाद कोई आलिम इतने तालिमयाफ़ता नहीं थे के मुकम्मल मुजतहिद के मरतबे पर पहुँचते [आलिम गहरे सीख्र वाले (इजतिहाद करने के लिए काफ़ी)]; इसलिए, कोई भी इजतिहाद नहीं करता था, जिसका मतलब कुदरती तौर पर इजतिहाद के दरवाज़े बंद होना हुआ। दुनिया के ख्रातमों की तरफ़, ईसा (जिसस) अलैहिस्सलाम आसमान से उतरेंगे और मेहंदी (इस्लाम के हिरो) ज़ाहिर होंगे; ये लोग इजतिहाद अदा करेंगे। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, **"मेरे बाद मुसलमान तेहत्तर फिरकों में बंट जाएंगे। इनमें से सिर्फ़ एक फिरका जन्नत में जाएगा।"** जब आपसे पूछा गया उस फिरके में कौन होगा, आपने जवाब दिया, **"वो जो मुझे और मेरे असहाब को अपनाए।"** एक दूसरी अहदीस-ए-शरीफ में आपने फरमाया, **"मेरे असहाब आसमानी सितारों की तरह हैं। अगर तुम उनमें से किसी एक की तकलीद करोंगे तो तुम्हें हिदायत हासिल होगी!"** दूसरे लफ़्ज़ों में, आपने फरमाया, "तुम जन्नत की तरफ़ जाने वाला रास्ता हासिल करोगे "यमन का एक यहूदी, अबदुल्लाह बिन सबा नाम से मुसलमानों के बीच में अस-हाब के ख्रिलाफ़ दुश्मनी की तरग़ीब करता रहता था। वो लाइल्म लोग जो इस यहूदी पर यकीन रखते थे और अस-हाब के ख्रिलाफ़ दुश्मनी छेड़ते थे वो **शियाअ** (शित्ते) कहलाते थे। और लोग जो अहदीस-शरीफ की फरमाबरदारी करते थे, अस-हाब-ए किराम को चाहते थे और उनकी तकलीद करते थे वो **सुन्नी** (सुन्नती) कहलाए।] मैंने नजद के मुहम्मद बिन अबदुल वहाब के साथ बहुत गहरी दोस्ती करली। मैंने एक मुहिम चलाई इसे हर तरफ़ तारीफ़ करने की। एक दिन मैंने उससे कहाः "तुम उमर और अली से आला हो। अगर आज नबी ज़िंदा होते, तो वो उनके बजाए तुम्हें अपना ख्रलीफ़ा तकर्रूर करते। मैं उम्मीद

रखता हूँ के इस्लाम तुम्हारें ही हाथों में बहाल होगा और सुधरेगा तुम अकेले आलिम हो जो इस्लाम को पूरी दुनिया में फ़ैलाओगे।" अबद-उल-वहाब के बेटे मुहम्मद और मैंने ये तए किया के हम कुरआन की वज़ाहत करेंगे; ये नई वज़ारत सिर्फ़ हमारे नुकत-ए नज़र को उजागर करेगी और सहाबा के ज़रिए, मसालिक के इमामों के ज़रिए और मुफ़ासिरों (गहरे माहिरे इल्म जो कुरआन की वज़ाहत में माहिर थे) के ज़रिए की गई वज़ाहतों के बरख़िलाफ़ जंग क्यों नहीं लड़ी अल्लाह के हुकूम के बावजूद, '**काफ़िरों और मुनाफ़िकों के साथ जंग लड़ो।?**' ([2] सूरह तौबा, आयतः 73) [दूसरी तरफ़, मवाहिब लादुन्निया/100 में लिखा हैं के सत्ताईस जिहाद काफ़िरों के ख़िलाफ़ लड़े गए। उनकी तलवारें इस्तानबुल के अजाईब खाने में रखी हैं। मुनाफ़िक मुसलमान बनने का दावा करेंगे। वो दिन के आयाम में अल्लाह के रसूल के साथ मस्ज़िद-ए नबवी में नमज़ अदा करने का दिखावा करेंगे। रसूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको जानते हैं। फिर भी वो ये नहीं कहते, "तुम मुनाफ़िक हो," उनमें से किसी एक को भी। अगर वो उनके ख़िलाफ़ जंग लड़ते और उनका कत्ल करते, लोग कहते, "मुहम्मद अलैहि-सलाम लोंगो को कत्ल कर देते हैं जो उनमें यकीन रखते हैं।" इसलिए वो उनके ख़िलाफ़ ज़बानी जिहाद करते थे। इसलिए जिहाद, जोकि फर्ज़ हैं, एक शख्स अपने जिस्म और/या अपनी जाएदाद और/या अपनी तकरीर के साथ भी कर सकता हैं। जो आयत-ए करीमा ऊपर बताई गई हैं वो काफ़िरों के ख़िलाफ़ जिहाद करने का हुकूम देती हैं। ये जिहाद की किस्म की वज़ाहत नहीं करता के कौन सी अदा की जाए। काफ़िरों के ख़िलाफ़ जिहाद लड़ाई के ज़रिए अदा हो, और मुनाफ़िकों के लिए जिहाद तबलीग़ और सलाह के ज़रिए अदा किया जाए। ये आयत-ए-करीमा इस किस्म के जिहाद का अहाता करती हैं।] उसने कहा, "नबी उनके ख़िलाफ़ जिहाद अपनी तकरीरों से करते थे।" मैंने कहा, "क्या जिहाद जोकि फर्ज़ (हुकूम किया गया) हैं, वो हे जो एक शख्स अपनी तकरीर से कर सकता हैं?" उसने कहा, "रसूलुल्लाह काफ़िरों के ख़िलाफ़ जंग लड़ते

थे।" मैंने कहा, "नबी काफ़िरों के ख़िलाफ़ जंग लड़ते थे अपने हिफ़ाज़त करने के लिए। इसलिए के काफ़िर उनको कत्ल करने का इरादा रखते थे।" उसने सिर हिलाया। एक दूसरे वक्त में मैंने उससे कहा, "मुता निकाह ([3] निकाह का मतलब है एक शादी का मुआहिद इस्लाम के ज़रिए बताया गया। मुता निकाह का मतलब हैं एक मुआहिरा एक आदमी और औरत के बीच एक खास मुददत तक के लिए सुहबत करना। इस्लाम इस किस्म की शादी की मुमानिअत करता हैं।) उसने एतराज़ किया," नहीं, ऐसा नहीं हैं। मैंने कहा, "अल्लाह ने वाज़ेह किया, "**तुमने जो उनको इस्तेमाल किया उसके बदलें में, तुम उनको महर दो जिस पर तुमने फ़ैसला किया।**" ([**1**] सूरह निसा, आयतः **24**) उसने कहा, "उमर ने अपने वक्त में मौजूद मुता के अमल की दो मिसालों पर मनाही की थी और कहा के अगर कोई ऐसा अमल करेगा तो वो उसे सज़ा देंगे।" मैंने कहा, "तुम दोंनो कहते हो के तुम उमर से आला हो और उसकी तकलीद करते हो। इसके अलावा, उमर ने कहा इसे ममनुअ किया अगरचे वो जानते थे के नबी ने इसकी इजाज़त दी।

नोट ः[**2**] मुता निकाह आज की उस अमल की तरह हैं जैसे एक रखेल रखली, ये शिआयों के मुताबिक जाईज़ है। उमर रज़ी-अल्लाह अनह ने ऐसा कुछ नहीं कहा। दूसरे सारे ईसाइयों की तरह, अंग्रेज़ जासूस भी हज़रत उमर की तरफ़ दुश्मनी रखते थे और इस मौके पर भी उनके ख़िलाफ़ भड़का रहे थे। **हुजाज-ए-कत-इयया** किताब में लिखा हैः "उमर रज़ी-अल्लाहु अन्ह ने कहा के रसूल्ल्लाह ने मुता निकाह की मुमानियत की हे और ये के अल्लाह के रसूल के ज़रिए मना किए गए काम की वो इजाज़त नहीं देंगे। सारे अस-हाब-ए-किराम ने खलीफ़ा के इस बयान की हिमायत की। उनमें हज़रत अली भी थे।" (बराए महरबानी **सही लफ़ज़ के दस्तावेज़** किताब को देखिए।)

1) तुम क्यों नबी के लफ़ज़ को परे रख रहे हो और उमर को मान रहे हो?"

उसने जवाब नहीं दिया। मुझे पता था वो कायल हो गया है। मुझे एहसास हुआ के नजद के मुहम्मद को एक औरत की इच्छा थी; वो अकेला था। मैंने उससे कहा, "आओ, हम दोंनो मुता निकाह के ज़रिए एक-औरत ले लें। हम उनके साथ अच्छा वक्त गुज़ारेंगे। उसने सिर हिलाकर रज़ामंदी दी। ये मेरे लिए एक बहुत बड़ा मौका था, इसलिए मैंने उसके लिए एक औरत ढूँढने का वादा किया ताकि वो अपने आपको बहला सके। मेरा मकसद उसकी लोंगो के बारे में कायरता को दूर करना था। लेकिन उसने कहा ये शर्त है के इस मामले को राज़ रखा जाए हम दोंनो के बीच में और ये के उस औरत को उसका नाम तक नहीं बताया जाए। मैं फौरन उन ईसाई औरतों के पास गया जिन्हें विज़ारत ने मुसलमान लड़कों को बहकाने के काम से भेजा था। मैंने उनमें से एक को सारा मामला वाज़ेह किया। वो मदद करने के लिए राज़ी हो गई, तो मैंने उसकी उरफ़ियत सफ़िया रखी मैं नजद के मुहम्मद को उसके घर ले गया। साफ़िया घर पर थी, अकेली। हमने एक हफ़ते का शादी का मुआहिदा नजद के मुहम्मद के लिए बनवाया, वो **महर** के नाम में उस औरत को कुछ सोना देगा। इस तरह हमने नजद के मुहम्मद को गुमराह करना शुरू किया साफ़िया ने अंदरूनी, और मैंने बाहर से। नजद का मुहम्मद अब पूरे तरीके से सफ़ीया के हाथों में था। इसके अलावा, वो इजतिहाद और खयालात की आज़ादी की आड़ में शरीअत के अहकामात की नाफरमानी के मज़े लूटने लगा। मुता निकाह के तीसरे दिन मेरा उसके साथ लम्बा झगड़ा हो गया के शराब/मशरूबात हराम नहीं है (इस्लाम के ज़रिए ममनुअ)। हालाँकि उसने कई आयतें और अहदीसों के हवाले दिए जिससे ज़ाहिर हो रहा के शराब हराम है। मैंने उन सबको रद किया और आखिरकार कहा, "ये हकीकत हैं के यज़ीद और उमय्याद और अब्बासी खलीफ़ा इन मशरूबात को पीते थे। क्या वो सब आवारा लोग थे और तुम सिर्फ़ अकेले सीधे रास्ते पर हो? वो बिलाशक तुम से ज़्यादा अच्छा कुरआन और सुन्नत को जानते थे। उन्होंने कुरआन और सुन्नत से ये मफ़हूम निकाला के शराब मकरूह हैं, हराम नहीं। ये भी तो, यहूदी और ईसाइयों की

किताबों में लिखा हैं के शराब मुबाह (इज़ाज़त दी गई हैं। सारे मज़हब अल्लाह के अहकामात हैं। असल में एक हवाले के मुताबिक, 'उमर मशरूबात पीते थे इस आयत के ज़हूर होने से पहले, **'तुम सब ने उसे छोड़ दिया, क्या तुमने नहीं?'** ([1] सूरह माएदा, आयतः 91) अगर ये हराम होती तो, नबीं उसे अज़ाब देते। चूँकी नबीं ने उसे सज़ा नहीं दी, तो शराब हलाल है। [हकीकत ये है के उमर रज़ी अल्लाहु अन्ह इन मशरूबात को पीने के आदी थे उनके हराम होने से पहले। मशरूबात को फिर भी नहीं पिया। अगर कुछ उम्य्यद और अब्बासी खलीफ़ा नशीली मशरूबात लेते थे, तो ये इस बात को ज़ाहिर नहीं करता के मशरूबात शराब के साथ मकरूह है। ये ज़ाहिर करता हैं के वो गुनहगार थे, के वो हराम के मुरतकिब थे। इसलिए आयत-ए करीमा जो जासूस ने हवाले दिए, साथ ही दूसरी आयत-ए शरीफ, ये ज़ाहिर करती है के मशरूबात शराब के साथ हराम हैं। **ये रियाज़-उन-नासिहीन** में बयान हैं, " पहले शराब पीने की इजाज़त थी। हज़रत उमर साद इबनि वकास, और दूसरे कुछ सहाबी शराब पीया करते थे। बाद में सूरह बकरा की आयत 219 नाज़िल हुई जिसमें शराब नशे को गुनाहे कबीरा करार दिया गया। कुछ वक्त के बाद सूरह निसा की बयालिसवीं आयत नाज़िल हुई और इससे वाज़े हुआ, **"जब तुम नशे में हो तो नमाज़ की तरफ़ मत जाओ!"** आखिरकार, सूरह माएदा की तिरानवीं आयत नाज़िल हुई और शराब को हराम करार कर दिया गया। ये मंदरजाज़ेल अहदीस-ए शरीफ़ में हवाला दिया गयाः **"अगर कोई चीज़ ज़्यादा मिकरार में इस्तेमाल करने से मदहोश करदे तो उसकी इंतेहाई थोड़ी मिकदार का इस्तेमाल भी हराम है।"** और **"शराब पीना गुनाहे कबिरा हैं।"** और **"ऐसे शख्स के साथ दोस्ती मत करो जो शराब पीता हो! उसके जनाज़े में शिरकत मत करो** (जब वो मर जाए)! **उसके साथ शादी के रिश्ते में मत बंधो!"** और **"जो शराब पीना बुत परस्ती के बराबर है।"** और **"जो शराब पीता हैं, ओ बेचता हैं, या देता हैं, अल्लाह तआला की उस पर लानत हो।"**] नजदी मुहम्मद ने कहा, "कुछ मुफ़सबिक, उमर शराब को पानी के साथ मिलाकर पीते

थे और कहते के ये हराम नहीं हैं अगर इसमें मदहोशी का असर नहीं है। उमर का ख्याल सही है, क्योंकि कुरआन में वाज़ेह किया गया हैं, शैतान शराब और जुए के ज़रिए तुम लोंगो के दरमियान झगड़ा और दुश्मनी ड़लवाने और अल्लाह के ज़िकर से और नमाज़ से ग़ाफ़िल करवाना चाहता हैं। इसलिए अब तुम इन्हें छोड़ दो, क्या तुम नहीं? ([1] सूरह माएदा, आयतः 91) शराब इस आयत में बयान गुनाह का सबब जब तक नहीं बन सकती जब तक उसमें मदहोशी का असर न हो। शराब जब तक हराम नहीं है जब तक उसमें मदहोशी का असर बाकी न रहे।"

नोट ः[2] ताहम, हमारे नबी ने फरमाया, "**अगर कोई चीज़ ज़्यादा मिकरार में इस्तेमाल करने से मदहोश करदे तो उसकी इंतेहाई कम मिकदार जो मदहोश न करे उसका इस्तेमाल भी हराम है।**")

मैंने साफ़िया को शराब पर होने वाली तकरार के बारे में बताया और उसे हिदायत की के वो उसे तेज़ शराब पीने पर मजबूर करे। उसके बाद, उसने कहा, जैसा तुमने कहा था मैंन वैसा ही किया और उसे शराब पिलाई। वो उस रात नाचता रहा और उसने कई बार मुझ से सुहबत की।" उसके बाद से साफ़िया और मैंने नजदी मुहम्मद पर पूरा काबू कर लिया। हमारी अलविदाई बात-चीत में मुश्तरका दौलत के वज़ीर ने मुझ से कहा था, "हमने स्पेन को काफ़िरों [इसका इशारा मुसलमानों की तरफ़ हैं] से शराब और ज़िना से छीना था। आओ एक बार दोबारा फिर अपनी सारी ज़मीनों को वापिस हासिल करें इन दो औज़ारों को इस्तेमाल करके।" अब मुझे अंदाज़ा होता हैं के इस बात में कितना वज़न था। एक दिन नजदी मुहम्मद के साथ रोज़े के मोज़ूअ पर बहस छेड़ीः कुरआन में ये बयान हैं, '**तुम्हारा रोज़ा तुम्हारे लिए बहुत नेक साअत हैं।** ([3] सूरह बकरा, आयतः 1841) ये नहीं कहा गया के रोज़ा रखना फर्ज़ हैं (एक साधा एहताम)। इसलिए, इस्लामी मज़हब में रोज़ा सुन्नत हैं, फर्ज़ नहीं है।" उसने एहतेजाज किया और कहा, "क्या," तुम मुझे मेरे ईमान से

गुमराह करने की कोशिश कर रहे हो? मैंने जवाब दिया, "किसी भी इंसान का ईमान उसके दिल की पाकिज़गी, उसके ज़मीर की निजात पर मुबनी होता है, और न की दूसरों के हुकूम की खिलाफ़ वरज़ी करने पर क्या नबी ने ये नहीं फरमाया, **'ईमान मुहब्बत है' ?** क्या अल्लाह ने कुरआन अल-करीम में नहीं फरमाया, "**अपने रब** (अल्लाह) **की इबादत करो यहाँ तक के तुम्हें यकीन मरने तक इबादत करो।**")

([4] सारी इस्लामी किताबें इस बात से राज़ी हैं के यहाँ (यकीन) का मतलब है (मौत) इसलिए इस आयत-करीमा का मतलब है मौत तक इबादत। इसलिए, जब कोई अल्लाह और आखिरत के दिन पर यकीन करले, और अपने दिल की अपने अमाल की सफ़ाई करले, तो वो शख्स सबसे ज़्यादा इंसानियत का अच्छा बन जाएगा।" ([5] सूरह हिजर, आयतः 99) उसने मेरी बात के जवाब में अपना सिर हिलाया। एक बार मैंने उससे कहा, "नमाज़ फर्ज़ नहीं हैं।" "ये कैसे फर्ज़ नहीं हैं?" अल्लाह कुरआन में फरमाता हैं, **'मुझे याद करने के लिए नमाज़ पढ़ो।'** ([1] सूरह ताहा, आयत: 14) फिर, नमाज़ का मकसद है अल्लाह को याद करना। इसलिए, तुम नमाज़ को अदा किए बगैर भी अल्लाह को याद कर सकते हो।" उसने कहा, "हाँ। मैंने सुना हैं के कुछ लोग नमाज़ अदा करने के बजाए अल्लाह का ज़िकर करते हैं। मैं उसके इस बयान पर बहुत खुश हुआ। मैंने और कोशिश की के उसके इस खयाल को और बढ़ा सकूँ और उसके दिल पर काबू पा सकूँ। फिर मैंने नोट किया के वो नमाज़ को ज़्यादा अहमियत नहीं देता और बल्कि कभी ही अदा करता था। वो बहुत लापरवाह हो गया था खासतौर पर सुबह की नमाज़ के साथ। क्योंकि मैं उसे आधी रात तक बातों में मशगूल रखता था ताकि वो सो न पाए। ताकि वो इतना ज़्यादा थक जाए के वो सुबह नमाज़ के लिए उठ न पाए।

नोट : **2 हमारे नबी ने फरमाया नमाज़ इस्लाम का पिलर है। जो नमाज़ अदा करता है उसने अपना इमान बना लिया है। जो नमाज़ अदा नहीं**

करता उसने अपना इमान बरबाद कर लिया है। और एक दूसरी अहदीस मे " **नमाज़ अदा करे जैसे की मै अदा करता हु**। ये एक बड़ा गुनाह है के इस तरीके से नमाज़ अदा न की जाए ।जो दिल की सच्चाइ ज़ाहिर करती हे वो नमाज़ की सही अदाएगी है।

मैंने आहिस्ता आहिस्ता नजदी मुहम्मद की ईमान की चादर उसके कंधो से उतारनी शुरू करदी। एक दिन मैंने उससे नबी के बारे में भी बहस छेड़नी चाहिए। " अगर आज के बाद तुमने मुझ से इस मोज़ूअ पर बहस करी तो हमारा रिश्ता टूट सकता है और मैं अपनी दोस्ती तुम्हारें साथ ख़त्म कर दूँगा।" इस पर मैंने नबी के बारे में बहस करनी बंद करदी के कहीं मेरी सारी कोशिश एक गलती से हमेशा के लिए ज़ाया न हो जाएँ। वो एक घमंड़ी आदमी था। साफ़िया का शुक्रिया। मैंने उसके ऊपर एक फाँसी का फँदा लटका दिया था। एक मौके पर मैंने कहा, "मैंने सुना हैं के नबी ने अपने अस-हाब को एक दूसरे का भाई बना दिया था। क्या ये सही है ?" उसके हॉमी में जवाब देने पर, मैं ये जानना चाहता था के क्या ये इस्लामी उसूल वक्ती था या मुस्तकिल। उसने वज़ाहत की, "ये मुस्तकिल है। क्योंकि नबी मुहम्मद का कहा हुआ हलाल कयामत तक हलाल है, और आपका कहा हुआ हराम इस दुनिया के ख़ात्में तक हराम है।" फिर मैंने उसे भाई बनने की पैशकश की। इसलिए हम भाई भाई बन गए। उस दिन के बाद से मैंने उसे कभी अकेले नहीं छोड़ा। मैं उसके सफ़र में भी साथ होता था। मैं मेरे लिए बहुत अहम था। इसलिए के जो पेड़ मैंने लगाया था और उगाया था, अपने जवानी के कीमती दिन लगाकर, वो अब फल देने के लिए तैयार था। मैं लंदन में मुश्तरका दौलत की विज़ारत को ख़बर भेजता था। जो जवाब मुझे मिलते वो हौसला अफज़ा होते, नजदी मुहम्मद मेरे बताए हुए रास्ते पर चल रहा था। मेरा काम उसके ज़ेहेन में आज़ादी, खुदमुख्तारी और वहमी ख़यालात डालना था। मैं हमेशा ये कहकर उसकी तारीफ़ करता, के एक शानदार मुसतकबिल उसका इंतेज़ार कर रहा है। एक

दिन मैंने ये सपना घड़ाः कल रात मैंने ख्व्वाब में हमारे नबी को देखा। मैंने आपको उन सिफ़ात से मंसूब किया जो मैंनें आलिमों से सीखी थीं। आप एक चबूतरे पर बैठे थे। आप के चारों तरफ़ आलिम बैठे थे जिन्हें मैं नहीं पहचानता। तुम अंदर दाखिल हुए। तुम्हारा चेहरा एक नूरानी हाले की तरह चमक रहा था। तुम नबी की तरफ़ बढ़े, और जब तुम काफ़ी करीब पहुँच गए तो नबी खड़े हुए और तुम्हारी दोनो आँखों के बीच बोसा दिया। आपने फरमाया, 'तुम मेरे हमनाम हो, मेरे ईल्म के वापिस हो, दुनियांवी और मज़हबी मामलात में तुम मेरे नायाब हो।' तुमने कहा, 'ए अल्लाह के नबी! मैं लोगों के सामने अपने ईल्म को वाज़ेह करता हुआ डरता हूँ। तुम सबसे आला हो। डरो मत नबी ने जवाब दिया। मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ये ख्वाब सुनकर खुशी से दिवाना हो गया। उसने मुझ से कई बार पूछा के क्या मैं सच कह रहा था, और जितनी बार उसने पूछा हर बार मैंने उसे हाँ में जवाब दिया। आखिरकार उसे इस बात का यकीन हो गया के मैंने उसे सच बताया था। मैं सोचता हूँ, उसी वक्त से, उसने इरादा कर लिय था के वो उन नज़रयात की इशाअत करेगा जो मैंने उसके दिल में ड़ाले थे और एक नया फिरका कायम करेगा।

नोट : **अल-फजर-अस-सादिक** कितब बगदाद के जमील ज़हावी एफ़ंदी के ज़रिए लिखी गई, जो इस्तानबुल की दारुलफनून (यूनीवरसिटी) में अकाएद-ए-इस्लामिया (इस्लामी अकीदे के) मुदेरिस (प्रोफ़ेसर) थे और **1354** [सी .इ .**1936**] में वफात पाई, मिस्र में **1323** [सी.इ. **1905**] में छपी और हकीकत किताबवी ने इस्तानबुल में दोबारा आफसेट छपाई के ज़रिए इशाऊत कराई। किताब में बयान हैं, "वहाबी फिरके के काफिरान नज़रयात नजद के मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब ने **1143** [सी.इ. **1730**] में तखलीक किए। वो **1111** [सी.इ. **1730**] में पैदा हुआ, और **1207** [सी.इ. **1792**] में मरा। ये फिरका मुसलमानों की काफी बड़ी तादाद खून की कीमत पर देरिया के अमीर मुहम्मद बिन सऊद के कहने पर फैलाया गया। जो मुसलमान वहाबियों से

इत्तेफ़ाक नहीं करते उन्हें वो मुश्रिक कहते हैं। उनका कहना के (ग़ैर वाबियों) को सबको दोबारा हज करना होगा (चाहे अगर उन्होने उसे अदा कर लिया), और ये इस बात पर इसरार करते हैं के उनके पिछले छः सौ साल के बाप दादा भी काफिर थे। वो किसी को भी मार सकते हैं जो वहाबी फिरके को न अपनाए, और उनके माल को लूट के माल के तौर पर कब्ज़ा कर सकते हैं। उन्होंने मुहम्मद अलैहिस्सलाम पर गंदी वजूहत की तोहमते लगाई। उन्होने फिकह तफ़सीर और अहदीस की किताबें जला डालीं। अपने नज़रयात के मुताबिक उन्होंने कुरआन अल करीम की तफ़सीर की। मुसलमानों को धोखा देने के लिए उन्होने कहा हम हंबली मसलक से हैं। अगरचे, ज़्यादातर हंबली आलिमों ने उनकी तरदीर करते हुए किताबें लिखीं और वाज़ेह किया के वो काफ़िर हैं। वो काफ़िर हैं क्योंकि वो हराम को हलाल बोलते हैं और नबियों और औलियाओं के लिए बुरे मफ़्ज़ इस्तेमाल करते हैं। वहाबी फिरका दस अजज़ा पर मुबनी हैः अल्लाह एक माद्दी हस्ती है (नऊज़ोबिल्लाह)। उसके हाथ, एक चेहरा, और सिमतें हैं। [उनका ये अकीदा ईसाइयों के अकीदे जैसा है। (बाप, बेटा, और मुकददस रू)]; **2-** वो अपनी समझ के मुताबिक कुरआन अल-करीम की तशरीह करते हैं; **3-** वो अस-हाब-ए-किराम के ज़रिए बताए गए हकाईक से इंकार करते हैं; **4-** वो आलिमों के ज़रिए बताए गए हकाइक की मनाही करते हैं; **5-** वो कहते हैं जो शख्स चारों मुसलकों में से एक की तकलीद करता हैं वो काफ़िर है; **6-** वो कहते हैं ग़ैर-वहाबी काफ़िर हैं; **7-** वो कहते हैं जो शख्स नबी और औलिया को (अपने और अल्लाह तआला के बीच) वसीला बनाकर दुआ माँगे वो काफ़िर बन जाता हैं; **8-** वो कहते हैं नबी की कब्र पर या औलिया पर जाना हराम हैं; **9-** उनका कहना है के अल्लाह के अलावा किसी और की कसम खाने वाला मुश्रिक है; **10-** उनका कहना हैं, जो शख्स अल्लाह के अलावा किसी और की ज़मानत पर मज़हबी रसूम बनाए या जो शख्स एक जानवर मारे (कुरबानी के तौर पर) औलिया की कबरों पर तो वो भी मुश्रिक बन जाता हैं। मेरी इस किताब में

दस्तावेज़ी सबूतों के ज़रिए साबित किया जाएगा के ये दस अकीदे गलत हैं।"
वहाबी फिरके के ये दस अकीदे नुमाया तौर पर उन मज़हबी उसूलों से मिलते हुए हैं जिनका सबक हेमफ़र/hempher ने नजदी मुहम्मद को दिया था। अंग्रेज़ो ने हेमफ़र के एतराफ़ात को ईसाई तबलीग़ के लिए छापे। मुसलमान बच्चों को गुमराह करने के लिए उन्होने इस्लामी तालीमात के नाम पर झूठ और मन गढ़त बातें लिखीं। इसलिए, अपने नौजावानों को इस अंग्रेज़ी जान से बचने के लिए, हमने इस किताब को छापा, जो उनके झूठ और तोहमतों की तज़ीह करना हैं।

सेकशन एक

पाँचवा हिस्सा

ये उन दिनों की बात हैं जब मेरी और नजदी मुहम्मद की दोस्ती बहुत मज़बूत हो चुकी थी के मुझे लंदन से एक पैगाम मिला जिसमें मुझे **करबला** और **नजफ** जाने का हुकूम मिला, ये दोनो शिय के इल्म और रूहानियत के सबसे मश्हूर मरकज़ थे। इसलिए मुझे नजदी मुहम्मद के साथ अपनी रफ़ाकत ख़त्म करनी पड़ी और बसरा छोड़ दिया। फिर भी मैं खुश था क्योंकि मुझे यकीन था के ये जाहिल और बदअख़लाक शख्स एक नय फिरका ज़रूर कायम करेगा, जो बदलें में इस्लाम को अंदरूनी तौर पर कमज़ोर कर देगा, और ये के मैं ही इस नए फिरके के काफ़िराना अकाइद को बनाने वाला था। अली, सुन्नियों के चौथे ख़लीफ़ा, और शियाओं के मुताबिक पहले, नजफ़ में दफनाए गए। **कूफ़ा** का शहर जोकि एक फरसाह (तीन मील), यानी, नजफ़ से एक घंटे के मसाफ़त पर था, वो अली की ख़िलाफ़त की राजधानी था। जब अली को कत्ल किया गया, तो उनके बेटों हसन और हुसैन ने उनको कूफ़ा से बाहर एक जगह जिसे आज नजफ़ कहते हैं वहाँ दफनाया। वक्त के साथ, नजफ़ तरक्की करता गया, जबकि कूफ़ा आहिस्ता आहिस्ता गिरता गया। शियाअ मज़हबी आदमी नजफ़ में एक साथ आए। घर, बाज़ार, मदरसें (इस्लामी स्कूल और

यूनीवर्सिटियाँ) वहाँ पर कायम की गई। इस्तानबुल का खलीफ़ा मंदरजाज़ेल वजूहात की बिना पर उन पर महरबान थे:

1- ईरान में शियाओ कै हुकूमत शियाओं की हिमायत करती थी। खलीफ़ा का उनके साथ मदाखलत दोनो राज्यों के दरमियान कशमकश का सबब बनती, जिसकी वजह से जंग हो सकती थी।

2- नजफ़ में रहने वाले जिनमें मसलह कबीले भी शामिल थे शियाओं की हिमायत करते थे।

3- नजफ़ के शियाओं को तमाम दुनिया, खासतौर से अफ्रिका और भारत के शियाओं पर हुकूमरानी हासिल थी। अगर खलीफ़ा उनको छेड़ता, तो सारे उनके खिलाफ़ खड़े हो जाते। हुसैन बिन अली, नबी का नवासे, यानी आपकी बेटी फातिमा के बेटे, को करबला में शहीद किया गया। ईराक के लोगों ने मदीना में हुसैन के पास अपना वफद भेजकर ईराक आने की दावत दी ताकि वो ईराक के लोगों के लिए खलीफ़ा चुने। हुसैन और आपका खानदान करबला के इलाके मे थे जब ईराकियों ने अपनी साबका नियत को छोड़ दिया और, यज़ीद बिन मुआविया, अमवी खलीफ़ा जोकि दमिक्श में रह रहा था उसके हुकूम पर, उन्हें गिरफ़तार करने चल पड़े। हुसैन शिया और उनका खानदान आखिरी सांस तक ईराकी फौज से लड़े। ये जंग उन सबकी मौत पर खत्म हुई, इस तरह ईराकी फौज जीत गई। उस दिन से, करबला की रूहानी मरकज़ हैं, इसलिए सारी दुनिया के शिया यहाँ आते हैं और इतना बड़ा हुजूम बनाते हैं के हमारे ईसाई मज़हब में उसकी कोई मिसाल नहीं मिलती।

करबला, एक शिया शहर, जिसमें शियाइ मदरसें हैं। ये शहर और नजफ़ एक दूसरे की मदद करते हैं। इन दो शहरों में जाने का हुकूम पा कर, मैं बसरा से बग़दाद के लिए रवाना हुआ, और फरात के पास शहर 'हुला' पहुँचा।

बजला और फरात तुर्की से आती हैं, और ईराक से होती हुई खलीज पारस में जा गिरती हैं। ईराक की ज़रात और खुशहाली इन दोनो दरियाओं की वजह से हैं।

जब मैं लंदन वापिस आया, तो मैंने मुश्तरका दौलत की विज़ारत को एक तजवीज़ के एक मंसूबा बनाया जाए। जिस के ज़रिए इन दरियों का रूख और गुज़रगाहें तबदील करदी जाएँ ताकि ईराक हमारे बातें कुबूल करे। जब कट कर दिया , तो ईराक को हमारी मांगे पूरी करनी होंगी। हुला से नजफ़ तक मैंने एक अज़रबाइजानी ताजिर के रूप में सफ़र किया। शियाइ मज़हबी आदमियों के साथ गहरी दोस्ती करके मैं उन्हें भटकाने लगा। मैं उनके मज़हबी हिदायत के मरकज़ो में शामिल हो गया। मैंने देखा के न तो वो सुन्नियों की तरह सांईस को पढ़ते, न हीं वो खुबसूरत अखलाकी सिफ़ात रखते थे जो सुन्नियों के पास थीं। मिसाल के तौर परः

1- वो तुरकियों के सख्त दुश्मन थे। इसलिए के वो शिया थे और तुर्की सुन्नी थे। वो कहते थे के सुन्नी काफ़िर हैं।

2- शियाअ आलिम मज़हबी तालीमात में पूरे तौर पर डूबे हुए थे और दुनियावी में तालीमात में उनका बहुत कम रूजहान था, जैसे के हमारी तारीख में ठहराओं के वक्त के दौरान पादरियों के मामलें में था।

3- वो इस्लाम के अंदरूनी महक और बुलंद चाल चलन से नावाकिफ़ थे, न ही उनको वक्त की साईन्सी और तकनीकी तरक्की का अंदाज़ा था। मैंने अपने आप से कहाः के ये शिया कितने घाटिया लोग हैं। जब सारी दुनिया जागी है तो ये ग़फ़लत की नींद सो रहें हैं। एक दिन एक बाढ़ आएगी और इन सबको बहा कर ले जाएगी। कई बार मैंने कोशिश की के उन्हें खलीफ़ा के खिलाफ़ भड़का सकूँ। बदकिस्मती से, किसी ने मुझे सुनना भी पसंद नहीं

किया। उनमें से कुछ मुझ पर हँसते थे जैसे के मैंने उनको सारी दुनिया को तबाह करने के लिए बोल दिया। क्योंकि वो खलीफ़ा को एक ऐसा किला समझते थे जिसे फतह न किया जा सके। उनके मुताबिक, उन्हें मेंहदी के ज़हूर में आने के बाद ही खिलाफ़त से निजात मिल सकेगी। उनके मुताबिक, मेंहदी उनके बारहवें ईमाम थे, जो इस्लामी नबी की नसल से थे और जो **255** हिजरी में गायब हो गए थे। वो यकीन रखते हैं के वो अभी तक ज़िन्दा हैं और एक दिन वापिस होंगे और दुनिया को इस बुरी ज़िलमत और नाईन्साफ़ी से छुटकारा दिलाएंगे, ईसांफ़ का बोल बाला करेंगे। ये अचंबा हैं। किस तरह इन शिया लोगों ने इन तोहम्मात पर यकीन कर लिया। ये बिल्कुल उस तोहम परिस्ताना ईसाई अकीदे की तरह हैं, "ईसा मसीह आएंगे और दुनिया में इंसाफ़ लाएंगे," एक दिन मैंने उनमें से एक से कहाः "क्या तुम पर फर्ज़ नहीं हैं के अपने नबी की तरह नाईन्साफ़ी की रोक थाम करो?" उसका जवाब थाः "आप नाईसाफ़ी की रोक थाम करने में कामयाब हुए क्योंकि अल्लाह आपकी मदद कर रहा था," जब मैंने कहा, "कुरआन में ये लिखा हैं, '**अगर तुम अल्लाह के मज़हब की मदद करो, वो बदलें में तुम्हारी मदद करेगा।**

नोट ः ([**1**] सूरह मुहम्मद, आयतः **71** अल्लाह तआला के मज़हब की मदद का मतलब है के अपने आपको शरीअत के मुताबिक ढ़ालो और उसे बढ़ाने की कोशिश करो। शाह के या रियास्त के खिलाफ़ बग़ावत का मतलब है मज़हब को तबाह करना।)"

अगर तुम शाहों के ज़ुल्म के खिलाफ़ बग़ावत करोगे, तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा।" उसने जवाब दिया, "तुम एक नाजिर हो। ये साईन्सी मामलात हैं। तुम इन्हें नहीं समझोगे।" अली अमीर-उल-मोमिनीन का मज़ार बहुत सजाया गया था। एक बड़ा सहन, सोने से ढ़के गुंबद, और ऊँची मिनारें। रोज़ाना शियाओं की एक बड़ी तादाद इस मज़ार पर आती हैं। वो इसमें जमाअत में नमाज़ अदा करते हैं। हर आने वाला पहले दहलीज़ पर खड़ा होता

है, उसे चूमता हैं, और फिर कब्र पर सलाम भेजता है। वो पहले इजाज़त लेते हैं और फिर अंदर दाखिल होते हैं। मकबरे का सहन बहुत बड़ा हैं, जिसमें मज़हबी आदमियों और आने वालों के लिए बहुत सारे कमरे हैं। करबला में अली के जैसे दो मकबरें और थे। उनमें से एक हुसैन का और दूसरा उनके भाई **अब्बास** का हैं, जो उनके साथ करबला में शहीद किए गए। शिया जो अमल नजफ़ में करते हैं बिल्कुल वैसे ही वो करबला में दोहराते हैं। करबला की आब ओ हवा नजफ़ से काफ़ी बहतर है। इसके इरद गिरद खुबसूरत फलदार बाग़ावत और नदी नाले हैं ईराक के अपने मिशन के दौरान मैंने एक मंज़र देखा जिससे मेरे दिल को बहुत तसकीन मिली। कुछ वाक्यात उसमानिया सल्तनत के ज़वाल के भी मिलें। एक बात ये थीं, इस्तानबुल में जो इंतेफ़ामिया ने गर्वनर मुकर्रर किया जो एक जाहिल और ज़ालिम शख्स था वो अपनी मरज़ी से काम करता था। लोग उसे पसंद नहीं करते थे। सुन्नी इसलिए परेशान थे क्योंकि गर्व नर ने उनकी आज़ादी पर रोक थाम लगा दी थी और उनकी कोई कीमत नहीं समझता था, और शियाअ लोग एक तुर्की के ज़रिए हुकूमत किए जाने पर नाराज़ थे जबकि उनमें नबी की नसल के सय्यद ([1] हज़रत हुसैन रज़ी अल्लाहु अन्ह की नसल से।) ([2] हज़रत हसन रज़ी-अल्लाहु अन्ह की नसल से।) मौजूद थे, जो गर्वनर के लिए बहतर इंतराब हो सकते थे। शियाअ एक बहुत ही खतरनाक हालत में थे। वो खस्ता हाल और बरबाद माहौल में ज़िंदगी गुज़ार रहे थे। सड़कें महफ़ूज़ नहीं थीं। राहज़न हमेशा कारखानों का इंतेज़ार करते, और जब भी देखते के वहाँ कोई मुहाफिज दस्ता नहीं तो उन पर हमला कर देते। इस वजह से तिजारती काफ़ले तब तक सफ़र पर नहीं निकले जब तक के हुकूमत उनके साथ फौजी मुहाफ़िज़ भेजती। शियाअ कबाईली हमेशा एक दूसरे के साथ जंग की शक्ल में रहते। वो रोज़ाना एक दूसरे को मारते और लूटते। लाईल्मी और जहालत खतरनाक हद तक फैल चुकी थी। शियाओ की ये हालत मुझे वो वक्त याद दिलाती जब पूरा यूरोप सलीबी जंगो का शिकार था। नजफ़ और करबला में रहने वाले मज़हबी रहनुमाओं को छोड़कर और

छोटी सी अकलियत हज़ारों में कोई एक भी शियाअ लिखना पढ़ना नहीं जानता था। मआशियत पूरे तौर पर गिर चुकी थी, और लोग बहुत ज़्यादा गरीबी में थे। इंतेज़ामी ढाँचा पूरे तौर पर नाअहल था। शियाअ हुकूमत के खिलाफ़ गददारियाँ करते रहते। हुकूमत और अवाम एक दूसरे को शक की निगाह से देखते। जिसके नतीजे में उनके बीच कोई आपसी तआवुन नहीं था। जो शियाअ मज़हबी रहनुमा, सिर्फ़ सुन्नियों की गालियाँ और कोसने देते रहते थे वो ईल्म, कारोबार, मज़हबी और दुनियावी सबसे पहले ही आरी हो चुके थे। मैंने करबला और नजफ़ में चार महीने काम किया। मैं नजफ़ में बहुत सख्त बीमार पड़ गया। मैं इतना बीमार हो गया था के सेहतमंद होने की उम्मीद छोड़ चुका था। मेरी बीमारी तीन हफ़्ते रही। मैं एक ड़ॉक्टर के पास गया। उसने मुझे एक नुस्खा दिया। दवाइयाँ इस्तेमाल करने पर, मैं ठीक होने लगा अपनी बीमरी के दौरान मैं एक नीचले कमरे में रहा। क्योंकि मैं बीमार था, इसलिए मेरा मेज़बान मेरे लिए दवाई और खाना तैयार करता बदले में गैर अहम रकम की उम्मीद थी और मेरी तीमरदारी करने पर बड़ा सवाब मिलने की उम्मीद थी। क्योंकि मैं अली अमीर उल-मोमिन का एक ज़ियारत मंद था। डॉक्टर ने मुझे सलाह दी के शुरू के दिनों में मैं सिर्फ़ मुर्गी की यखनी पियूँ। बाद में मुर्गी खाने की भी इजाज़त मिल गई। तीसरे हफ़्ते मैंने चावल की यखनी पी। दोबारा सेहतमंद होने के बाद मैं बग़दाद रवाना हो गया। मैंने नजफ़, हुला, और बग़दाद में सफर के दौरान अपने मुशाहदात पर मुबनी सौ सफ़हों की रिपोर्ट बनाई। मैंने अपनी रिपोर्ट मुश्तरका दौलत की विज़ारत के बग़दाद नुमाएदे को दे दी। मैं विज़ारत के हुकूम का इंतेज़ार करने लगा के मुझे ईराक में रहना हैं या लंदन वापिस जाना हैं। मैं लंदन वापिस जाना चाहता था। क्योंकि मैं बहुत लम्बे अरसे से बाहर था। मैं अपने घर और अपने खानदान को याद करता था। खासतौर से, मैं अपने बेटे रसपुतिन को देखना चाहता था। इस वजह से, मैंने अपनी रिपोर्ट के साथ एक अरज़ी भी ड़ाल दी थी के कम थोड़े अरसे के लिए ही सही लंदन वापिस चला जाऊँ। मैं ईराक में अपने तीन-साला मिशन के असरात के जवानी रिपोर्ट भी

बताना चाहता था और इसी दौरान कुछ आराम भी करना चाहता था। ईराक में विज़ारत के नुमाएंदे ने मुझे सलाह दी के उनसे कम ही मिलूँ मबादा के मैं मशकूक हो जाऊँ। उसने मुझे ये भी सलाह दी के वजाला दरिया के किनारे किसी भी एक सराए में कमरा किराए पर ले लूँ, और कहा, "जब मुझे लंदन से ड़ाक मिलेगी तो मैं तुम्हें विज़ारत के जवाब से आगाह कर दूँगा।" बग़दाद में रूकने के दौरान मैंने इस्तानबुल, खिलाफत की राजधानी, और बग़दाद के बीच रूहानी फर्क पर गौर किया। बस्रा से करबला और नजफ रवाना होते वक्त, मुझे परेशानी थी के नजदी मुहम्मद मेरे बताए हुए रास्ते से हर जाएगा। क्योंकि वो एक निहायती जल्द घबरा जाने वाला शख्स था। मुझे डर था के कहीं जो मकसद मैंने उसके ऊपर डाले हैं वो कहीं खराब न हो जाएँ। जब मैं उससे जुदा हुआ तो वो इस्तानबुल जाने का इरादा रखता था। मैंने उसे इस ख्याल से परे रखने की बहुत कोशिश की। मैंने कहा, "मैं बहुत परेशान हूँ के जब तुम वहाँ जाओ और कोई ऐसा बयान दे दो जिससे वो तुम्हें एक काफ़िर समझें और तम्हें मार दें। असल में मुझे कुछ और अंदेशा था। मुझे अंदेशा था के वहाँ जाकर वो आला आलिमों से मिल सकता हैं जो उसकी मक्करियों को सही कर सकते हैं और उसे सुन्नी अकीदे का बना सकते हैं और इस तरह मेरे सारे सपने बिखर जाएँगे। क्योंकि इस्तानबुल में ईल्म और इस्लाम की खुबसूरत अखलाकियात मौजूद थीं। जब मुझे पता चला के नजदी मुहम्मद बसरा में रहना नहीं चाहता, तो मैंने उससे कहा के वो इस्फहन और शीराज़ जा सकता है। क्योंकि ये दोनो प्यारे शहर हैं। और वहाँ के रहने वाले शिया हैं। और शियाअ नजदी मुहम्मद को बदलें में कोई तासिर नहीं डालेंगे। क्योंकि शियाअ ईल्म और अखलाकयात में कमतर हैं। इसलिए मैंने पक्का किया के वो अपना रास्ता नहीं बदले जो मैंने उसके लिए बनाया था। जब हम जुदा हो रहे थे तो मैंने उससे कहा, "क्या तुम तकिया पर यकीन रखते हो?" "हाँ, मैं रखता हूँ," उसने कहा। "काफ़िरों ने एक सहाबा को गिरफतार कर लिया और उन्हें अज़यतें दीं और उनके वालदेन को मार दिया। इस पर उसने **तकिया** किया, यानी, उसने खुले आम कहा के वो

एक मुश्रिक था। (जब वो वापिस आया और बताया के क्या हुआ था), तो नबी ने उसे बिल्कुल भी मलामत नहीं की।" मैंने उसे सलाह दी, "जब तुम शियाओं के बीच रहो, तो तकिया करलो; उन्हें मत बताओ के तुम सुन्नी हो ऐसा न हो वो तुम्हारें लिए मुसिबत बन जाएँ। उनके मुल्क और आलिमों से फ़ाएदा उठाओ! उनके रसूम और खुराफ़त सीखना। क्योंकि वो जाहिल और ज़िददी लोग हैं। जब मैं निकलने लगा, मैंने उसे कुछ रकम ज़कात के तौर पर दी। ज़कात एक इस्लामी टैक्स हैं जो ज़रूरत-मंदो में बाँटने के लिए जमा किया जाता हैं। इसके अलावा मैंने उसे एक काटी जानवर भी दिया तौहफ़े के तौर पर। इस तरह हम जुदा हो गए। मेरे जाने के बाद मेरा उससे राबता ख़त्म हो गया। इस बात ने मुझे परेशान कर दिया। जब हम जुदा हो रहे थे तो हमने फैसला किया था के हम दोंनो बसरा वापिस आएंगे और जो भी पहले आएगा और दूसरे को नहीं पाएगा तो वो एक खत लिखेगा और उसे अबद-उर-रिज़ा के पास छोड़ देगा।

सेकशन एक

छठा हिस्सा

बग़दाद में कुछ समय के लिये रूका। फिर, मुझे लंदन वापिस जाने का हुकूम मिला। मैं चला गया। लंदन में मैंने विज़ारत के और कुछ अफसरों से बातचीत की। मैंने उन्हें अपने लम्बे मिशन के दौरान सरगमियों और मुशाहदात के बारे में बताया। वो मेरी ईराक के बारे में मालूमात पर बहुत खुश हुए और कहा के वो खुश हैं। दूसरी तरफ़, सफ़िया, नजदी मुहम्मद की दोस्त ने भी मेरी रिपोर्ट पर रज़ा भेजी। मुझे मालुम हो चुका था के विज़ारत के आदमी मेरे पूरे मिशन में मेरी निगरानी करते रहे हैं। इन आदमियों ने भी मुतफ़िक रिपोर्ट भेजीं उन रिपोर्ट के साथ संगामी जो मेने वज़ीर को भेजी थी ।

मेरे लिए वज़ीर से मुलाकात का वक्त मुर्करर किया। जब मैं वज़ीर से मिला, तो वो बहुत गरमजोशी से मुझ से मिला, ऐसी गरमजोशी उसने मेरी इस्तानबुल से वापसी पर नहीं दिखाई थी। अब मैं ये जान गया था के मैं उसके दिल में एक अलग जगह बना चुका था। वज़ीर मेरी बात सुनकर बहुत खुश हुआ के नजदी मुहम्मद मेरे काबू में था। “यही वो औज़ार हैं जिसे हमारी विज़ारत तलाश कर रहीं थी। उसे हर तरह के वादे दो। ये अच्छा होगा के अगर तुम अपना सारा वक्त उसे वरग़लाने में लगाओ,” जब मैंने कहा, “मैं नजदी मुहम्मद के बारे में परेशान हूँ। हो सकता हैं वो अपना दिमाग़ बदल चुका हो,” उसने जवाब दिया, “परेशान मत हो। उसने अपनी सोच नहीं बदली जो उसकी थी जब तुमने उसे छोड़ा था। हमारी विज़ारत के जासूस उससे इसफहन में मिलें थे और हमारी विज़ारत को रिपोर्ट दी के वो नहीं बदला।” मैंने अपने

आप से कहा, "नजदी मुहम्मद अपने राज़ एक अजनबी को कैसे बता सकता है?" मैं ये सवाल वज़ीर से करने की कोशिश नहीं कर सकता था। ताहम, जब मैं नजदी मुहम्मद से मिला, तो मालूम हुआ के असफहन में अब्दुल करीम नामी श्ख्स उससे मिला और ये कहकर उसके सारे राज़ उगलवा लिए के मैं शैख़ मुहम्मद का भाई हूँ [यानी मेरा]।

मुझे उसने तुम्हारें बारे में वो सब बता दिया जो वो जानता है। नजदी मुहम्मद ने मुझ से कहा, "साफ़िया मेरे साथ असफहन चली गई थी और हम मुत-अ निकाह के ज़रिए मज़ीद दो महीने एक साथ रहे। अबद उल करीम मेरे साथ शीराज़ गया और मुझे एक औरत आसिया नाम की ढूँढ कर दी जो सफ़िया से ज़्यादा खुबसूरत और दिलक्श थी। आसिया के साथ मुत-अ निकाह करने के बाद, मैंने अपनी ज़िंदगी के सबसे ज़्यादा राहत वाले दिन गुज़ारे।"

बाद में मुझे मालूम हुआ के अबद-उल-करीम एक ईसाई एजेंट था जो असफहन के जेलफ़ा ज़िले में रहता था और विज़ारत के साथ काम करता था। और आसिया, एक यहूदी थी जो शीराज़ में रहती थी, वो भी विज़ारत की एक एजेंट थी। हम चारों ने आपस में तआबुन किया और नजदी मुहम्मद को इस तरह तैयार किया जाए के जो उससे मुसतकबिल में काम की उम्मीद है उसे वो ख़ूबी से कर सके।

वज़ीर, सैक्रेटरी तुम्हें कुछ रियास्ती राज़ो से आगाह करेगा, जो तुम्हें मिशन में मददगार साबित होंगे।" फिर उन्होंने मुझे दस दिन की छुट्टी दी जिसमें मैं अपने खानदान से मिल सकता था। इसलिए मैं फौरन अपने घर गया और अपने कुछ खुबसूरत तरीन लम्हें अपने बेटे के साथ गुज़ारे जो मेरी शक्ल से बहुत मिलता हुआ था। मेरा बेटा कुछ अलफ़ाज़ बोल सकता था, और इतने अच्छे तरीके से चलता था के मुझे वो बिल्कुल अपने जिस्म का एक हिस्सा लगता था! मैंने ये दस दिन की छुट्टी बहुत अच्छी, खुशी के साथ गुज़ारी। मुझे

अपना आप खुशी से उड़ता हुआ महसूस होता था। अपने घर वापिस जाकर अपने खानदान के साथ रहना बहुत बड़ी सहत थी। इस दिन की छुट्टी के दौरान मैं अपनी बूढ़ी फूफ़ी से मिलने गया जो मुझ से बहुत प्यार करती थीं। ये मेरे लिए अच्छा हुआ के मैं अपनी फूफ़ी से मिल लिया। क्योंकि वो मेरे तीसरे मिशन पर जाने के बाद ही मर गईं। मुझे उनके मरने का बहुत सदमा हुआ। ये दस दिन की छुट्टी एक घंटे की तरह गुज़र गई।

खुशी के दिन इस तरह के इतनी जल्दी गज़र जाते हैं एक घंटे की तरह, दुख के दिनों को सदियाँ लगती हैं। मुझे नजफ़ में अपनी बीमारी के वो दिन याद आते हैं। वो दिन मुझ पर सालों से भी ज़्यादा भारी थे।

जब मैं विज़ारत गया नए हुकूम लेने के लिए, मेरी मुलाकात सैक्रेटरी से हुई उसके पुरमुर्सरत चेहरे और लम्बे कद के साथ। उसने इतनी गरमजोशी से मेरा हाथ हिलाया जिससे उसके प्यार का इज़हार हो रहा था। उसने मुझ से कहा, "अपने वज़ीर और कालोनियों के कमैटी इन चार्ज के अहकाम के साथ, मैं तुम्हें रियास्त के दो राज़ बता दूँ। आईदा तुम इन दो राज़ो से बहुत फाएदा उठाओगे। कोई नहीं सिर्फ़ कुछ भरोसेमंद लोग इन दो राज़ो को जानते हैं।" मेरा हाथ पकड़े हुए, वो मुझे विज़ारत के एक कमरे में ले गया। मैं इस कमरे में कुछ दिलकश चीज़ से मिला। दस लोग एक गोल मेज़ के इरद गिरद बैठे हुए थे। पहला शख्स उस्मानी सुल्तान के भैस में था। वो तुर्की और अंग्रेज़ी बोल रहा था। दूसरा इस्तानबुल के शेख-उल-इस्लाम (इस्लामी माअमलात का सरबाह) के लिबास हुई लिबास में था। चौथा शख्स शाह ईरानी महल के वज़ीर के लिबास में था। पाँचवा शख्स नजफ़ में शियाओं के आला आलिम के लिबास में था। इन लोगों में आखिरी तीन लोग फारसी और अंग्रेज़ी बोल रहे थे। हर पाँच लोगो के साथ एक कातिब था जो कुछ वो उसे लिख रहा था। ये कातिब इन पाँच आदमियों को जासूसों के ज़रिए इकट्ठी की गई इस्तानबुल, ईरान, और नजफ़ की जानकारी भी दे रहे थे। सैक्रेटरी ने कहा, "ये पाँच लोग वहाँ पाँच लोगों

नुमाएंदगी कर रहे हैं। इन लोगों के किरदारों के बारे में जानने के लिए के वो क्या सोचते हैं, हमने इन लोगों को बिल्कुल इनके किरदारों की तरह इन्हें तालीम और तरबीयत दी है। हम इन लोगों को इनके असली किरदारों के बारे में इस्तानबुल, तेहरान और नजफ़ से हासिल करदा जानकारी देते रहे हैं। और ये लोग, बदले में अपने आपकों उन जगाहों के असली किरदारों के रूप में समझते हैं। फिर हम उनसे पूछते हैं और वो हमें जवाब देते हैं। हमने ये तए किया हुआ हे के जो जवाब इन लोगों के ज़रिए दिए जाएँ वो सत्तर फीसद उन जवाबात से मिलते हुए हों जो उनके असली लोग दे सकते हैं।" अगर तुम चाहों, तो अपने इतमिनान के लिए सवालात कर सकते हो। तुम नजफ़ के आलिम से पहले ही मिल चुके हो। "मैंने हाँ में जवाब दिया, क्योंकि मैं नजफ़ में शियाओं के बड़े आलिम से मिल चुका था और उससे कुछ मआमलात के बारे में पूछ चुका था। अब मैं उसके बहरूप के पास गया और पूछा," प्यारे उस्ताद, क्या हमें हुकूमत के ख़िलाफ़ जंग छेड़ देनी चाहिए क्योंकि वो एक सुन्नी और सरगंम हैं? उसने थोड़ी देर सोचा, और कहा, "नहीं हमारे लिए ये जाईज़ नहीं हैं के हुकूमत के ख़िलाफ़ जंग लड़े क्योंकि वो एक सुन्नी सरकार है। क्योंकि सारे मुसलमान भाई हैं। हम उन पर (सुन्नी मुसलमान) सिर्फ़ तब ही जंग कर सकते हैं अगर वो उम्मत (मुसलमानों पर) पर ज़ुल्म और परेशानियाँ ड़ाल रहें हों। और इस मआमले में भी हमें अमर-ए- बि-ल-मारूफ़ ([1] तालीमात, तबलीग़, और तारीफ़ करना इस्लामी अहकामात की।) और नहीं-ए-अनी-ल-मुंकर ([2] इस्लामी ममनुआत के ख़िलाफ़ चेतावनी, और नसीहतें।) के उसूलों को देखना होगा। जैसे ही वो अपने ज़ुल्म करने बंद करेंगे वैसे ही हम उनके अंदर दखलअंदाज़ी करनी बंद कर देंगे।" मैंने कहा, "प्यारे उस्ताद, क्या मैं यहूदी और ईसाइयों के गंदे होने के बारे आपकी राए जान सकता हूँ।" "हाँ, वो गंदे हैं," उसने कहा। "ये ज़रूरी हैं के उनसे दूर रहा जाए।" जब मैंने पूछा इसका सबब क्या हैं, उसने जवाब दिया, "ये सब एक बेइज़्ज़ती के तौर पर किया जाता हैं। क्योंकि वो हमें काफ़िरों की तरह देखते हैं

और हमारे नबी मुहम्मद अलैहिस्सलाम को नहीं मानते। इसलिए हम इसके लिए उनसे बदला लेते हैं।" मैंने उससे कहा, "प्यारे उस्ताद, क्या सफ़ाई ईमान का हिस्सा नहीं हैं? इस हकीकत के बावजूद, गलियाँ और **सहन-ए-शरीफ़** (हज़रत अली के मकबरे के आस पास का इलाका) के आस पास की सड़के साफ़ नहीं हैं। यहाँ तक के ईल्म की जगाहों, मदरसे भी साफ़ नहीं हैं।" उसने जवाब दिया, "हाँ, ये सही हैं; सफ़ाई ईमान से होती हैं। ताहम इससे कोई मदद नहीं मिल सकती क्योंकि शियाअ सफ़ाई के बारे में ग़ाफ़िल हैं।" विज़ारत में इस शख्स के ज़रिए दिए गए जवाबत से मिलते हुए थे जो नजफ़ में मैंने उस शियाअ आलिम से हासिल किए थे। नजफ़ के आलिम और इस शख्स के बीच इतनी यकसानियत ने मुझे हैरान कर दिया। इसके अलावा, ये शख्स फारसी बोल रहा था। अगर तुम बाकी चार बहरूपियों के साथ अभी बात करके ये बता सकते थे के वो अपने असली अफ़राद से कितने मिलते हुए हैं। जब मैंने कहा, "मैं जानता हूँ के शैख़-उल-इस्लाम की क्या सोच हैं। क्योंकि अहमद एफ़ंदी, मेरे उस्ताद ने इस्तानबुल में, मुझे शैख़-उल-इस्लाम की लम्बी वज़ाहत दी थी," सैक्रेटरी ने कहा, "फिर तुम आगे बढ़कर उसके बहरूप से बात कर सकते हो।" मैं शैख़-उल-इस्लाम के बहरूप के पास गया और उससे पूछा, "क्या ख़लीफ़ा की इताअत फर्ज़ हैं?" "हाँ, ये वाजिब हैं," उसने जवाब दिया। "ये वाजिब है, क्योंकि अल्लाह और नबी की इताअत फर्ज़ हैं।" जब मैंने पूछा इस बात का कोई सुबूत है, उसने जवाब दिया, क्या तुमने जनाब-ए-अल्लाह की आयत नहीं सुनी, "**अल्लाह, उसके नबी, और अपने में से उलुल अमर की इताअत करो?**" ([1] सूरह निसा, आयतः 591) मैंने कहा, "क्या इसका मतलब ये हैं के अल्लाह ने हमें ख़लीफ़ा यज़ीद की इताअत करने को कहा, जिसने अपनी फौज को मदीने में लूट मार करने की इजाज़त दी थी और जिसने हमारे नबी के नवासे हुसैन को कत्ल किया था, और वलीद जो जो शराब पीता था?" उसका जवाब ये थाः "मेरे बेटे! यज़ीद अमीर-उल-मोमिनीन था अल्लाह की इजाज़त से।

उसने हुसैन की शहारत का हुकूम नहीं दिया था। शियाओं के झूठ में यकीन ना करो! किताबें अच्छे से पढ़ो! उसने एक गलती की थी। फिर उसने इसके लिए अल्लाह से तौबा की (उसने तौबा की और अल्लाह की माफ़ी और रहम की भीक़ माँगी)। वो मदीना-ए मुनव्वरा की लूट मार के लिए सही था। इसलिए के मदीना के लोग बहुत नाफरमान और बेलागाम हो चुके थे। जहाँ तक वलीद की बात हैं: हाँ, वो एक गुनहगार था। खलीफ़ा की नकल करना वाजिब नहीं हैं बल्कि सिर्फ़ शरीअत के मुताबिक अहकामात को मानना वाजिब हैं।" मैंने ये सारे सवालात अपने उस्ताद अहमद एफ़ंदी से भी किए और इंतेहाई कम फर्क वाले मुशाबह जवाब हासिल हुए थे। फिर मैंने सैक्रेटरी से पूछा, "इन बहरूपीयों के बुनयादी मकासिद किया हैं?" उसने कहा, "इस तरीके से हम" (उस्मानी) सलतनत और मुसलमान आलिमों चाहे वो सुन्नी हो या शियाअ उनके ज़हनी वसअतों का अंदाज़ा लगा रहे हैं। हम वो पैमाने तलाश कर रहे हैं जिनकी मदद से हम उनसे लड़ सकें। मिसाल के तौर पर, अगर तुम ये मालूम करलों के दुश्मन की फौज किस तरफ़ से आएगी तो तुम उसके मुताबिक पहले से ही तैयारी कर लोगे, अपनी फौजो को सही जगह पर लगाओगे और इस तरह दुश्मन को हराने में कामयाब हो जाओगे। दूसरी तरफ़, अगर तुम्हें दुश्मनों के हमले की सिमत पता नहीं होगी तो तुम अपनी फौजो को इधर उधर फैला दोगे और आख़िरकार तुम्हें हार का सामना करना पड़ेगा बिल्कुल इसी तरह, अगर तुम वो सुबूत हासिल करलो जो मुसलमान अपने ईमान, अपने मज़हब को सही साबित करने के लिए दरयाफ़्त करेंगे, तो तुम्हारें लिए आसान होगा के तम उन सुबूतों को गलत और नकारने के लिए जवाबी सुबूत हासिल कर सकोगे और इन जवाबी सुबूतों के ज़रिए तुम उनके ईमान को अंदर ही अंदर खोखला कर सकोगे।" फिर उसने मुझे ऊपर बताए गए नामों वाले पाँच नुमाएंदो के ज़रिए फौजी, खज़ाना, तालीम और मज़हबी ऐरिआ में किए गए मसूंबों और मुशाहदात के नतीजे पर मुबनी हज़ार सफहों की एक

किताब दी। उसने कहा, "बराए महरबानी इस किताब को पढ़ो और हमें वापिस करो। " मैं किताब को अपने साथ घर ले गया।

मैंने उसे अपनी तीन हफते की छुट्टियों में पूरी तव्वजो से पढ़ा। किताब बहुत आला किस्म की थी। क्योंकि इसमें मौजूद अहम जवाबात और नाज़ूक मुशाहदात बिल्कुल हकीकी मालूम होते थे। मेरा ख्याल है के इन बहरूपियों के ज़रिए दिए गए जवाब उनके हकीकी अफराद के जवाबात से सत्तर फ़ीसदी से भी ज़्यादा मिलते हुए थे। दरहकीकत, सैक्रेटरी ने कहा था इनके जवाबात **70** फीसदी सही होते हैं। किताब पढ़ लेने के बाद, हुकूमत पर मेरा भरोसा और ज़्यादा हो गया था और मुझे पक्का यकीन था के उसमानिया सल्तनत के ख्त्म करने के मंसूबे एक सदी से भी कम अरसे में पहले से बना लिए गए थे। सैक्रेटरी ने ये भी कहा, "इस तरह के दूसरे कमरों में भी ऐसी ही बहरूपिए हैं जो हमारी मोजूदा नोआबादियों और आगे बनने वाली कोलोनियों में जाएंगे।

जब मैंने सैक्रेटरी से पूछा के इतने बासलाहियत और चुस्त लोग उन्हें कहाँ मिले, उसने जवाब दिया, "सारी दुनिया में हमारे एजेंट लगातार हमें खबरे देते रहते हैं। जैसे के तुम देख रहे हो, ये नुमाएंदे अपने कामों में माहिर हैं। कुदरती तौर पर, अगर तुम्हें एक खास शख्स के ज़रिए तखी गई सारी मालूमात मिल जाएँ तो, तुम इस काबिल हो जाओगे के उसकी तरह सोच सको और उसकी तरह फैसले कर सको जैसे वो करता है। क्योंकि अब तुम उसके कायम मकाम हो। " सैक्रेटरी ने आगे कहा, "इसलिए यही पहला राज़ हैं जिसे मुझे विज़ारत के ज़रिए हुकूम हुआ था तुम्हें बताने के लिए। " मैं तुम्हें दूसरा राज़ एक महीने बाद बताऊँगा, जब तुम एक हज़ार सफ़हो वाली किताब वापिस करोंगे। "मैंने किताब को शुरू से आखिरी तक हिस्सा-हिस्सा पूरे ध्यान से पढ़ा। इसने मुसलमानों के बारे में मेरी जानकारी और बढ़ा दी।

अब मैं जान गया था के वो किस तरह सोचते हैं, उनकी कमज़ोरियाँ क्या थीं, उन्हें किसने ताकतवर बनाया, और किस तरह उनकी ताकतवर खसुसियात को नुकसान का निशाना बनाया जाए। मुसलमानों के कमज़ोर नकात जो इस किताब में है

मंदरजाज़ेल हैं:

1- सुन्नी और शियाओं की लड़ाई, हुकूमत अवाम का झगड़ा ([**1**] ये इल्ज़ाम बिल्कुल गलत हैं। ये अपने पिछले बयान "बादशाह की इताअत फर्ज़ है" की मनाही करता हैं।)

तुर्की-ईरानी झगड़ा; कबाईली झगड़ा; और आलिमों-रियास्तों का झगड़ा।

नोट : ये बेमेल तोहमत है। उस्मान ग़ाज़ी (पहला उस्मान बादशाह) की लिखी हुई वसीयत और कीमत की वाज़ेह मिसाल है जो उस्मानिया इंतेज़ामिया ने आलिमों के लिए रखी हैं। सारे बादशाह आलिमों को आला रूतबे देते थे। जब मौलाना ख़ालीद उल बग़दादी के हासिद दुश्मनों ने महमूद ख़ान **11** के सामने तोहमत लगाकर मलामत किया और मुतालबा किया के उन्हें फाँसी दे देनी चाहिए, तो सुल्तान ने ये मश्हूर जवाब दिया: "आलिम रियास्त के लिए किसी भी तरह नुकसान नहीं हो सकते।" उस्मानिया सुल्तान हर आलिम को एक घर, खाने पीने का सामान, और आला तंख्वाह देते थे।)

2- बहुत कम अपवादों के साथ, मुसलमान लाइल्म और जाहिल हैं।

नोट : उसमानिया आलिमों के ज़रिए लिखी हुई मज़हबी, अखलाकियात, ईमान और साईंसी किताबें सारे आलम में मशहूर हैं। खेती करने

वाले लोग, जो सबसे कम इल्म वाले लोग समझे जाते हैं, वो भी अपने ईमान, इबादत, और सख़ाफुत के बारे में बहुत अच्छी तरह जानते थे। सारे गाँव में भी मस्ज़िदें, स्कूल, और मदरसे थे। इन जगहों पर गाँव वालों को मज़हबी और दुनियावीं तालीमात पढ़ाई और लिखाई जाती थी। गाँव में औरतों को पता था के कुरआन-अल-करीम किस तरह पढ़ते हैं। ज़्यादातर आलिम और औलिया गाँव में पले बढ़े और तालीम हासिल की।

3- रूहानियत, तालीमात, और शऊर की कमी।

नोट : उसमानिया मुसलमान रूहानी तौर पर मज़बूत थे। लोग शहादत पाने के लिए जिहाद के लिए दौड़ते थे। रोज़ाना की (पाँच) नमाज़ों की इबादत के बाद और हर जुमे के खुतबे के दौरान मज़हबी आलिम खलीफ़ा और रियास्त पर सलामती/खेरो बरकत भेजते थे, और पूरी जमाअत "आमीन" कहती थी। दूसरी तरफ़, ईसाई गाँव वाले, ज़्यादातर जाहिल होते हैं, पूरे तौर पर अपने ईमान और दुनियावी तालीम से नावाकिफ़, और इसलिए पादरियों के वअज़ को कामयबी की सीढ़ी समझा जाता है और वो जो मज़हब के नाम पर झूठ और तोहमात घड़ते हैं उसे सच समझा जाता हैं। वो लोग जानवरों के बेहिस रेवड़ की तरह हैं। वो दुनियावी कारोबार से बिल्कुल परे और आखिरत के मामलात में बिल्कुल ग़रक रहते हैं।

नोट: **1** ईसाइयत के बरअकस, इस्लाम मज़हब को दुनियांवी मामलात से अलग नहीं करता ।किसी हद तक महू रखना भी एक इबादत का काम है। हमारे नबी ने फरमाया, "**दुनिया के लिए ऐसे काम करो जैसे के तुम कभी नहीं मरोगे, और आखिरत के लिए ऐसे काम करो जैसे के तुम कल ही मर जाओगे।**"

5- बादशाह ज़ालिम तानशाह हैं।

([**2**] बादशाह ने लोगों पर दबाओ डाला ताकि वो शरीअत के उसूलों पे अमल कर सकें। वो योरोपी बादशाहों की तरह ज़ालिमाना इकदामात नहीं कर सकते।)

6- सड़के गैर महफूज़ हैं, परिवहन और सफ़र बहुत कम होते हैं।

([**3**] रास्ते बहुत महफूज़ थे के अगर कोई मुसलमान बोसनिया से मक्काह जितना रास्ता सफर करना चाहे तो वो आराम से और बग़ैर किसी किराए के ये रास्ता सफ़र कर सकता था, रास्ते में आने वाले गाँव में रूकना, खाना और पीना भी दस्तयाब था, और ज़्यादातर गाँव वाले उन्हें तौहफ़े भी देते थे।

7- वबाई बीमारियों जैसे के हैज़ा, और ताऊन के खिलाफ़ कोई तदाबीर नहीं की जातीं हर साल जिसकी वजह से लाखों लोग मर जातें; सफ़ाई के पूरे तौर पर नज़रअंदाज़ किया जाता।

([**4**] हर तरफ वहाँ पर अस्पताल और पनाहगाहें मौजूद थीं। यहाँ तक के नपोलियन का इलाज भी उसमानियों ने किया था। सारे मुसलमान इस अहदीस-ए-शरीफ़ को मानते हैं, "वो जो ईमान रखता हैं वो साफ़ होगा। "

8- शहर खंड़र हैं, और पानी की सपलाई का कोई इंतेज़ाम नहीं।

([**5**] ये बोहतान तो जवाब देने लायक भी नहीं। दिल्ली का सुल्तान, फिरोज़ शाह **790** [सी.ई. **1388**] में मरा। उसके हुकूम से बनाई गई **240km** चौड़ी नहर से बाग़ात और खेतो को पानी दिया जाता था वो ब्रिटिश हमलों की वजह से ही बंजर ज़मीन में तबदील हुई। उस्मानिया फने तामीर के बकाया आज भी सय्याहों की आँखों को खैरा कर देती हैं।

9- इंतेज़ामिया/हुकूमत बाग़ियों और ग़द्दारों से निपटने के काबिल नहीं, आम अफ़रात तफ़रा हैं, कुरआन के उसूल, जिन पर वो बहुत फख्र करते हैं, वो कभी अमल नहीं किए गए।

([6] उन्होंने उसमानिया सुल्तानों को फ्रेंच जैनरल की तरह गलत समझा जिन्हें अपने बादशाहों के गंद को जालों में डालने का ईनाम दिया गया।)

10- मआशी गिरावट, गरीबी, और पस्ती आती चली जा रही हैं।

11- वहाँ पर कोई मुंज़ुम फौज नहीं हैं, नहीं पूरे हथियार हैं; जो हथियार हैं वो पूराने और खस्ता हैं।[क्या वो ओरहन ग़ाज़ी, जिसने (उस्मानिया) ताज **726** (सी.ई. **1326**) में हासिल किया, लड़ीरम (the thunderbolt) बाएज़ीद खान की नेदाग़ फौज, जिसने सलिबियों की बड़ी फौज को निगुबुलु **799** (सी.ई. **1399**) में तबाह किया था उन्हें नहीं जानते?]

12- औरतों के हुकूम की खिलाफ़त वरज़ी।

नोट : **1** उस वक्त जब अंग्रेज़ लोग फन, अल्लाह और औरतों के हुकूम से ग़फ़िल थे, उस्मानियों ने इन्हें इन नज़रयात से आगाह कराया बहुत पकिज़ा तरीके से। क्या वो इतनी हिम्मत रखते हैं के इस बात से इंकार कर सकें के Swedish और फ्रांस के बादशाहों ने उस्मानियों से मदद मांगी थी?)

13- माहौलियाई सहत और सफ़ाई में कमी।

([2] गलियाँ बहुत साफ़ सुथरी थी। बल्कि गलियों और सड़को पर थूक को साफ़ करने के लिए एक मुहकमा कायम किया गया था। मुसलमानों की कमज़ोरियों की पैरागराफ़ की शक्ल में ऊपर बताई गई बातों की तॊसिह के बाद किताब इस बात की नसीहत करती थी के मुसलमानों को उनके इस्लाम के

बरतर ईमान से उनको माददी और रूहानी तौर पर ग़ाफ़िल रखा जाए। फिर ये मंदरजाज़ेल मालूमात इस्लाम के बारे में देती थीः

1- इस्लाम एकता और तआवन का हुकूम देता हैं और तफ़रके की मनाही करता है। ये कुरआन में हुकूम हैं, **"अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थामें रखो।"** ([3] सूरह आल-ए-इमरान, आयतः 103)।

2- इस्लाम तालीमयाफ़्ता और बाख़बर रहने का हुकूम देता हैं। कुरआन में बयान किया गया हैं, **"ज़मीन पर घूमो फिरो।"** ([4] आल-ए-इमरान, आयतः 137।)

3- इस्लाम इल्म हासिल करने का हुकूम देता हैं। एक अहदीस से बयान हैं, **"इल्म हासिल करना हर मुसलमान मर्द और औरत पर फर्ज़ है।"**

4- इस्लाम दुनिया के लिए काम करने की भी हिदायत करता हैं। ये कुरआन में वाज़ेह हैं, **"उन में से कुछः ए हमारे अल्लाह! जो कुछ भी इस दुनिया और आखिरत में हमारे लिए दिलकश हैं हमें अता फरमाया।** ([6] सूरह बकरा, आयतः 201)।

5- इस्लाम सलाह करने का हुकूम देता हैं। ये कुरआन में फरमान हैं, **"वो सारे काम वाहमी मश्वरे से करते हैं।"** ([6] सूरह शूरा, आयतः 38।)

6- इस्लाम सड़को के बनाने की हिदायत करता है। कुरआन में फरमान हैं। **"ज़मीन पर चलो।"** ([7] मुल्कः 15)

7- इस्लाम मुसलमानों को अपनी सहत बनाने का हुकूम देता है। ये अहदीस में बयान हैं, **"इल्म की बुनियाद चार हिस्सों पर हैंः।) ईमान की हिफाज़त के लिए फिकह का इल्म; 2) सहत की हिफाज़त के लिए तिब्ब का**

इल्म; 3) ज़बान की हिफ़ाज़त के लिए सर्फ और नहूब (अरबी ग्रामर) का इल्म; 4) वक्त के बारे में खबर रखने के लिए फलकियात का इल्म।"

8- इस्लाम तरक्की का हुकूम देता हैं। कुरआन में बयान हैं, "**अल्लाह ने ज़मीन पर हर चीज़ तुम्हारें लिए पैदा की है।**" ([1] सूरह बकरा, आयतः 29)।

9- इस्लाम हसने तरतीब पर ज़ोर देता हैं। कुरआन में फरमाया हैं, "**हर चीज़ की बुनियाद गिनने, बाकाएदगी पर मुबनी हैं।**" ([2] हिजरः 19)।

10- इस्लाम मज़बूत मआशियत का हुकूम देता है। ये अहदीस में बयान हैं, "**अपनी दुनिया के लिए ऐसे काम करो के तुम कभी नहीं मरोगे। और अपनी आखिरत के लिए ऐसे काम करो के जैसे तुम कल ही मर जाओगे।**"

11- इस्लाम एक ताकतवर असलहों के साथ मसलह फौज को कायम करने का हुकूम देता हैं। कुरआन में फरमान हैं, "**उनके खिलाफ जितनी फौजे तैयार कर सकते हो करलो।**" ([3] सूरह इंफाल, आयतः 60)।

12- इस्लाम औरतों के हुकूम का ध्यान और उन्हें अहमियत देने का हुकूम देता हैं। कुरआन में ये बयान किया गया है, "**जैसे के मर्दो को कानूनी (हुकूमत) हासिल हैं औरतों पर, ऐसे ही औरतों को भी मर्दो पर हुकूक हासिल हैं।**" ([4] सूरह बक़रा, आयतः 228)।

13- इस्लाम सफाई का हुकूम देता हैं। ये एक अहदीस में बयान हैं," **सफाई ईमान से आती हैं।**" किताब मंदराजाज़ेल कुव्वती वसाईल में इंहेतात और बिगाड़ पैदा करने की हिदायत करती हैंः

1- इस्लाम नस्ली, इंसानी, सखाफती, रिवाजी और कौमी हसद की नफ़ी करता है।

2- सूद, हद से ज़्यादा नफ़अ, ज़िना, शराबें और ख़िंज़िर का गौश्त ममनुअ हैं।

3- मुसलमान अपने आलिमों (मज़हबी आलिमों में) में बहुत गहरा लगाओ रखते हैं।

4- ज़्यादातर सुन्नी मुसलमान खलीफ़ा को नबी का नुमाएंदा मानते हैं। वो मानते हैं के जितनी इज़्ज़त अल्लाह और नबी को दी जाती हैं उसी तरह इनको देना फर्ज़ हैं।

5- जिहाद फर्ज़ है।

6- शियाअ मुसलमानों के मुताबिक, सारे ग़ैर-मुसलिम और सुन्नी गंदे लोग हैं।

7- सारे मुसलमानों का ये मानना हैं के इस्लाम ही वाहिद सच्चा मज़हब हैं।

8- ज़्यादातर मुसलमानों का ये मानना हैं के यहूदियों और ईसाइयों को अरबी जज़ीरे से बाहर निकालना फर्ज़ हैं।

9- वो अपनी इबादत, (जैसे के नमाज़, रोज़ा, हज...), बहुत खुबसूरत तरीके से अदा करते हैं।

10- शियाअ मुसलमानों का मानना हैं के मुसलमान मुल्कों में गिरजा घरों को बनाना हराम (ममनुअ) हैं।

11- मुसलमान इस्लामी ईमान के उसूलों पर मज़बूती से कायम हैं।

12- शियाअ ये मानते हैं के ख्रमस-यानी जंग में हासिल होने वाला सामान का पाँचवा हिस्सा आलिमों को देना फर्ज़ है।

13- मुसलमान अपने बच्चों की तरबीयत ऐसी तालीम से करते हैं के वो कभी भी अपने आवा ओ अजदाद के तकलीद किए गए रास्ते से नहीं हार सकते।

14- मुसलमान औरतें अपने आपको इस तरीके से ढाँपती हैं के किसी भी तरीके से उनके साथ कोई शरारत नहीं की जा सकती।

15- मुसलमान जमाअत में नमाज़ अदा करते हैं, जो उन्हें रोज़ाना पाँच बार एक साथ मिलाती हैं।

16- क्योंकि नबी की कब्र और अली और दूसरे पाक मुसलमानों की कब्रें मुकददस हैं, तो इन जगहों पर जमा होते हैं।

17- नबी की नसल से [जिन्हें सय्यद और शरीफ़ बुलाते हैं] बहुत से लोग मौजूद हैं; ये लोग नबी की याद दिलाते हैं और मुसलमानों की आँखो में आप हमेशा ज़िंदा रहते हैं।

18- जब मुसलमान इकठठे होते हैं, मुबलिंग/आलिम उनके ईमान को मज़बूत करते हैं और उन्हें नेक काम करने की तरफ़ माएल करते हैं।

19- अमर-ए-बि-ल-मारूफ़ [परहेज़गारी की सलाह] और नहीं-ए-अल-ल-मुंकर [गलत काम से मना करना] करना फर्ज़ हैं।

20- मुस्लिम आबादी को बढ़ाने के लिए एक से ज़्यादा शादी करना सुन्नत हैं।

21- एक मुसलमान के लिए एक शख्स को मुसलमान बनाना उससे ज़्यादा बहतर हैं के पूरी दुनिया पर कब्ज़ा करना।

22- एक अहदीस मुसलमानों में बहुत मश्हूर हैं, **"अगर एक शख्स कोई नेक रास्ता खोलेगा तो न सिर्फ खुद उस रास्ते पर चलने का सवाब हासिल करेगा बल्कि बाद में जो लोग उस रास्ते पर चलेंगे उसका भी सवाब हासिल करेगा।"**

23- मुसलमान कुरआन और अहदीस को बहुत ताअज़ीम से रखते हैं। उनका मानना हैं के इनकी इताअत ही जन्नत हासिल करने का ज़रिया हैं।

किताब इस बात की भी नसीहत करती थी के मुसलमानों के मज़बूत अमाल के पहलूओं को बिगाड़ा जाए और उनकी कमज़ोरियों को उजागर किया जाए, और इसने इन तरीकों को पूरा करने के लिर ये इकदामात किए।

उसने उनकी कमज़ोरियों को आम करने के लिए मंदरजाज़ेल इकदामात की सलाह दीः

1- लड़ने वाले ग्रुपों के बीच बहस कायम करना उनमें दुश्मनी ड़ालना, गलतफ़हमियों को पैदा किया जाए, और बहस को ओर बढ़ाने के लिए ऐसा इल्म फैलाया जाए।

2- स्कूलों के कायम और इशाअत को रोका जाए, और अदब को जला दिया जाए, जब भी मुमकिन हो। इस बात को यकीनी बनाया जाए के मुसलमान बच्वें जाहिल रहें ओर इस मकसद के लिए उन्होंने मज़हबी इंतेज़ामिया पर बहुत सारी तोहमतें लगाई और इस तरह मुसलमान वालदेन को अपने बच्वों को स्कूल भेजने से बाज़ रखा (अंग्रेज़ो का ये तरीका इस्लाम के लिए बहुत नुकसानदह रहा।)

उनके सामने जन्नत की तारीफ़ की जाए और उन्हें इस बात पर आमादा किया जाए। के उन्हें दुनियावी ज़िंदगी के लिए काम करने की ज़रूरत नहीं। तसव्वुफ़ का हलका बढ़ा किया जाए। **जुहद** की किताबें, जैसे के **अहसा-उल-उल्लूम-इद-दीन** ग़ज़ाली के ज़रिए, **मसनबी** मोलाना के ज़रिए और मुहिउददीन अरबी के ज़रिए लिखी बहुत सारी किताबें, ये पढ़ने की सलाह देके उन्हें ग़फ़लत की हालत में रखा जाए।

नोट ः[1] **जुहद**, जो तसव्वुफ़ की किताबों के ज़रिए हुकूम किया गया, इसका मतलब ये नहीं के दुनियावी कामों को रोक दिया जाए। इसका मतलब हैं दुनिया का रसिया न होना। दूसरे लफ़ज़ो में, दुनिया के लिए काम करना, दुनियावी ज़रूरतों को कमाना, और उन्हें शरीअत के मुताबिक इस्तेमाल करना वो उतना ही सवाब दिलाएगा जितना के दूसरे इबादत के कामों को करके।)

5- हाकिमों को मंदरजाज़ेल चापलूसियों के ज़रिए जुल्म और तानाशाही के लिए उकसानाः तुम ज़मीन पर अल्लाह की परछाई हो। दरहकीकत, अबू बकर, उमर, उस्मान, अली, अमबी और अब्बासी सब के सब ताकत और तलवार के ज़ोर पर हुकूमत में आए थे, ओर उनमें से हर एक सुल्तान बना। मिसाल के तौर पर, अबू बकर ने उमर की तलवार के बल पर ताकत हासिल की थी और जो उनकी बात नहीं मान रहे थे उनके घरों को आग लगाकर, जैसे के फातिमा के घर को। फिर उमय्यद के वक्त में हुकूमत को बाय की तरफ से विसारत में तबदील कर दिया गया। अब्बासियों के साथ भी यही मामला हुआ। ये तमाम बातें इस बात का सबूत हैं के इस्लामी हुकूमत तानशाही की एक शक्ल है।

नोट ः[2] अहदीस-ए-शरीफ में इस बात के इशारे हैं के अबू बकर, उमर उस्मान और अली खलीफ़ा बनेंगे। ताहम इनके औकात के बारे में कोई

वाज़ेह बयान नहीं मिलता। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये मामला अपने सहाबा की मरज़ी पर छोड़ा। सहाब तीन मुख्तलिफ़ इजतिहाद रखते थे खलीफ़ा को चुनने के लिए। खिलाफ़त कोई जाएदाद नहीं के किसी शख्स के रिश्तेदारों की वारिस हो। अबू बकर जो सबसे पहले मुसलमान शख्स हुए, जिन्होंने दूसरों को ईमान वाला बनाया, जिनके पीछे हमारे नबी ने नमाज़ अदा की ये कहकर के वो इमाम बनकर नमाज़ अदा कराएँ, और जिनके साथ नबी ने (मदीना को) हिजरत की, सबसे बहतरीन उम्मीदवार थे। कुछ (सहाबा) हज़रत अली के घर गए। उनमें से एक जिनका नाम अबू सुफ़यान था ने कहा, "अपना हाथ ऊपर उठाओं! मैं तुम्हारें हाथ पर बैअत करना चाहता हूँ। अगर तुम चाहो तो मैं ये सारी जगह घुड़ सवार और मसलह फौन से भर दूँ।" हज़रत अली ने मना कर दिया, जवाब दिया, "क्या तुम मुसलमानों को ग्रप में तोड़ना चाहते हो? मेरे घर में रहने से ये मतलब नहीं के मैं खलीफ़ा बनना चाहता हूँ। रसूलुल्लाह से महरूमी मुझे सदमा पहुँचाएगी। मैं पागलों सा महसूस कर रहा हूँ। वो मस्जिद चले गए। सबकी मौजूदगी में उन्होंने अबू बकर से बैअत की। इस पर अबु बकर ने कहा, "मैं खलीफ़ा नहीं बनना चाहता। गलत चीज़ से बचाने के लिए मैं इसे मरज़ी से कुबुल करता हूँ।" अली ने जवाब दिया, "तुम खलीफ़ा बनने के ज़्यादा लायक हो।" ये बयान हज़रत अली का अबू बकर की तारीफ़ में हमारी (तुर्की) किताब **सआदत-ए-एबादत** में भी रकम है। हज़रत उमर हज़रत अली के साथ उनके घर चले गए। हज़रत अली ने कहा, "रसूलुल्लाह के बाद, अबू बकर और उमर इस उम्मत (मुसलमानों) में सबसे ऊँचे हैं।" लोग जो शियाओं के झूठ और तोहमतों पर यकीन रखते हैं वो आज मुसलमानों की इस खराब हालत के ज़िम्मेदार हैं। अभी तक अंग्रेज़ इस तरग़ीव को बढ़ाने में लगे हुए हैं।) और उमर अबू बकर की सिफ़ारिश पर खलीफ़ा बन गए। दूसरी तरफ। उमर के हुकूम से उस्मान सदर बन गए। अली के लिए, वो लुटेरों के ज़रिए इंतेखाब करने पर रियास्त के सरबराह बने। मअविया ने तलवार के ज़रिए ताकत हासिल की।

नोट : [1]हज़रत मआविया हज़रत हसन की मशरूत बैअत के बाद खलीफ़ा बने। बराए महरबानी **documints of the right word** किताब को पढ़िए।)

6- कानून से इंसानों के कत्ल के लिए सज़ाए मौत खत्म करदी जाए। [इंसानों के कत्ल और अकाज़नी को रोकने का वाहिद ज़रिया सज़ाए मौत हैं। गद्दारी और ड़ाकज़ानी सजाए मौत के बग़ैर रोके नहीं जा सकती।) रहज़नों और डाकूओं को सजा देने में इंतेज़ामिया को रोका जाए। उनको मसलह करके और मदद करके सफर को गैरमहफ़ूज़ बनाया जाए।

7- हम मंदरजाज़ेल मंसूबे के ज़रिए उनको ग़ैर सहतमंद ज़िदगी गुज़रवा सकते हैः हर चीज़ अल्लाह के पहले से तरतीब दिए गए मुकदद पर मुनहसिद हैं। तिब्बी इलाज सहत को बहाल करने में कोइ किरदार अदा नही कर सकता। क्या अल्लाह ने कुरआन में नहीं कहा, **"मेरा रब (अल्लाह) मुझे खिलाता और पिलाता है। जब मैं बीमार होता हूँ वो मेरा इलाज करता है। वो अकेला ही मुझे मारेगा और फिर दोबारा मुझे ज़िंदा करेगा।"** ([2] सूरह शूरा, आयतः **79-80-81**)। फिर, न तो कोई शख्स, अपनी कोशिश से सहतमंद हो सकता हैं और न ही अल्लाह की मरज़ी के बग़ैर मौत से बच सकता है।

[3] अंग्रेज़ी एजेंटो ने मुसलमानों को गुमराह करने के लिए आयत-ए-करीमा और अहदीस-ए शरीफ के मआनी मसख़ कर दिए। (नबी के ज़रिए कुछ किया गया, सलाह, हुकूम, पसंद किया गया सुन्नत है) के तिब्बी इलाज कराया जाए। अल्लाह तआला ने इलाज में शिफ़ा का असर पैदा किया है। हमारे नबी ने दवाई लेने का हुकूम दिया है। अल्लाह तआला, हर चीज़ का बनाने वाला है, शिफ़ा देने वाला है। ताहम उसने असहाब का एक कानून बनाया है और हमें हुकूम दिया है के इन असबाब को इस्तेमाल करके इस कानून की इताअत करें हमें सख्त मेहनत करनी चाहिए। ये कहना, **"वो मुझे**

शिफ़ा देता है,” का मतलब हैं, “वो मुझे ज़राए देता है जो शिफ़ा का सबब बनता है।” ये एक अहकाम (इस्लाम का) है के असबाब जानने के लिए तहकीक की जाए। हमारे नबी ने फरमाया, “**मर्द और औरतों दोनो के लिए पढ़ना और इल्म हासिल करना फर्ज़ है।**” और ये भी इरशाद फरमाया, “**अल्लाह तआला काम करके कमाने वालों को पसंद करता है।**”

जुल्म को बढ़ाने के लिए मंदरजाज़ेल बयानत दिए जाएँः इस्लाम इबादत का मज़हब है। इस्मे मुल्की मामलात व खलिफाओं के कोई वज़ीर या कानून नहीं थे।

नोट ः[1] इबादत सिर्फ़ नमाज़, ज़कात, रोज़ा और हज पर मुबनी नहीं हैं बल्कि दुनियावी काम करना भी इबादत हैं क्योंकि अल्लाह तआला ने इसका हुकूम दिया हैं लेकिन शरिअत के मुताबिक करने चाहिए। कारआमद चीज़ों के लिए काम करना सवाब (आखिरत में ईनाम पाना) हैं।

मआशी ज़वाल अब तक की फैलाई हुई मिज़र नुकसानदह सरगरमियों का नतीजा हैं। हमने इस पस्ती में मज़ीद इज़ाफ़ा कर दिया उनकी फसलों को उजाड़ इज़ाफ़ा कर दिया, तिजारती जहाज़ डूबोकर, मार्किट वाली जगहों को आग लगाकर, बांधो और बैराजों को खत्म करके इस तरह खेती बाढ़ी के इलाकों और तिजारती मरकज़ों को पानी में कर दिया जाए और आखिरकार उनका पीने का पानी का निज़ाम भी गंदा कर दिया जाए। ([2] अंग्रेज़ों का ये जुल्म और सफ़ाकी देंखे। ये अंग्रेज़ अपने आपको मोहज़्ज़ब करार देते हैं और इंसानी हुकूम का ज़मला बार बार इस्तेमाल करते हैं।

सियास्तदानों को ऐसे मशग़लो जैसे के (जिन्स, खेल) शराब, जुआ, बदउनवानी का आदी बना दिया जाए जो बग़ावत और सरकशी का सबब बने, और मुल्की/रियास्त की दौलत को अपनी ज़ाती ज़रूरत पर खर्च करने का

बाइस बनें। इस सिलसिलें में सरकारी मुलाज़मीन की होसला अफ़ज़ाई की जाए। के वो इस तरीके के काम करें और जो हमारे लिए इस तरीके पर काम करें उन्हें इनाम दिया जाए। फिर किताब ने मंदरजाज़ेल सलाह शामिल कीः इस काम पर लगे हुए अंग्रेज़ जासूसों की खुले आम या खुफिया पूरी हिफाज़त की जाए और मुसलमानों के हाथ पकड़े जाने वाले जासूसों को बचाने के लिए खर्चे में कोई कमी नहीं की जानी चाहिए।

हर तरह के सूद को आम किया जाए। इसलिए के सूद न सिर्फ कौमी मआशियत को बरबाद करता है बल्कि मुसलमानों को कुरआन के उसूलों की नाफ़रमानी का आदी बनाएगा। एक बार अगर एक शख्स किसी कानून की दफ़अ की खिलाफ़ बरज़ी तो उसके लिए दूसरी दफ़आत की ना फरमानी करना काफ़ी आसान हो जाएगा। उन्हें बताना चाहिए के "सूद जब मुक्र्कब/मिला जुला हो तो हराम हैं, **"सूद को मुक्र्कब में मत लो।** ([**3**] सूरह आल-ए-इकराम, आयतः **130**)। इसलिए, सूद की हर किस्म हराम नहीं हैं।" [कर्ज़े की वापसी का वक्त पहले से हरगिज़ मुर्करर नहीं होना चाहिए। कोई भी ज़ाइद अदाएगी पर राज़ी होना (कर्ज़ा देने के वक्त) सूद हैं। सूद की ये किस्म गुनाहे कबीरा हैं चाहे इज़ाफ़ी अदाएगी की रकम सिर्फ एक दरहम ही क्यों न हों। अगर ये मुर्करर कर लिया जाए के कर्ज़ की रकम (उधार ली गई) एक खास मुददत तक अदा करदी जाएगी तो हन्फ़ी मसलक के मुताबिक ये सूद हैं। उधार की खरीद और फरोख्त में अदाएगी का वक्त लाज़मन मुर्करर कर लेना चाहिए; ताहम अगर मकरूज़ मुर्करर वक्त में आएगी न कर सकें और वक्त ज़्यादा हो चुका हो और उस पर एक इजाफ़ी अदाएगी मुर्करर कर दी जाए तो इस किस्म का सूद **मदाअफ** कहलाता है। ऊपर बताई आयत-ए-करीमा तिजारत में इस किस्म के सूद को बयान करती हैं।] आलिमों के खिलाफ़ खबासत के झूठे इलज़ामात फैलाएँ जाएँ और उनके खिलाफ़ गलीज़ तौहमतें लगाकर मुसलमानों के उनसे बदज़न किया जाए। हम अपने कुछ जासूसों को उनका भेस देंगे। फिर

उनसे गलीज़ और हकीर हरकतें करवाएंगे। इस तरह वो आलिमों के बारे में उलझन का शिकार हो जाएंगे और उनकी तरफ़ शक की निगाह से देखेंगे। ये बहुत ज़रूरी हैं के इन जासूसों को अल-अज़हर, इस्तानबुल, नजफ़ और करबला भेजा जाए। मुसलमानों को आलिमों से बेगाना करने के लिए हमें स्कूल और कॉलेजो को खोलना चाहिए। इन स्कूलों में by zantine, रोमी और आरमिनयाई बच्चों को पढ़ाया जाए और उन्हें मुसलमानों के दुश्मनों के तौर पर उठाया जाए। जबकि मुसलमान बच्चों के लिए; हम उन्हें ये मुजरमाना अहसास देंगे के उनके दादा परदादा जाहिल थे। इन बच्चों को खलीफ़ाओं, आलिमों और मुदब्बिरों का मुखालिफ़ बनाने के लिए, हमें उनकों उनकी गलतियों के बारे में बताना होगा और उन्हें कायल करना होगा के वो अपनी ऐशी इशरत में मसरूफ़ थे, और ये के खलीफ़ा अपना वक्त लोंडियो के साथ हँसी मज़ाक में गुज़ारते थे, और उन्होंने अपने किसी भी अमल में नबी की इताअत नहीं की।

ये तोहमत लगाने के लिए के इस्लाम औरतों से नफ़रत करता हे इस आयत का हवाला हम देंगे, "**मर्द औरतों पर हुकूमरान हैं,**" [1] सूरह निसा, आयतः **34**)। और इस अहदीस का भी हवाला दिया जाएगा, "**औरतें मजमूई तौर पर बुराई हैं।**"

नोट ः([2] एक अहदीस में बयान किया गया हैं के, "**एक औरत** (बीवी) **जो शरिअत की ताबेदारी करे वो जन्नत की एक नएमत में से हैं। एक औरत जो अपने जज़बात को माने और शरियत की नाफरमानी करे वो बुराई है।**" एक गरीब औरत के बाप को उसकी कफ़ालत करनी होगी, चाहे वो ग़ैर शादी शुदा हो या बेवा। अगर वो ऐसा नहीं करता, तो उसे कैद में डाला जाए। अगर उसका बाप नहीं हैं, या उसका बाप (इतना ज़्यादा) गरीब़ हैं (उसकी कफ़ालत के लिए), तो उसके महरम रिश्तेदारों को उसका खयाल रखना होगा। अगर उसके ऐसे कोई रिश्तेदार नहीं हैं, तो हुकूमत को उसके लिए वज़ीफ़ा मुर्करर करना होगा। एक मुसलमान औरत को अपनी रोज़ी कमाने

के लिए कभी भी काम नहीं करना होगा। इस्लामी मज़हब ने मर्द पे उसकी औरत की ज़रूरयात की पूरी ज़िम्मेदारी डाली हैं। इस भारी बोझ के बदले में मर्द को बाप दादा की विरासत के इंतेज़ाम की पूरी ज़िम्मेदारी दी गई हैं; ताहम, औरतों की तरफ़ एक और इनाअत की गई है, अल्लाह तआला ने हुकूम दिया है के उनके भाइयों के ज़रिए विरासत की जाएदाद में उनको आधा हिस्सा दिया जाए। एक शोहर अपनी बीवी को घर में या घर के बाहर काम करने पर मजबूर नहीं कर सकता। अगर एक औरत काम करना चाहती है, तो वो ऐसा अपने शोहर की इजाज़त से कर सकती है, इस शर्त के साथ के वो पूरी परदे में हो और जहाँ वो काम कर रही हैं वहाँ कोई मर्द न हो; और इसमें सारी कमाई उस औरत की होगी। कोई भी एक औरत को मजबूर नहीं कर सकता के वो अपनी इस तरह कमाई या जाएदाद जो विरासत में मिली हैं या महर (निकाह के तहत मुस्तहिक) को छोड़ दे। न ही उसे मजबूर किया जा सकता के वो इस कमाई, महर या विरासत को अपनी या अपने बच्चों की ज़रूरयात या अपने घर की किसी भी ज़रूरयात पर खर्च करे। शोहर पर फर्ज़ है के वो इस किस्म की ज़रूरयात पूरी करे। आज के इश्तराकी निज़ाम में औरतों और मर्दो को खाने के लिए, जानवरों की तरह भारी से भारी काम करने पड़ते हैं। ईसाई मल्कों, आज़ाद दुनिया के मुल्क, और कुछ अरबी मुल्कों में जिन्हें मुस्लिम मुमालिक कहा जाता है , खेतों में, तिजारती कारेबार में "ज़िंदगी यकसाँ के लिए"सच के अभास पे काम कर रहीं हैं। जैसा के अकसर अखबारात में छपता हैं के, वो इनमें से अकसर शादीशुदा होने पर अफसोस करते हैं और इसी वजह से अदालतों तलाक की अरज़ियों की फाइलों से भारी रहती हैं। अल्लाह के नबी के मुबारक मुँह से निकलने वाले जुमले तीन किस्म के हैं: पहली किस्म उन जुमलों पर मुश्तमिल हैं जो अल्लाह तआला की तरफ़ से मुरकब और अजज़ा की सूरतों में आती हैं। ये जुमले **आयत-ए-करीमा** कहलाते हैं, जो मुकम्मल तौर पर जमा होकर **कुरआन अल-करीम** बनाते हैं। ये जुमला, **"तुम्हारे पास आने वाली हर कारआमद और अच्छी चीज़ अल्लाह तआला का फरमान हैं**

और उसी के ज़रिए भेजी जाती हैं। हर बुरी और नुकसानदह चीज़ की खुवाहिश तुम्हारा नफ़स करती है। ये सारी चीज़ें अल्लाह तआला के ज़रिए तखलीक की गई और भेजी गई" ये सूरह **निसा** की 78वीं आयत है। दूसरी किस्म में वो जुमले शामिल हैं जिनके अलफ़ाज़ तो हमारे नबी के हैं जबकि उनके मआनी अल्लाह तआला की तरफ़ से इलहाम किए गए हैं। इन जुमलों को **अहदीस-ए-कुदसी** कहते हैं। ये जुमला, "**अपने नफ़स की तरफ मुखालिफ रहो। इसलिए के ये मेरी दुश्मन है,**" ये एक अहदीस-ए-कुदसी है। तीसरी किस्म उन जुमलों की हैं जो अलफ़ाज़ और मआनी दोनों में हमारे नबी के हैं। उनको **अहदीस-ए-शरीफ़** कहते हैं। ये जुमला, "**एक औरत जो शरिअत की फरमाबरदारी करे जन्नत की नएमतों में से एक है। एक औरत जो अपने नफ़स की तकलीद करे बुराई है,**" ये अहदीस-ए-शरीफ़ है। हज़रत मुहिइददी-ए-अरबी ने अपनी किताब **मुसामरात** की पहली जिल्द में इस अहदीस-ए-शरीफ़ की तशरीह की है। अंग्रेज़ी जासूस इस अहदीस का पहला हिस्सा छुपा कर सिर्फ़ बाद का हिस्सा बयान कर रहा हे। अगर दुनिया की सारी औरतें इस अहमियत, सुकून, तहफ़ूज़, आज़ादी और तलाक के हक से आगाह हो जाएँ जो इस्लाम ने उन पर इनायत की हैं तो वो सब फौरन मुसलमान बन जाएँगी और पूरी दुनिया में इस्लाम की इशाअत के लिए जददो जहद करेंगी। ये शर्म की बात हैं के वो अभी तक इन हकाईक से वाकिफ़ नहीं हैं। अल्लाह तआला से दुआ है के वो तमाम इंसानियत को ऐसी किस्मत से सरफराज़ करे जिस के ज़रिए वो इस्लाम के वसीरत अफ़रोज़ रास्ते को सही तरीके से सीख सकें।)

गंदगी पानी की कमी का नतीजा है। इसलिए मुख्तलिफ मंसूबो के तहत पानी की फराहमी को रोका जाए। किताब मुसलमानों के मज़बूत पलूओं को तबाह करने के लिए मंदरजाज़ेल इकदामात तजवीज़ करती हैं: मुसलमानों को नसलों और कौमियत जैसी जारहाना वतन परस्त रस्मों की तरफ़ लगाया

जाए ताकि उनका ध्यान ग़ैर इस्लामी हिरोइस्म/herosims की तरफ़ हो जाए। मिस्र में फ़िरओन का ज़माना, इरान में मजूसी, ईराक में babylonion ज़माना, उसमानिया में अतीला और चंगेज़ का [वहशतों] ज़माना। [उन्होने इस ज़माने में तवील फहरिस्त दी थी।] मदरंजाज़ेल बुराइयाँ खुफ़िया तौर पर या खुले आम फैलाई जाएँः नशीली शराबें, जुआ, ज़िना, खिंज़िर का गौश्त, [और खेलों के क्लब के बीच में लड़ाइयाँ।] ऐसा करने के लिए, मुस्लिम मुल्कों में रहने वाले ईसाइयों, यहूदियों, मजूसियों और दूसरे ग़ैर मुसलमानों का भरपूर इस्तेमाल किया जाए, और जो लोग इस मकसद के लिए काम कर रहें हों उन्हें मुश्तरका दौलत की विज़ारत के खज़ाने के महकमें से आला तंखवाहें दी जाएँ उनके अंदर जिहाद के बारे में शकूक डाले जाएँ; उन्हें इस बात का यकीन दिलाया जाए के जिहाद एक आरज़ी हुकूम था और अब इसका वक्त खत्म हो चुका। शियाओं के दिल से ये नज़रया के "काफ़िर गंदे हैं" इसे हटाया जाए। कुरआन की इस आयत का हवाला दिया जाए, **"जैसा के उन चिज़ो का खाना जिन्हें** (आसमानी) **किताब मे दिया गया है तुम्हारे लिए हलाल हैं, इसी तरह तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है।"** ([1] सूरह माएदाः आयत : 5) और उन्हें बता दो के नबी की एक बीवी यहूदी थीं जिनका नाम सफ़िया था और एक ईसाई नबी की बीवियाँ गंदी/नजस नहीं हो सकती।

नोट([2] हज़रत सफ़िया, जिन्हें अंग्रेज़ एक यहूदी कहते थे, वो पहले ही मुसलमान हो चुकी थी(जब उनकी हमारे नबी से शादी हुई)। मारिया के लिए, जोकि एक मिस्री थीं, वो अल्लाह के नबी की सबसे मुबारक बीवियों में से नहीं थीं। वो एक जारिया थीं। वो, भी एक मुसलमान थीं। (जब वो फ़ौत हुई), उमर रज़ी-अल्लाहु अनह, जो उस वक्त के खलीफ़ा थे ने नमाज़े जनाज़ा अदा कराई (जब एक मुसलमान मर जाता है तो नमज़े जनाज़ा अदा की जाती है)। अहल-अस-सुन्नत के मुताबिक, एक ईसाई औरत जारिया हो सकती है और साथ ही बीवी भी हो सकती है (एक मुसलमान आदमी के लिए)। ये

अकीदा (इस सिलसिले में) शियाओं के इस अकीदे के बरअकस हे के काफ़िर अपने आप नजस नहीं होते। बल्कि क्या चीज़ नजस/नापाक होती हैं वो हैं जो ईमान वो रखते हैं वो नापाक होता हैं।) मुसलमानों के दिलों में ये यकीन डाला जाए के "नबी का इस्लाम से मतलब था एक मुकम्मल मज़हब और इसलिए ये मज़हब यहूदियों या ईसाइयत या इस्लाम भी हो सकता हैं।" इस बात को मंदरजाज़ेल असबाब से साबित किया जाएः कुरआन तमाम मज़ाहिब के अराकीन को मुसलमान का नाम देता है। मिसाल के तौर पर ये हवाला दिया गया के हज़रत जोज़ेफ (युसूफ अलैहिस्सलाम) ने दुआ की, "**मुझे एक मुसलमान की मौत देना।**" ([3] अल्लाह तआला की तरफ़ से नबी के ज़रिए इतलाआत पर यकीन करने को **ईमान** कहते हैं। जिन मालूमात पर यकीन किया जाए वो दो किस्म की हैंः (1) मालूमात जिन पर सिर्फ़ यकीन किया जाए; (2) मालूमात जिन पर यकीन करना और अमल करना दोंनो लाज़मी हों। पहली की मालूमात, जोकि ईमान की बुनियादी हैं, छः अकाइद पर मुशतमिल हैं। सारे नबियों ने ईमान के इन बुनियादी उसूलों की तालीम दी हैं। आज, सारे यहूदी, ईसाई, साईसदाँ, मुदाब्बिर, सारी दुनिया के कमाण्ड़र, और ये सारे नाम निहाद मॉड़रन लोग आख़िरत पर यकीन रखते हैं, यानी, मौत के बाद डराए जाने पर। वो जो अपने आपको मॉडरन लोग कहलाते हैं उन्हें, इन लोंगो की तरह ईमान रखना होगा। दूसरी तरफ़, नाबियों की शरिअत, यानी, उनके मज़ाहिब में दिए जाने वाले अहकामात और मुमानिअतें एक जैसी नहीं हैं। ईमान रखना और शारियत की पैरवी करना **इस्लाम** कहलाता हैं। चुँकि हर नबी की अलग शरियत हैं, हर नबी का इस्लाम भी एक दूसरे से मुख्तलिफ़ है। अल्लाह का हर नबी एक नया इस्लाम लाया अपने से पहले वाले नबी का इस्लाम रद्ध करते हुए। आख़िरी नबी मुहम्मद अलैहि-सल्लाम के ज़रिए लाया गया इस्लाम दुनिया के आख़िर तक जाइज़ और सही रहेगा। सूरह **आल-ए-इमरान** की 19 वीं और 85 वीं आयत में अल्लाह तआला ने यहूदियों और ईसाइयों को हुकूम दिया के वो अपना पिछला इस्लाम छोड़ दें। उसने

एलान किया के जो मुहम्मद अलैहिस्सलाम की पैरवी नहीं करेंगे वो जन्नत में दाखिल नहीं होंगे और हमेशा दोज़ख में जलते रहेंगे। ऊपर मज़कूरा नबी यानी इब्राहिम, इसमाईल और युसूफ़ ने उस इस्लाम की दुआ की जो उनके वक्त में जाइज़ था। वो इस्लाम, मसलन गिरजों में जाना, आज जाइज़ नहीं हैं।) और नबी इब्राहिम और इसमाईल ने दुआ की, "**ए हमारे रब (अल्लाह)। अपने लिए हमें मुस्लिम बना और हमारी नसल के लोंगो को भी मुस्लिम बना।**" ([1] सूरह बकराह, आयतः 128) और नबी याकूब ने जबकि अपने बेटों से कहा, "**सिर्फ और सिर्फ मुसलमान ही मरना।**" ([2] सूरह बकराह, आयतः 132) बार बार इस बात को बताया जाए के गिरजों की तामीर हराम नहीं, क्योंकि नबी और उनके खलीफ़ाओं ने गिरजे मसमार नहीं किए बल्कि उनका अहतराम भी किया, कुरआन मे फरमाया हैं, "**अगर अल्लाह ने कुछ लोगों को तबाह नहीं किया, तो ये सिर्फ खानकाहों, गिरजों, यहूदियों की इबादत गाहों और मस्ज़िदों के वसीले से हैं क्योंकि इन जगहों में अल्लाह का ज़िकर बहुत किया जाता हैं वरना ये लोग** (अब तक) **तबाह कर दिए जाते**, ([3] सूरह हज, आयतः 40) और ये के इस्लामी मसाजिद का भी अहतराम करता हैं, और उनको तुड़वाता/मसमार नहीं करवाता, और जो इन्हें मसमार करना चाहते हैं उनसे उन्हें बचाता हैं।

मुसलमानों को अहदीसों के बारे में उलझन में डाल दिया जाए, "**यहूदियों को जज़ीर-ए अरब से निकाल दो,**" और, "**दो मज़ाहिब जज़ीर-ए अरब में इकठठे नहीं रह सकते।**" ये कहा जाए के "अगर ये दोनों अहदीसें सच्ची हैं, तो नबी की एक यहूदी बीवी और एक ईसाई बीवी न होती। ना ही आप नज़रान के ईसाइयों से कोई मुाहिदा करते।" ([4] सफ़हा नः 79 का फुट नोट नः 2 देंखे।)

मुसलमानों को उनकी इबादत से रोका जाए और इन इबादात के कारआमद होने के बारे में उनमें उलझने पैदा की जाएँ और ये कहा जाए के "अल्लाह को इंसानों/आदमियों की इबादत की ज़रूरत नहीं।

([5] इबादत अल्ला तआला के हुकूम से अदाकी जाती हैं। हाँ, अल्लाह तआला को उसके बंदे की इबादत की ज़रूरत नहीं। बल्कि बंदों को खुद इबादत की ज़रूरत हैं। ये लोग (ईसाई) खुद तो भीड़ में गिरजा जाते हैं। दूसरी तरफ़ ये मुसलमानों को मस्जिदों में जाने से रोकते हैं।)

उन्हें हज और ऐसी किसी भी इबादत से रोका जाए उन्हें इकट्ठा करे। इसी तरह उन्हें मस्ज़िदों, मकबरों और मदरसों की तामीर से रोका जाए और काबे की मरम्मत से भी रोका जाए। शियाओं में इस उसूल के बारे में उलझने पैदा की जाएँ के में हासिल होने वाले माले ग़नीमत का पाँचवा हिस्सा आलिमों को देना लाज़मी हैं और इसकी वज़ाहत यूँ की जाए के इस पाँचवे हिस्से का सबंध उस माले ग़नीमत से हैं जो (दार-उल-हरब) से हासिल किया गया और ये के तिजारती कमाई से इसका कोई लेना देना नहीं। फिर इसमें इस बात का इज़ाफ़ा किया जाए के "खमस, (ऊपर बताया गया पाँचवा हिस्सा) नबी या खलीफ़ा को देने के लिए हैं, ना की आलिमों कों। इसलिए, के आलिमों को घर, महल, जानवर और बाग़ावत दिए जाते हैं। इसलिए, इस बात की इजाज़त नहीं हैं के उन्हें (खमस) दिया जाए। " मुसलमानों के अकीदों के उसूलों में बिदअती शामिल कर दिया जाए और फिर इस्लाम को एक दहशत वाला मज़हब करार दिया जाए। इस बात का दावा किया जाए के मुसलमान मुल्कों में दरारें पड़ चुकी हैं वो ज़वाल पज़ीर हो गए हैं और इस तरह उनकी इस्लाम से वाबस्तगी में खलल डाला जाए। [दूसरी तरफ़, मुसलमानों ने दुनिया की सब से अज़ीम और मज़हब सलतनत कायम की। वो जब ज़वाल पज़ीर हुए जिस वक्त इस्लाम से वाबस्तगी में उनकी कमी आई।] बहुत अहम। बच्चों को उनके बापों से मुतनफ़िर/नफ़रत दिलाई जाए, इस तरह उन्हें उनके बुजुर्गों की तालीम से महरूम रखा जाए। हम उन बच्चों को पढ़ाएंगे। लिहाज़ा जिस वक्त बच्चें अपने आबाओ की तालीम से जुदा होंगे तो उनके लिए ये मुमकिन नहीं रहेगा के वो अपने ईमान, यकीन, ख़ाफत या मज़हबी आलिमों से तअल्लुक

बरकरार रख़ सकें। औरतों को उनके रिवाएती परदे से निजात पाने के लिए उकसाया जाए। ऐसी झूठी बातें घड़ी जाएँ जैसे के "परदा हकीकी इस्लामी हुकूम नहीं हैं। ये एक रसम है जो अब्बासी ख़लीफ़ाओं के दौर में कायम की गई। पहले तो, दूसरे लोग भी नबियों की बीवीयों को देखा करते थे और औरतें हर किस्म की समाजी सरगरमियों में हिस्सा लिया करती थीं।" औरतों को उनके परदे से निकाल कर नौजवानों को उनकी तरफ़ राग़िब किया जाए उन दोनों के बीच बेहयाई पैदा की जाए। इस्लाम को तबाह करने के लिए ये इंतेहाई पुरतासिर तरीका है। पहले ग़ैर मुस्लिम औरतों को इस मकसद के लिए इस्तेमाल किया जाए। वक्त के साथ साथ मुसलमान औरत अपने आप रज़ील हो जाएंगी और उनकी तकलीद करने लगेगी।

नोट ः[1] हिजाब (परदे) की आयत के नुज़ूल से पहले औरतें अपने आपको ढाँपा नहीं करती थीं, वो अल्लाह के नबी के पास आकर, आप से सवालात पूछा करती थीं, और जो नहीं जानती थीं वो आपसे सीखा करती थीं। जब भी अल्लाह के नबी उनमें से किसी के घर जाते, दूसरी औरतें भी वहाँ आ जातीं, बेठतीं, सुनती और सींखती। हिजरत के छः साल बाद सुरह नूर नाज़िल हुई जिस में औरतों को मुमानिअत की गई के वो गैर मरदों के साथ न बैंठे और नाहीं उनसे बात करें (शौहर या दूसरे करिबी रिश्तेदारों के अलावा) उसके बाद से, अल्लाह के नबी ने औरतों को हुकूम दिया के वो जो कुछ सीखना चाहती हैं उसे आपकी मुबारक बीवीयों से सीखें। ये कफ़फ़ार मुसलमानों को गुमराह कर रहे हैं इस हकीकत को छुपाकर के हिजाब की आयत के नुज़ूल के बाद औरतें अपने आपको ढाँपती थीं।

उम्म-ए-सलमा रज़ी अल्लाहु अन्ह, रसूलुल्लाह की मुबारक बीवी से रिवायत हैंः एक दिन मैं और मएमूना रज़ी अल्लाहु अन्ह, रसूलल्लाह 'सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम' की बीवी, अल्लाह के नबी 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' के साथ थीं, जब इबनि उम्म-ए मकतूम ने अंदर आने की इजाज़त

मांगी और घर में दाखिल हुए अल्लाह के नबी 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने उनको देखा तो हमसे कहा, "**परदे के पीछे छुप जाओ।**" जब मैंने कहा, "क्या वो अंधे नहीं हैं? वो हमें नहीं देख सकते," अल्लाह के नबी ने जवाब दिया, "**क्या तुम भी अंधी हो? तुम उसे नहीं देख सकतीं?**" इससे आपका मतलब था, "वो अंधा हैं तुम नहीं।" ये अहदीस-ए शरीफ़ इमाम-ए अहमद और तिमज़ी ओर अबू दाऊद रहीमाहुल्लाही तआला से नकल की गई। इस अहदीस-ए शरीफ़ के मुताबिक, जैसा के एक आदमी के लिए अपनी बीवी और इंतेहाई करीबी रिश्तेदारों के अलावा किसी और औरत को देखना हराम हैं, इसी तरह औरत के लिए अपने शौहर और इंतेहाई करीबी रिश्तेदारों के अलावा किसी ओर मर्द को देखना।

अहदीस-ए शरीफ़ पर ग़ैर और फ़िकर करने के बाद नतीजा निकाला के "एक औरत के लिए किसी नमहरम आदमी के **अवरत** हिस्सों को देखना हराम हैं। ऐसा करना आसान हैं। ये आसान मुमानियतें और अहकामात रूखसत कहलाती हैं। एक औरत के लिए ये **अज़ीमत** हैं के किसी नामहरम आदमी को सिर और बालों को न दिखायें। औरत के लिए मर्द का अवरत हिस्सा (वो हिस्सा जो एक औरत के लिए देखना मना हैं) उसकी नाफ़ और घुटनों के बीच का हिस्सा हैं। और (फरमाबरदारी) करना इस (सिर्फ़ उसूल की, अज़ीमत की तरफ़ ध्यान दिए बग़ैर), वो **रूखसत** हैं। (कहलाता हैं) जैसा के देखा गया हैं के अज़वाज-ए-ताहिरत (अल्लाहु तआला के नबी की पाक बीवीयाँ) रज़ी-अल्लाहु अन्हुम हमेशा अज़ीमत पर अमल करती थीं और रूखसत से परहेज़ करते थीं। **ज़िंदिक** जो इस्लाम को अंदरूनी तबाह करने की कोशिश कर रहे हैं। इस हकीकत को आगे बयान करते हैं के हिजाब की आयत के नज़ूल से पहले औरतें परदा नहीं करती थीं और कहते हैं के "औरतें नबी के वक्त में अपने आपको ढाँपती नहीं थीं। औरतों का चुड़ेलों की तरह परदा करना, एक अमल जो आज बहुत आम हैं, उस वक्त मौजूद नहीं

था। हज़रत आएशा, एक बार नंगे सिर बाहर चली गई थीं। आजकल परदा करने का अमल बाद में आने वाले फ़िकह के तअसुबी लोगों का एजाद किया हुआ हैं।" ऊपर बताई गई अहदीस वाज़ेह तौर पर बयान करती हैं के इन लोगों के ये बयानात सरासर झूठ और बोहतान हैं चार सही मसलक, जो अल्लाह तआला के अहकामात और मुमानियतों को वाज़ेह करते हैं, मर्द के **अवरत** हिस्सों के बारे में मुख्तलिफ़ तशरीहात देते हैं, यानी ये हिस्से ऐसे हैं के किसी और का उनको देखना या खुद ये हिस्से किसी को दिखाना हराम हैं। हर शख्स पर फ़र्ज़ हैं के वो अपने मसलक में बयान करदह हराम हिस्सों को देखना। **एशआत-उल-लेमाआत** किताब में मंदरजाज़ेल अहदीस-ए शरीफ़ लिखी हुई हैं:

"मर्दो और औरतों को अपने हम जिनसों के अवरत हिस्सों को देखना मना हैं।" हनफ़ी मसलक में, एक मर्द के लिए दूसरे मर्द के अवतरत हिस्से वही हैं जो एक औरत के लिए दूसरी औरत के हिस्से हैं: ये हिस्से घुटने और नाफ़ के दरमियानी हिस्से हैं। दूसरी तरफ़ एक नामहरम मर्द के लिए औरत के अवतरत के हिस्सों में औरत के चहरे और हाथों के अलावा तमाम जिस्म शामिल हैं। (मुखालिफ़ जिनस का कोई ऐसा शख्स जो महरम न हो वो नामहरम कहलाता हैं। इस्लाम ने एक शख्स के महरम रिशतेदारों के नाम रखें हैं। वो अठारह हैं)। औरत के बाल भी उसके अवरत हिस्सों में आते हैं। किसी के अवतरत हिस्सों को बग़ैर किसी नफ़सानी इच्छा के भी देखना हराम हैं। **"अगर तुम एक औरत को देखो, उसकी तरफ़ से अपना चेहरा हटा लो। अगरचे किसी को अचानक देखना गुनाह नहीं हैं, लेकिन उसे दोबारा देखना गुनाह हैं। "ए अली अपनी रान नंगी न करो! किसी दूसरे की रान को भी मत देखो, चाहे वो एक मुरदा हो या एक शख्स जो ज़िंदा हो।"**

"अल्लाह की उन पर लानत हो जो अपने हिस्सों को खोलते हैं और जो उनको देखते हैं।"

"एक शख्स जो अपने आपको एक कौम की तरह बना लेता हैं वो उनमें से एक बन जाता हैं।" ये अहदीस-ए शरीफ़ बताती हैं के एक शख्स जो अख्लाक, बरताओ या कपड़े पहनने के तरीके में इस्लाम के दुश्मनों को अपनाता हैं, वो उन्हीं में से एक बन जाता हैं। वो जो अपने आपको काफ़िरों के बुरे फैशन को अपनाते हैं, जो हराम का 'फाईन आर्टस' का नाम देते हैं, और जो लोंगो को जो हराम करते हैं 'फ़नकार' बुलाते हैं, उन्हें इस अहदीस-ए-शरीफ़ को एक तनबीह/वार्निग की तरह लेनी चाहिए। **किमया-ए-सआदत** में मंदरजाज़ेल लिखा हैं: "औरतों और लड़कियों का बग़ैर अपने सिरों, बालों, बाज़ू और टांगो को ढाँपे हुए या पतले, सजे हुए, चुस्त, खुशबूदार लिबास पहनकर बाहर जाना हराम हैं। अगर एक औरत के वालदेन, शौहर या भाई उसे इस तरह बाहर जाने देते हैं, तो वो भी उसके साथ गुनाह और अज़ाब सहेंगे (वो अपने इस गुनाह के लिए आख़िरत मे सज़ा भुगतेंगी)।" अगर वो तौबा करलें तो उन्हें माफ़ किया जा सकता हैं। अल्लाह तआला उनको पसंद करता हैं जो तौबा करते हैं।

बजमाअत नमाज़ की अदाएगी के ख़ात्में के लिए हर मौका इस्तेमाल किया जाए, मस्जिदों के इमामों पर बोहतान लगाए जाएँ, उनकी खामियों को उजागर करके, और उनके और जमाअत (मुसलमानों का ग्रुप) के बीच जो रोज़ाना की नमाज़े उनके पीछे पढ़ते हैं उनमें नाइतेफ़ाकी और दुश्मनी पैदा करके। तमाम मकबरों को मसमार कर दिया जाए ये कहते हुए, के नबी के वक्त में ये मौजूद नहीं थे। मज़ीद ये के, मुसलमानों को नबियों, ख़लीफ़ाओं और पाक मुसलमानों की कबरों पर जाने से बाज़ रखा जाए उनको ज़ियारत की कबरों के बारे में शकूक में डालकर। मिसाल के तौर पर, ये कहा जाए, "के नबी अपनी वालदा के करीब दफ़न हैं और अबू बकर और उमर को बाकी नामी कब्रिस्तान में दफ़न किया गया। उस्मान की कबर का कुछ पता नहीं। हुसैन के सिर को (एक जगह) **हनाना** में दफ़न किया गया। उनके जिस्म का पता

नहीं के वो कहाँ दफ़न हैं। **काज़मिया** में कबरों दो खलीफ़ाओं की हैं। ये कबरें काज़िम और जवाद की नहीं हैं जो नबी की नसल से थे। जहाँ तक के तुस (शहर) में मोजूद, कबर हारून की हैं ना के अहल-ए-बएत (नबी का खानदान) के एक रूकन रज़ा की। समरा में मोजूद कबरें अब्बासियों की हैं ना की अहल-ए बएत के हादी, असकरी और महंदी की। चुँकि ये फर्ज़ हैं के मुस्लिम मुल्कों में मोजूद गुम्बदों और मकबरों को मसमार कर दिया जाए इसी लिए बाकी नामी कब्रिस्तान भी मसमार करना लाज़मी हैं।

लोगों को इस हकीकत पर शक करने पर मजबूर किया जाए के नबी की नसल से हैं। सय्यदों को दूसरों लोगों के साथ मिला दिया जाए ग़ैर सय्यदों को काली और हरी पगड़ियाँ पहना कर। इस तरह लोग इस मामले में उलझन की वजह से सय्यदों से वे एतमाद हो जाएंगे। सय्यदों और मज़हबी शखसियात को पगड़ियाँ पहनने से बाज़ रखा जाए ताकि उनकी पहचान मुमकिन न रहे और उनकी इज़्ज़त खत्म हो जाए।

नोट : सय्यद अब्दुलहकीम अरवासी रहमतल्लाही अलैहि, एक बड़े आलिम ने अपनी किताब **(अस-हाब-ए-किराम)**, जोकि उन्होंने इस्तंबुल में लिखी थी में बयान किया: "हज़रत फातिमा, अल्लाह के नबी की मुबारक बेटी, और दुनिया के आखिर तक उनकी आने वाली नसल अहले बैअत के अराकिन हैं। उनसे मुहब्बत करना ज़रूरी हैं चाहे वो नाफरमान मुसलमान ही क्यों न हों। उनसे मुहब्बत करना, अपने दिल, जिस्म, और/या माल से उनकी मदद करना, उनकी इज़्जत करना और उनके हुकूम की बजाआवरी करना एक शख्स के लिए एक ईमान वाले की तरह मरने का सबब बनता हैं। शाम/सिरिया के एक शहर, हम्मास में सय्यदों के लिए एक कानूनी अदालत बनाई। अब्बास खुलफ़ाअ के वक्त में मिस्र में हसन रज़ी-अल्लाहु अन्ह की नसल को **शरीफ** नाम दिया गया और ये फैसला किया गया के वो सफ़ेद पगड़ियाँ पहनेंगे, और हुसैन रज़ी अल्लाहु अन्ह के बेटों को **सय्यद** का नाम दिया गया, जो हरी

पगड़ियाँ पहनेंगे। इन दो खानदानों में पैदा होने वाले बच्चों का इंदराज एक जज और दो गवाहों की मोजूगी में किया जाता था। सुलतान अबदुल माजीद खान रहमतुल्लाही अलैह रासिएद पाशा के दौर मे अंग्रेज़ आकाओं की हिदायत पर इन शरअी/कानूनी अदालतों को खत्म कर दिया गया। लोग बग़ैर किसी नसब के या मज़हबी मसलक के सय्यद कहलाए जाने लगे। नकली ईरानी सय्यद तूल ओ अरज़ में फैल गए। **फतवाअ हदीसिया** में बयान किया गया हैं के, इस्लाम के शरू के दिनों में कोई भी जो अहले बैअत की नसल से होता था वो शरीफ कहलाता था, मिसाल के तौर पर, शरीफ़-ए-अब्बासी, शरीफ़-ए ज़िनाली। फातिमी हुकूमरान शियाअ थे, वो सिर्फ हसन और हुसैन की नसल को शरीफ पुकारते थे। अशरफ शाबान बिन हुसैन, मिस्र के तुर्कन हुकूमरानों में से एक ने, हुकूम दिया के सय्यद हरी पगड़ियाँ पहनेंगे ताकि उन्हें शरीफ से मुमताज़ किया जा सके। ये अकाइद दूर दूर तक फैल गए जबकि इसकी इस्लामी नुकता निगाह से कोई अहमियत नहीं हैं। इस मज़मून की तफ़सीली वज़ाहत **मिरात-ए-काएनात** में और तुर्की वरसन **मवाहिब-ए लेदुन्निया** में और ज़रकानी नामी तफ़सीर के तीसरे बाब के सातवें सेकशन में हैं।")

इस बात को बताया जाए के शियाओं की मातम की जगहों को मसमार करना फर्ज़ हैं, और ये के ये अमल बिदअत और फ़ितूर दिमाग़ी हैं। लोगो को उन जगहों पर जाने से मना किया जाए, तबलीग़ करने वालों की तादाद कम की जाए, तबलीग करने वालों और मातम की जगहों के मालिकों पर टैक्स लगाया जाए। आज़ादी पसंदी के बहाने तमाम मुसलमानों को यकीन दिलाया जाए के "हर कोई आज़ाद हैं जो चाहे वो करे। अमर-ए-बिल्-मारूफ़ और नहीं-ए-अनल-मुनकर अदा करना या इस्लामी उसूलों की तबलीग़ करना फर्ज़ नहीं हैं।"[हकीकत ये हैं, इस्लाम का सीखना और पढ़ाना फर्ज़ हैं। ये एक मुसलमान का पहला फर्ज़ हैं।] मज़ीद ये के, मुसलमानों को इस मायूस कून

एहसास की तबलीग़ की जाएः "ईसाई अपने (ईसाइयत) ईमान में रहेंगे और यहूदी अपनी (यहूदियत) में बंधे हैं।

कोई भी किसी दूसरे शख्स के दिल में नहीं घुस सकता। अमर-ए-मारूफ़ और नहीं-ए अनल-मुंकर ख़लीफ़ाओं का काम हैं। "मुसलमानों की तादाद को बढ़ने से रोकने के लिए बच्चों की पैदाईश पर रोक लगाई जाए और कसरतें अज़वाज़ पर पाबंदी लगाई जाए। शादियों पर पांबदी लगादी जाए। मसलन, एक अरब एक ईरानी से, ईरानी एक अरब से, एक तुर्की एक अरब से शादी नहीं कर सकता।

ये यकीनी बनाया जाए के इस्लाम की नशरो इशाअत और इस्लाम की कुबूली बंद की जाए। इस गलत तसव्वुर की इशाअत की जाए के इस्लाम सिर्फ़ अरबों के लिए हैं। इस बात के सुबूत के लिए, कुरआन की आयत का हवाला दिया जाए जो इस तरह पढ़ी जाती हैं, **"ये तुम्हारें लिए और तुम्हारें लोगों के लिए ज़िकर हैं।"**

पाक अदारों को महदूद कर दिया जाए और इस हद तक उन्हें हुकूमती अजारादारी में दिया जाए के कोई भी इस काबिल न रहें के इनफ़रादी तौर पर कोई मदरसा या दूसरे इसी तरह के अदारें खोल सकें।

कुरआन की सदाकत के बारे में मुसलमानों के दिमागों में शकूक पैदा कर दिए जाएँ जिन में कतअ व बरीद, इज़ाफ़े और तहरीफ़ात मौजूद हों और फिर ये कहा जाए के, "कुरआन आलूदा हो चुका हैं। उसकी कापियाँ (नकल एक दूसरे से मिलती हुई नहीं हैं। उसकी एक जिल्द में मौजूद आयत दूसरी जिल्द में नहीं पाई जाती।" उन तमाम आयत को कुरआन से निकाल दिया जाए जिन में यहूदियों, ईसाइयों और दूसरे तमाम ग़ैर मुसलमानों की नफ़ी की

गई हो या फिर जिन आयत में जिहाद, अमर-ए-बि-ल-मारूफ़ और नहीं-ए-अनल मंकर का हुकूम दिया गया हो।

नोट : ये अंग्रेज़ो के मंसूबे कामयाब न हो सके।क्योंकि कुरआन अल करीम को तहरीफ़ात से महफ़ूज़ रखने का ज़िम्मा खुद अल्लाह तआला ने ले रखा हैं।उसने इन्जील की (आसमानी किताब जो हज़रत ईसा पर उतारी गई) हिफ़ाज़त का ज़िम्मा नहीं लिया।इसी वजह से बाएबल के नाम पर झूठी किताबें लिखी गई।यहाँ तक के ये किताबें वक्त के लिहाज़ से भी तबदील की जाती रही हैं।इसमें पहली तहरीफ़ पॉल नामी यहूदी ने की।हर सदी में की जानी वाली तहरीफ़ात में सबसे बड़ी तहरीफ़ **319** पादरियों ने मरतब की जो **325** में पहले इस्तानबुली रोमन बादशाह के हुकूम पर नसा में इकठठे हुए थे।**931** सी.ई [**1524**] में एक जर्मन पादरए मार्टिन लूथर ने **परोटस्टेन्ट** फिरका कायम किया।जो लोग रोम की पादरए की तकलीद करते थे वो **कैथोलिक** कहलाते थे।पादरी बारथोलोमियो और स्काटलैंण्ड़ की ख़ूँरेज़ी और कोइस्चन नामी अदालतों के खातमें के बाद होने वाली कतलों ग़ारत ईसाई तारीख का हिस्सा हैं।**446** (**1054** सी.ई) में इस्तानबुल के सरदार माएकल करोलास ने पेतए से इख्तलाफ़ किया और **रूड़ीवाद चर्च** कायम किया।शाम का मोनोफिसाइट फिरका **571** सी.ई में जेकोबस ने कायम किया; शाम का मेरोनाइट फिरका मारो ने **405** ए ड़ी.में; और **जेहोवाह की गवाही मे** चारलेस रसल ने **1872** में कायम किया।)

कुरआन का हिंदी, तुर्की, फारसी और दूसरी ज़बानों में तर्जुमा किया जाए ताकि अरब मुल्कों के अलावा दूसरे मुल्कों को अरबी सीखने और पढ़ने से बाज़ रखा जाए, और इसी तरह (आज़ान), (नमाज़), और (दुआ) को अरब मुल्कों के अलावा अरबी में होने से रोका जाए।इसी तरह मुसलमानों को अहदीसों पर शक करने पर मजबूर किया जाए और उसके लिए जिन तर्जुमा और तहारीफ़ का मंसूबा कुरआन के लिए बनाया गया उनका अमल अहदीसों

पर भी किया जाए। जब मैंने उस किताब को पढ़ा, जिसका नाम था **हम इस्लाम को कैसे तबाह कर सकते हैं**, तो मुझे वो बहुत ख़ूब लगी। जिन तालीमात को मैंने जनना था उसके लिए ये एक बेमिसाल रहनुमा किताब थी, जब मैंने किताब को वापिस किया और सेक्रेटरी को बताया के किताब पढ़ने से मुझे बहुत ख़ुशी हुई हैं तो उसने कहा, "इस बात का यकीन करलो के इस काम में तुम अकेले नहीं हो। ये काम करने वाले तुम्हारी तरह के और भी बहुत से लोग हैं। हमारी विज़ारत ने पाँच हज़ार से ज़ाइद लोगों को ये काम सौंपा हैं। हमारी विज़ारत ऐसे अफराद की तादाद एक लाख तक बढ़ाने के बारे में सोच रही हैं। जब ये तादाद हासिल हो जाएगी तो हम सारे मुसलमानों को अपने नीचे कर लेंगे और सारे मुसलमान मुल्कों पर कब्ज़ा कर लेंगे। "कुछ वक्त बाद सेक्रेटरी ने कहाः तुम्हारें लिए अच्छी ख़बर हैं। हमारी विज़ारत इस प्रोग्राम की तकमील के लिए ज़्यादा से ज़्यादा एक सदी का वक्त चाहता हैं। उन शानदार दिनों को देख़ने के लिए शायद हम ज़िंदा न रहें मगर हमारे बच्चें ज़रूर ज़िंदा रहेंगे। ये कहना कितना दिलफरेब हैः 'मैंने दूसरों का बोया हुआ ख़ाया हैं। लिहाज़ा मैं दूसरों के लिए उगा रहा हूँ।' जब अंग्रेज़ ये काम करने में कामयाब हो जाएंगे तो वो सारी ईसाइयत को ख़ुश कर देंगे और उन्हें बारह सौ साल पुराने वबाल से निजात दिला देंगे। "सेक्रेटरी मंदरजाज़ेल बोलता गयाः "सदियों तक जारी रहने वाली सलीबी जंगे किसी काम न आई। न ही मंगोलियों [चंगेज़ की फ़ौजें] ने इस्लाम की तबाही के लिए कुछ किया। क्योंकि उनका काम फ़ोरी, ग़ैर मुन्ज़म और बेबुनियादी था। उनकी फौजी मुहिमों से इस्लामी दुश्मनी ज़ाहिर हो गई थी। नतीजन, वो थोड़े अरसे में थक गए। लेकिन अब हमारी काबिले फख़र इंतेज़ामिया इंतेहाई सबर के साथ बहुत सी गहरी चालों से इस्लाम को ख़त्म करने की कोशिश कर रही हैं।

हम फौजी ताकत भी इस्तेमाल करेंगे। ताहम ये आख़िरी हरबा होगा, यानी, जब हम इस्लाम को पूरी तरह ख़त्म कर चुके होंगे, जब हम उसे हर

तरफ़ से कुचल चुके होंगे और नाहीं इस्लाम हम से लड़ने के काबिल रहेगा।

"सेक्रेटरी के आख़िरी अलफ़ाज़ ये थेः इस्तंबुल में हमारे बढ़े बहुत काबिल और अकलमंद हैं। वो हमारे मंसूबे को बिल्कुल सही अमल कराएंगें। उन्होने किया क्या? वो मुसलमानों के साथ मिल जाएंगें और उनके बच्चों के लिए मदरसे खोलेंगे। उन्होने गिरजे बनाए थे। वो नशीली शराबें, जुए, फहाशी और [और फुटबॉल कलबों] मुख़तलिफ़ तरग़ीबात के ज़रिए उन्हें ग्रपों में बाँट दिया। उन्होने जवान मुसलमानों के दिलों में शकूक पैदा किए। उन्होंने उनकी हुकूमतों में इख्तलाफ़ और फ़ितने पैदा किए। उन्होंने हर तरफ़ बदनिज़ामी फ़ैलाई। उन्होंने मुंतज़मीन, रहबरों और आला अफसरान के घरों को ईसाई औरतों से भर दिया। इस किस्म की सरगरमियों से उन्होने मुसलमानों की ताकत का खात्मा कर दिया और उनकी एकता को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। अब वक्त आ गया हैं के एक फोरी जंग का आगाज़ किया जाए और इस्लाम को नेस्त व नाबूद किया जाए।"

नोट : अंग्रज़ों ने इस्लाम के ख़ात्मे के लिए **21** दफ़ात पर मुशतमिल जो मंसूबा बनाया था उसका अमल उन्होने दो बड़ी इस्लामी रियास्तों उस्मानिया और हिंदुस्तान पर किया। उन्होने हिंदुस्तान में काफ़िराना इस्लामी फिरके कायम किए, जैसे के **वहाबी**, **कादियानी**, **तबलीग़-ए-जमाअत**, और **जमाअत-ए-इस्लामिया**। फिर अंग्रेज़ी फौज ने हिंदुस्तान पर हमला किया और पूरी इस्लामी रियास्त को ख़त्म कर दिया। उन्होने सुल्तान को कैद कर लिया और उसके दो बेटों का कत्ल कर दिया। इंतेहाई कीमती समानों और सदियों से महफूज़ ख़ज़ाने को लूट कर लंदन भिजवा दिया गया। उन्होने **ताज महल** नामी मकबरे की दीवारें से कीमती पत्थर, जैसे के हीरे, याकूत और पन्नों को चुरा लिया, जिसे सुल्तान शाह-ए जहान ने अपनी बैगम अरजुमंद बैगम/मुम्ताज़ महल की कब्र पर **1041** [सी. ई. **1631**] में आगरा में बनवाया था और उनकी जगाहों पर गारे के पेवंद लगवा दिए। आज गारे के ये पैबंद दुनिया को चीख

कर अंग्रज़ों की सफ्फ़ाकी से आगाह करता हैं। और अंग्रेज़ो से आगाह करता हैं। और अंग्रेज़ ये लूटी हुई दौलत अब तक इस्लाम के ग्वात्में के लिए ग्वर्च कर रहें हैं। जैसा के एक इस्लामी शायर बयान करता हैं, "अगर ज़ालिम के पास हे जुल्म का हाथियार, तो मज़लूम के साथ हैं अल्लाह," अल्लाह का इंसाफ जोश में आया और उन्हें उनके किए की सज़ा मिल गई दूसरी जंग-ए-अज़ीम में। ब्रिटिश पर जर्मनों के हमले के ग्वौफ़ से अंग्रेज़ अमीर, अहले कलिसा, मुदब्बिर, सयास्तदल, वज़ीर और आला अफ़सर और लाग्वों इस्लाम के दुश्मन बहरी जहाज़ों में बैठकर अमेरिका जा रहे थे के दो जर्मन बहरी लड़ाका जहाज़ी की बिछाई हुई मकनातिसी बारूदी सुरंगों और इसी तरह दूसरी दो जहाज़ों की ज़द में आ गए और डूब गए। वो सब बहरे ओकयानूस में गर्क हो गए। न्यूयार्क में अकवामें मुत्ताहदा के इंसानी हुकूम के अदारे की जानिब से किए जाने वाले एक फैसले के तहत उन्हें अपनी नोअबादियों से निकलना पड़ा जिसकी वजह से उन्हें अपनी आमदनी के अकसर ज़राए से हाथ धोना पड़ा। यही आमदनी मुश्तरका दौलत की विज़ारत कई सदियों तक नाजाईज़ तौर पर इस्तेमाल कर रही थी। वो "ग्रेट ब्रिटेन" नामी जज़ीरे तक महदूद होकर रह गए। ग्वाना और ग्वुराक का समान महदूद कर दिया गया। मुझे याद हैं तुर्की के जनरल स्टाफ़ के चीफ़, जनरल सालेह उमर तक ने **1948** में रात के ग्वाने पर कहा था, "लंदन में एक सरकारी महमान होने के बावजूद में जब भी ग्वाने की मेज़ से उठता तो मेरा पेट पूरा नहीं भरा होता था। अपनी वापसी के दौरान इटली में मैं स्पागतीह/मोटी सेवाइयाँ ग्वाकर अपना पेट भरता था।" इसका हवाला मैं इसलिए दे रहा हूँ क्योंकि मैं डिनर/ग्वाने की मेज़ पर जनरल के बमुकाबिल बैठा था और मैने उसके अलफाज़ात अभी भी मेरे कानों में गूंज रहें हैं। सनाअल्लाह-ए दहलवी रहमतुल्लाही अलैहि ने सूरह-ए माएदा की **82** वी आयत-ए-करीमा की अपनी वज़ाहत में मंदरजाज़ेल बतायाः "मुहि-इस-सुन्ना हुसैन बग़वी ने हवाला दिया के सारे ईसाई असनाम परस्त नहीं होते। क्योंकि असनाम परस्ती का मतलब हैं किसी चीज़ को पूजना, यानी उसकी इबादत

करना। यहूदियों की तरह असनाम परस्त, मुसलमानों के खिलाफ़ शदीद दुश्मनी रखते हैं। वो मुसलमानों को कत्ल करते हैं, उनके घरों को बरबाद करते हैं और उनकी मस्जिदों को खत्म करते हैं। वो कुरआन अल करीम की कापियाँ जलाते हैं। "इमाम-ए रब्बानी रहमतुल्लाही अलैह ने (अपनी किताब मकतूबात) अपनी तीसरी जिल्द के तीसरे खत में लिखा हैं," एक शख्स जो अल्लाह तआला के अलावा किसी और की इबादत करता है वो एक असनाम परस्त/बुत परस्त कहलाता हैं, एक शख्स जो अपने आपको नबी की शरीअत के मुताबिक नहीं ढालता वो बुत परस्त कहलाता है। आज दुनिया भर के ईसाई मुहम्मद अलैहिस्सलाम से इंकार करते हैं और इसलिए वो काफ़िर हैं। उनमें से ज़्यादातर बुत परस्त हैं क्योंकि वो कहते हैं के ईसा अलैहिस्सलाम एक देवता हैं, या ये के वो तीन देवताओं में से एक हैं। उनमें से कुछ, जो ये मानते हैं के "ईसा एक पैदाइशी गुलाम थे और अल्लाह के नबी थे,"तो वो अहल-ए-किताब हैं। ये सारे लोगों ने इस्लाम और मुसलमानों की तरफ़ खतरनाक बरताओ अपनाया हुआ हैं। उनके हमले अंग्रेज़ों के ज़रिए मुंतज़िम किए जाते हैं। हमने **1412** [**1992** ए.ड़ी.] में बताया था के हाल ही में ईसाइयों ने दस सवाल तजवीज़ किए और उन्हें मुसलमान मुल्कों में बाँट दिया। बंगलादेश में इस्लामी आलिमों ने इन सवालों के जवाब तैयार करके ईसाई पादरियों को बेइज़्जत कर दिया। इस्तंबुल में **हकीकत किताबवी** ने पूरी दुनिया में इन जवाबों को तकसीम किया **अल एकाज़ीब-उल-सिडीड़-तुल-हरिसतियानिया नाम से।**

सेकशन एक

सातवाँ हिस्सा

पहला राज़ जानकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई, अब मैं दूसरा राज़ जानने के लिए बेचैन था। आख़िरकार एक दिन सेक्रेटरी ने अपने वादे के मुताबिक दूसरे राज़ की वज़ाहत की। दूसरा राज़ पच्चास सफ़ात पर मुशतमिल एक मंसूबा था जो मुश्तरका दौलत की विज़ारत में काम करने वाले आला अफ्सरान के लिए तैयार किया गया था इस्लाम को एक सदी की मुददत में ख़त्म करने के लिए। मंसूबा **14** दफ़ात पर मुशतमिल था। मंसूबे की बहुत सख़्ती से हिफ़ाज़त की जाती थी क्योंकि ड़र था के कहीं इसे मुसलमान हासिल न करलें। मंसूबे की दफ़ात मंदरजाज़ेल हैं:

एक आला और मुंज़म इत्तेहाद कायम किया जाएगा और रूसी ज़ार/शहनशाह से बाहमी मदद का मुआहिदा किया जाएगा बुख़ारा, तजाकिस्तान, अरमेनिया, ख़ुरासान और उनके इरदगिरद के इलाकों पर हमला किया जा सके। और फिर रूस के साथ एक और ख़ुफ़िया मुआहिदा किया जाएगा ताकि इसके पड़ोसी मुल्क तुर्की पर हमला किया जा सके।

हम फ्रांस के साथ आपसी इश्तराक कायम करेंगे ताकि इस्लामी दुनिया को अदरूनी और बाहरी तौर पर मुकम्मल तबाह किया जा सके।

हम तुर्की और ईरानी हुकूमतों के बीच जज़बाती और रांजिशों के बीच बोएंगे और दोनो कौमों मे कौमी व नसली जज़बात उभारेंगे। मज़दी ये के तमाम मुसलमान कबिलों, कौमों और पड़ोसी मुस्लिम मुल्कों को एक दूसरे के ख़िलाफ महाज़ आड़ा किया जाएगा। सारे छोटे मामूली और दबे हुए तफ़रकात

दोबारा पैदा किए जाएंगे ताकि एकता का ख़ात्मा आसान हो जाए। मुसलमान मुल्कों के मख़्तलिफ़ हिस्सों को गै़र कौमों को दिया जाए। मसलन, मदीना को यहूदियों के हवाले, मिस्र ईसाइयों के, अमारात/अमारा साइबा साबियों।) के किरमानशाह नुसरानियों के, जो अली, मुसल को यज़ीदियों को तकसीम कर देंगे, ईरानी खलीज हिंदूओं को, तिंपोली दरवज़ियों को, फ्रांस अलवियों को, और मसकत ख़ासिजी ग्रुप के हवाले कर दिया जाएगा। अगला कदम ये होगा के हर ग्रुप को औज़ार दे दिए जाएँ ताकि इनमें से हर एक इस्लाम के जिस्म पर एक काँटा बन जाए। फिर इनके इलाके बढ़ा दिए जाएँ ताकि इस्लाम गिर जाए और उसका ख़ात्मा हो जाए।

एक ऐसा मंसूबा तैयार किया जाएगा इन मुसलमान और उसमानिया रियास्तों को छोटी से छोटी मकामी रियास्तों में तबदील करने का जो हमेशा एक दूसरे से जंग लड़ती रहें। इसकी एक मिसाल आज का हिंदुस्तान हैं। मंदरजाज़ेल आम सोच की वजह सेः "तोड़ो और हुकूमत करो," "तोड़ो, तुम ख़त्म कर सकोगे।"

ये ज़रूरी हैं के झूठे और खुद साख़्ता मसालिक और फिरके इस्लाम में दाख़िल कर दिए जाएँ और उनकी रूह में मिलावट की जाए। ये अमल इतनी बारिकी से किया जाए के ये नए फिरके उन लोगों के अहसासात और इच्छाओं के मुताबिक हों जिनके बीच हम इन्हें फैलाने जा रहे हैं। हमने शियाअ मुलकों में चार मुख़्तलिफ फिरके फैलाएः **1-** एक फिरका जो हज़रत हुसैन की इबादत दे; **2-** एक फिरका जो जाफ़र सादिक का दरस दें;

3- एक फिरका मेहंदी का; **4-** एक फिरका अली रज़ा का दरस देने वाला। पहला फिरका करबला के लिए मौज़ूँ हैं, दूसरा वाला असफहान के लिए, तीसरा वाला समरा के लिए, और चौथा वाला ख़ुरासान के लिए। इसी दौरान हमें चाहिए के मौजूद मुतहद चार सुन्नी मसालिक को चार खुद पसंद मज़ाहिब में

तबदील कर दिया जाए। ये करने के बाद, हम सब मिलकर नजद में एक नया इस्लामी फिरका तैयार करेंगे, और फिर इन ग्रपों में खुन खराबा कराया जाएगा। हम इन चारों मसालिक की किताबों को नेस्तो नाबूद करेंगे ताकि इनमें से हर ग्रुप ये समझे के वो सिर्फ वाहिद मुसलमान ग्रुप हैं और दुसरें ग्रुपों को काफ़िर समझें के उनका कत्ल वाजिब है।

फ़साद और बेहयाई के बीच, जैसे के ज़िना नाच गाना, शराब और जुआ मुसलमानों में फैलाया जाए। इन मुल्कों में रहने वाले ग़ैर मुसलमानों को इस मकसद के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। इस किस्म के लोगों की एक फौज इस मकसद को हासिल करने के लिए हुकूमती मुतालबे पर दस्तयाब होगी।

हम किना परवर रहनुमाओं और ज़ालिम कमांड़रो को मुसलमानों के खिलाफ़ काम करने की तालीम और तरबीयत देने की कोशिश में कोई कमी नहीं छोड़ेंगे। ताकि हमारे मतलुबा लोग हुकूमत में आ जाएँ और शरिअत पर अमल करने के खिलाफ़ कानून पास करने में मदद मिल सके। हम उन्हें इस हद तक इस्तेमाल करें के जहाँ तक हो सके वो इतने ताबेए फरमान रहें के जिस काम के करने या न करने का उन्हें मुश्तरका दौलत की विज़ारत से करने का हुकूम मिले वो उसे पूरा करें। उनके ज़रिए हम इस काबिल हो जांएगे के इन मंसूबों को इस्तेमाल करते हुए मुसलमानों और मुस्लिम मुल्कों पर अपनी इच्छाएँ आइद कर सकते हैं। हमें एक ऐसा समाजी निज़ामे ज़िंदगी कायम करना होगा जहाँ ऐसा माहोल पैदा किया जाए के शरीअत की इताअत जुर्म खयाल की जाए और इबादत एक अफ़सोसनाक और शर्मनाक अमल खयाल किया जाए। हमें रहनुमा ग़ैर मुसलमानों में से चुने। ऐसा करने के लिए, हमें अपने एजेंटों को इस्लामी आलिमों का भैस देकर उन्हें आला मकमों पर फाइज़ किया जाए ताकि वो हमारी इच्छाओं पर अमल को यकीनी बना सकें।

नोट : अंग्रेज़ अपनी इन कोशिशों में कामायाब रहे। वो अपने उजरती चैलों जैसे के मुस्तफ़ा रशीद पाशा, अली पाशा, फव्वाद पाशा और, तलत पाशा और इस तरह आरमेनिया की या यहूदी नसल के ज़रिए जो हुकूमत में थे लोगों को ज़लील व ख्वार कराया। जबकि अब्दुल्लाह कोदते, मूसा काज़िम, और अब्दुह, को आलिम बनाकर पैश किया गया।)

अरबी की सीखने से रोकने के लिए पूरी कोशिश की जाए। अरबी के अलावा दूसरी ज़बाने जैसे के फारसी, क़ुर्दिश और पश्तु को आम किया जाए। फसीह व बलीग़ अरबी ज़बान के अदब को नेस्तो नाबूद किया जाए क्योंकि अरबी ही कुरआन और सुन्नत की ज़बान हैं।

अपने एजंटों को सियास्तदानो के इरद गिरद किया जाए और आहिस्ताा आहिस्ता इन एजंटों को सेक्रेटरियों का दरजा दिलाया जाएगा और उनके ज़रिए विज़ारत की इच्छाएँ पूरी की जाएंगी। ऐसा करने का सबसे आसान तरीका गुलामों की तिजारत का हैः सबसे पहले इन जासूसों को मुकम्मल तौर पर तरबीयत याफ़ता किया जाए जिन्हें गुलामों और लौड़ियों के भैस में आगे भिजवाना होगा। फिर उन्हें मुसलमान अफसरों के करीबी रिश्तेदारों को बेच दिया जाएगा मिसाल के तौर पर उनकी बिवियों या बच्चों को या दूसरे ऐसे अफ़सद को जिन को वो पसंद करते हों या उनका अहतराम करते हों। ये गुलाम बिकने के बाद आहिस्ता आहिस्ता इन सियास्तदानों के करीब जाएंगे। उन सियास्तदानों की माँओ और आबाओं के तौर पर वो उन्हें इस तरह घेरे में ले लेंगे जेसे कंगन कलाई घेर लेता है।

ईसाइयत की तबलीग़ के इलाकों को बढ़ाया ताकि वो समाजी तबकात और पैशों में दाखिल हो सकें, खास तौर से ऐसे काम जैसे तिब, इंजिनिअरींग, और लाइब्रेरियों। हमें गिरजों, स्कूलों, अस्पातालों, लाइब्रेरियों और खैराती मदरसों के नाम पर प्रोपॅगेंड़ा और छपाई के मर्कज़ खोलने चाहिए इन

मुसलमान मुल्कों में और उन्हें दूर और पास फैलाना चाहिए। हमें लाखों की तादाद में ईसाई मज़हब की किताबें मुफ़्त बाँटनी चाहिए। हमें ईसाई तारीख़ और बेनुल हुकूमती कानून को इस्लामी तारीख़ से बाहम मिलाकर छापना होगा। हमें अपने जासूसों को नन और राहिबों के भैस में गिरजों और ईसाई तहरीक के लदि़रों के तौर पर इस्तेमाल करना चाहिए। ये लोग इसी दौरान इस्लामी दुनिया में मौजूद तमाम तहरीख़ों और हमें फौरन इतलाह देंगे। ईसाइयों की एक ऐसी फौज कायम की जाएगी जो प्रोफ़सर, साईसदानो और मुहक्किक के भैस में इस्लामी तारीख़ बिगाड़ कर उसे आलूदा और ख़राब करके पेश करेगी, जो मुसलमानों के बारे में हकाईक, तरीके, बरताव और मज़हबी उसूलों को सीख कर उनकी तमाम किताबों को तबाह करेंगी और इस तरह इस्लामी तालीम का ख़ात्मा किया जाएगा।

हमें इस्लामी नोजवानों, लड़के और लड़कियों को बराबर उनकी सोच को नापुख़्ता किया जाएगा, और इस्लाम के बारे में उनके दिमागो में शकूक ड़ाले जाएंगें। हम उन्हें मुकम्मल तौर पर उनके अख़लाकी इकदार से गिरा देंगे स्कूलों, किताबों, रिसालों [खेलों के क्लब, नशरोइशाअत, टेली विज़न और चलती फिरती तस्वीरों के ज़रिए, और हमारे अपने एजेंट इस के लिए खसूसी। तरबियत दिए जाएंगे। इसके लिए पहली शर्त ये है के ऐसे खुफिया इदारे खोले जाएं जहाँ यहूदी, ईसाई और दूसरे ग़ैर मुस्लिम नौजवानों को खसूसी तालीम व तरबियत दी जाए और फिर उन्हें एक अय्यार शिकारी के तौर पर इस्तेमाल किया जाए ताकि वो मुसलमान जवानो को फ़ाँस सकें।

मआशरती जंगे और बग़ावत पैदा की जाएः ताकि मुसलमान एक दूसरे के साथ भी लड़ते रहें और गैर मुसलमानों के साथ भी ताकि उनकी ताकतें ज़ाया हों और एकता और तरक्की का हुसूल उनके लिए नामुमकिन हो जाए। उनकी ज़हनी और मालयाती ज़रिए तबाह कर दिए जाएँ। जवान और हरकत वाले मुसलमानों का कत्ल आम किया जाए। उनके नज़मो ज़बत को

दहशत गरदी, लाकानियत और बदहुकूमती में तबदील किया जाए और उन्हें तबाह कर दिया जाए।

उनकी मआशियत सारे इलाकों में तबाह करदी जाए, उनके ज़राए आमदनी और ज़रई इलाकों को तबाह किया जाएगा, उनके ज़राए आवपाशी और नदी नालो को उजाड़ा जाएगा जबकि दरयाओं को खुश्क कर दिया जाएगा। लोगों को नमाज़ की अदाएगी और महनत से नफ़रत करने पर मजबूर किया जाएगा और जिस हद तक मुमकिन होगा आलस को आम किया जाएगा। आलसी लोगों के लिए खेलों के मैदान बनाए जाएंगे। मंशियात और शराब आम की जाएगी।

[ऊपर बयान की गई दफ़ात बहुत वाज़ेह तौर पर नकशों, तसवीरें और चार्टस की मदद से वाज़ेह की गई थीं।] मैंने इस शानदार दस्तावेज़ के बारे में इतलाआत फराहम करने पर सेक्रेटरी का शुक्रिया अदा किया।

लंदन में माह कयाम के बाद मुझे एक पैग़ाम मिला जिसमें मुझे विज़ारत की तरफ़ से एक बार फिर ईराक जाकर नजदी मुहम्मद से मिलने का हुकूम मिला। जब मैं अपने मिशन पर रवाना होने वाला था तो सेक्रेटरी ने कहा, “नजदी मुहम्मद से कभी ग़ाफ़िल मत होना! अब तक हमारे जासूसों की जानिब से भिजवाई जाने वाली रिपोर्टस के मुताबिक ये साबित होता हैं के वो बेवकूफ़ी का नामूना हैं और हमारे मकासिद की तकमील के लिए बहुत मौज़ूँ हैं। नजदी मुहम्मद से दोस्ताना माहोल में बात करना। हमारे एजेंटो ने असफ़हान में उससे हमारी ख्वाहिशात चंद शर्तो पर कुबूल करलीं। जो शर्ते उसने रखीं वो ये हैं: उसे जाएदाद से नवाज़ा जाए और असलह भी दिया जाए ताकि वो अपनी जान मुसलमान मुदब्बिरों और आलिमों से बचा सके जो उसके ख्यालात और इरादों के बरमला इज़हार के बाद उस पर हमला कर सकते हैं। उसके मुल्क में उसूल कायम हों चाहे वो छोटा ही क्यों न हो। विज़ारत ने उसकी ये शर्ते कुबूल

करलीं।" ये खुशखबरी सुनने के बाद मुझे महसूस हुआ के मैं उड़ रहा हूँ। फिर मैंने सेक्रेटरी से पूछा के इस बारे में मुझे क्या करना होगा। उसका जवाब था, "विज़ारत ने नजदी मुहम्मद के लिए एक हस्सास मंसूबा तैयार किया हैं, जो ऐसे हैंः

"**1-** उसे इस बात का एलान करना होगा के सारे मुसलमान काफ़िर हैं और ये के उन्हें कत्ल करना हलाल हैं, उनकी जाएदाद पर कब्ज़ा करना, उनकी पाकिज़गी को बरबाद करना, उनकी औरतों , लडकीयों ,मर्दो को गुलाम बनाना और उन्हें गुलामों के बाज़ार में बेच देना।

"**2-** उसे ये कहना होगा के काबा एक बुत हैं इसलिए उसे मिस्मार कर देना चाहिए । ताकि हज की इबादत खत्म हो जाए। उसे मुख्तलिफ़ कबिलों को इस बात पर उकसाना होगा के वो हाजियों के ग्रपों पर हमला करके उनका सामान लूट कर उन्हें कत्ल करे ।

नोट : ऐसे अफ़राद या मुजस्समें जिनकी इबादत की जाती हो, उन्हें सज्दा किया जाता हो या उन्हें ख्वाहिशात पूरा होने का वाहिद ज़रिया समझा जाता हो, बुत कहलाते हैं। मुसलमान काबा के सामने सिर नहीं झुकाते बल्कि काबे की तरफ़ मुँह करके दरहकीकत अल्लाह तआला के सामनें सर झुकाते हैं। नमाज़ की हर रकअत में सजदे के बाद सूरह फातिहा पढ़ी जाती हैं। इस सूरह का मफ़हूम हैं, **"ए मेरे अल्लाह** [सिर्फ़ वाहिद] **सारे आलम** (कायामत) **का रब! जिसकी हम अकेले इबादत करते हैं। और हर काम के लिए तुझ से ही मदद माँगते हैं।"**)

"**3-** वो मुसलमानों को खलीफ़ा की अताअत से बाज़ रखने की कोशिश करेगा और उन्हें खलीफ़ा के खिलाफ बग़ावत पर उकसाएगा। उसे इस मकसद के लिए एक फौज तैयार करनी होगी। उसे हर इस मैके से फाएदा

उठाना होगा जिस के ज़रिए ये झूठा यकीन फैलाया जा सके के हज्जाज़ के ज़िम्मेदार लोगों से जंग की जाएं और उन्हें शरमिन्दा व बदनाम किया जाए।

"4- उसे ये इल्ज़ाम लगाना होगा के तमाम गुंबद वाली इमारतें, मकबरें और मुकददस मकामात जो मुसलमान मुल्कों में मौजूद हैं वो बुत हैं और मुशरिकाना माहौल पैदा करने के ज़िम्मेदार भी हैं। लिहाज़ा उन्हें मिस्मार किया जाए। उसे भरपूर कोशिश करनी होगी के पैग़म्बर मुहम्मद, आपके खलीफ़ा, और मसलक के सारे मुमताज़ आलिमों की बेइ़ज़्ज़ती के ज़्यादा से ज़्यादा मौके पैदा हों।

"5- उसे मुस्लिम मुल्कों में बग़वत, तरदूद और लाकानियत की बेइंतिहा हौसला अफ़ज़ाई करनी होगी।

"6-वो कोशिश करेगा के कुरआन की एक नकल छापी जाए जिसे इंदराज न इखराज के ज़रिए से तहरीफ़ शुदा बनाया जाए, जैसा के अहदीसों के साथ किया गया।"

नोट : ये दावा करना के अहदीस शरीफ़ खसुसन मअरूफ़ व आला किताबों में मौजूद अहदीस शरीफ़ में तहरीफात की गई हैं, एक बदतरीन बोहतान होगा। एक ऐसा शख्स जो जामाती हो के अहादीस के मुहाफ़िज़ आलिमों ने किस तरह से अहादीस की तदवील व तालीफ़ की तो वो न तो कभी ऐसा गंदा बोहतान लगाएगा और न हीं कभी ऐसे बोलनो पे यकीन करेगा।) छः पेराग्राफ पर मुबनी मंसूबे की वज़ाहत के बाद सेक्रेटरी ने मज़ीद कहा, "इस ज़खीम मंसूबें के बारे में खौफ़ज़दा मत हो। क्योंकि हमारा काम सिर्फ इस्लाम की तबाही व बरबादी के बीज बौना हैं। आने वाली नसलें इस काम को पूरा करेंगी। वेसे भी ब्रिटिश हुकूमत का तरज़े अमल ये हैं के सबर से काम लो और स्टेप दर स्टेप आगे बढ़ा जाए। क्या पैग़मबर मुहम्मद, एक अज़ीम और हैरान कुन इस्लामी

इंकलाब के बानी, आखिरकार एक इंसान नहीं थे? और हमारे इस नजदी मुहम्मद ने भी वादा किया है के वो अपने पैगम्बर की तरह हमारे इस्लाम मुखालिफ़ इंकलाब को अंजाम तक पहुँचाएगा।" कुछ दिन बाद मैंने वज़ीर और सेक्रेटरी से इजाज़त तलब की और अपने दोस्तों और घर वालों को अलविदा कर दिया, और बसरा के लिए निकल गया। जब मैं घर से रवाना हो रहा था तो मेरे बेटे ने कहा, "डेडी जल्दी, वापिस आइएगा!" मेरी आँखे भीग गई। मैं अपनी बीवी से अपना ग़म छुपा नहीं पाया। थका देने वाले सफ़र के बाद मैं रात में बसरा पहुँचा। मैं अब्दुल रज़ा के घर गया। वो सो रहा था। जब वो जागा तो मुझे देखकर बहुत खुश हुआ। उसने गरमजोशी से भरी महमान नवाज़ी की। मैंने रात वहीं बसर की। अगली सुबह उसने मुझ से कहा "नजदी मुहम्मद मुझ से मिलने आया था। उसने तुम्हारें लिए ये खत दिया और चला गया। मैंने खत खोला। उसने लिखा था वो अपने मुल्क जा रहा है, नजद, और वहाँ का पता उसने दिया था। मैं भी फौरन वहाँ जाने के लिए तैयार हो गया। एक बहुत ही तकलीफ़ दह सफर के बाद मैं वहाँ पहुँचा। नजदी मुहम्मद मुझे अपने घर में मिला। उसने अपना वज़न काफ़ी खो दिया था। मैंने इस बारे में उससे कोई बात नहीं की।

उसके बाद, पता चला के वो शादी कर चुका था। हमने आपस में फ़ैसला किया के वो मेरा तआरूफ़ अपने गुलाम की हैसियत से कराएगा जो उस जगह से वापिस आया था जहाँ नजदी मुहम्मद उसे एक काम से भेजा था। उसने बिल्कुल उसी तरह मेरा तआरूफ़ कराया। मैं नजदी मुहम्मद के साथ दो साल तक रहा। हमने उसके एलान के लिए एक प्रोग्राम बनाया। आखिरकार **1143** हिजरी [ए. डी. **1730**] मैंने उसके अज़ाइम की मुकम्मल तशहीर करदी। और फिर अपने इरद गिरद हामी जमा करने के बाद उसने अपने करीबी लोगों के सामने धमकी भरे बयानात देकर इंतेहाई चालाकी से अपने मंसूबें की तकमील की और रोज़ बरोज़ अपने प्रोग्राम को आगे बढ़ाता रहा। मैंने उसे दुश्मनों से

बचाने के लिए उसके आस पास गार्ड लगा दिए और जितनी जाएदाद दौलत वो चाहते थे उन्हें पाराहम की। जब कभी नजदी मुहम्मद के दुश्मनों ने उस पर हमला करना चाहा हमले नाकाम कर दिया बल्कि उन्हें जख़्मी भी किया। जैसे जैसे उसका बुलावा बढ़ता गया उसके मुख़ालिफ़ों की गिनती बढ़ती गई। कई मरतबा उसने मायूस होकर अपने प्रोग्राम को छोड़ देने की कोशिश भी की, ख़ासतौर उस वक्त जब उस पर होने वाले हमलों की तादाद में इज़ाफ़े की वजह से उसका सबर टूट गया। फिर भी मैंने उसे कभी तंहा नहीं छोड़ा और हमेशा उसकी हिम्मत बंधाई। मैं उससे कहा करता था, "ए मुहम्मद! तुम्हारे पेग़म्बर ने इससे कहीं ज़्यादा तकलीफ़ उठाई थीं जितनी तुमने अब तक उठाई हैं। तुम जानते हो के इज़्ज़त और मरतबा पाने का सही रास्ता है। बिल्कुल उसी तरह जिस तरह दूसरे इंकलाबियों ने तकलीफ़ें उठाई तुम्हें भी मुश्कलात उठानी होंगी।" दुश्मन का हमला किसी भी वक्त हो सकता था। इसलिए मैं उसके दुश्मनों पर जासूस लगा देता। एक बार मुझे बताया गया के दुश्मन उसे कत्ल करने की तैयारी कर रहें हैं। मैंने फौरन ज़रूरी हिफ़ाज़ती इकदामात किए ताकि इस मंसूबें को नाकाम बनाया जा सके। जब लोगों (नजदी मुहम्मद के हामी) ने दुश्मनों के इस मंसूबे के बारे में सुना, तो वो उनसे और ज़्यादा नफ़रत करने लगे। इस तरह उनके बिछाए गए जाल में वो फँस गए। नजदी मुहम्मद ने मुझ से वादा किया के वो मंसूबे की तमाम छः दफ़ात को अमली जामा पहनाएगा और कहा, "फिलहाल मैं उन पर सिर्फ़ थोड़ा अमल कर सकता हूँ।" वो अपने तौर पर ठीक कह रहा था क्योंकि उस वक्त उसके लिए मुमकिन न था के वो तमाम बातों को पूरे तौर पर अमली जामा पहना सके।

काबा को मिस्मार करने वाली शर्त उसके लिए बिल्कुल नामुमकिन थीं। इसी वजह से उसने इसे (काबा) बुत करार देने वाली बात बिल्कुल मना करदी। मज़ीद उसने कुरआन की तहरीफ़ शुदा नकल की छपाई से भी मअज़री ज़ाहिर करदी। इन मामलात में उसे सब से ज़्यादा ख़तरा मक्का में तशरीफ़ और

इस्तांबुल की हुकूमत से था। उसने मुझ से कहा, "अगर हमने ये दो एलान कर दिए तो हम पर एक बड़ी ताकतवत फौज हमला कर सकती है।" मैंने उसकी मआज़रत कुबूल करली। क्योंकि वो बिल्कुल सही था। हालात बिल्कुल भी साज़गार थे। दो साल बाद मुश्तरका दौलत की विज़ारत देरिय्या के अमीर मुहम्मद बिन सऊद की खुशामद करके उसे भी अपनी डगर पर लाने में कामयाब हो गई। उन्होने मुझे ये बताने के लिए एक पैगाम रसां भेजा और मुझे कहा गया के दानो मुहम्मद के बीच बाहिमी मुहब्बत और इशतराक कायम किया जाए। मुसलमानों भरोसा हासिल करने के लिए हमने नजदी मुहम्मद को मज़हबी तौर पर जबकि मुहम्मद बिन सऊद को सियासी तौर पर इस्तेमाल किया। ये एक तारीखी हकीकत हैं के मज़हबी बुनयादों पर कायम होने वाली रियास्तें ज़्यादा अरसे तक कायम रहती हैं और यही ज़्यादा ताकतवर और मरऊब कुन भी होती हैं।

हम लगातार ताकतवर से ताकतवर होते गए। हमने **देरिय्या** शहर को अपनी राजधानी बनाया। और हमने अपने नए मज़हब को **वहाबी** मज़हब का नाम दिया। विज़ारत ने खुफिया तौर पर अंदर ही अंदर वहाबी हुकूम की मदद की और उसे मज़बूत बनाया। नई हुकूमत ने ग्यारह ऐसे अंग्रेज़ी अफसरों को खरीद लिया जो अरबी ज़बान और सहराई जंग का तर्जुबा रखते थे गुलामों के भैस में। हमने इन अफसरों की मदद से अपने मंसूबे बनाए। दोनों मुहम्मद ने हमारी पैरवी की। जब हमें विज़ारत की तरफ़ से कोई एहकामात नहीं मिलते थे तो हम अपने फ़ैसले खुद कर लिया करते थे।

हम सबने कबाइली लड़कियों से शादियाँ कीं। हम सब मुसलमान बीवीयों की शौहरों पर जान निसारी की खुशी से बहुत लुतफ़ अंदोज़ हुए। इस तरह हमने कबाइलियों से मज़बूत रिश्तेदारी कायम करली। अब हर चीज़ सही जा रही हैं। हमारी मरकज़ियत भी रोज़बरोज़ जानदार होती जा रही हैं। अगर काई नागहानी मुसीबत नाज़िल न हो तो हम वो फल ज़रूर हासिल करेंगे

जिसको हमने खुद तैयार किया हैं। क्योंकि हमने जो ज़रूरी था वो सब किया है और बीज बोया हैं।

तनबीहः जो शख्स किताब को ध्यान से पड़ेगा उसे इल्म हो जाएगा के इस्लाम का सबसे बड़ा दुश्मन अंग्रेज़ हैं और ये अच्छी तरह जान जाएंगे के वहाबी फिरका इनकी पैदावार हैं जो सारी दुनिया में सुन्नी मुसलमानों पर हमले कर रहें हैं और अंग्रेज़ इनकी मदद कर रहे हैं।

ये किताब दस्तावेज के साथ ये साबित करती है के वहाबी फिरका अंग्रेज़ कफफार ने इस्लाम को खत्म करने के इरादे से कायम किया। हमने यहाँ तक सुना हैं के मुनाफ़कीज हर मुल्क में वहाबी अकाईद फैलाने की भर पूर कोशिश कर रहें हैं। यहाँ तक के कुछ लोग ये दावा करते हैं के हेमफ़र के एतराफ़ात खयाली कहानियाँ हैं जो दूसरे लोगों ने लिखी हैं मगर ये लोग अपने दावे को साबित करने के लिए हकीकी सुबूत नहीं दे सके हैं।

वो लोग जो वहाबी अकाइद की किताबें पढ़ते हैं और उनके अंदरूनी और ज़रूरी हकाईक भी जानते हैं वो ये मानते हैं के ये एतराफ़ात सही हैं। वहाबी इस्लाम को मिस्मार करने में मदद करते हैं। ताहम वो जितना मरज़ी ज़ोर लगाएँ या जितनी ज़्यादा कोशिश करें वो कभी भी अहल अस-सुन्ना को खत्म नहीं कर सकते, जो सच्चे मुसलमान हैं। बल्कि वो इन कोशिशों से खुद ही फना हो जाएंगे। क्योंकि अल्लाह तआला ने सूरह इसरा की **81** वीं आयत के ज़रिए ये खुशखबरी सुनाई हैं के जो भी मलऊन लोग होंगे उन्हें सही रास्ते पर चलने वाले लोगों के हाथों शिकस्त उठाना पड़ेगी और वो नेस्ती नाबूद होंगे।

दूसरा बाब

इस्लाम के खिलाफ़ अंग्रेज़ों की दुश्मनी

जो लोग पहले बाब में दिए गए अंग्रेज़ जासूस के ऐतराफ़ात पढ़ेंगे उन्हें इस बात का अंदाज़ा हो जाएगा के सारी दुनिया में अंग्रेज़ मुसलमानों के बारे में क्या सोचते हैं। मंदरजाज़ेल लिखी गई बातें उन मालूमात का खुलासा हैं के अंग्रेज़ जासूसों ने मुश्तरका दौलत की विज़ारत की तरफ़ से मिलने वाली हिदायत पर किस तरह अमल किया और ईसाई पादरी/राहिब किस किस्म के मंसूबों पर अमल करते रहे हैं। अंग्रेज़ बहुत ज़्यादा खुद पसंद और मुतकबिर लोग हैं। जो आला हैसियत वो अपने आप और अपने मुल्क से मंसूब करते हैं अगर वो हैसियत किसी और से मंसूब कर दी जाए तो अंग्रेज़ उनसे सख्त नफ़रत करने लगते हैं। अंग्रेज़ों के मुताबिक ज़मीन पर तीन ग्रप हैः पहला ग्रुप अंग्रेज़ हैं, जो अपने बारे में इस खुशफ़हमी का शिकार हैं के वो ऐसी मखलूक हैं जिसे अल्लाह तआला ने तमाम इंसानो से मुमताज़ बनाया है। दूसरा ग्रुप सफ़ेद फ़ाम युरोपी और अमरिकी हैं। ये लोग भी किसी हद तक इज़्ज़तदार हैं क्योंकि इनकी इज़्ज़त का एतराफ़ बहुत महरबानी और रहमदिली से किया जाता है। तीसरा ग्रप उन लोग का है जो इन दोनो ग्रपों में से किसी एक में भी पैदा होने की खुशकिस्मती नहीं रखते। वो इंसानों और जानवरों के बीच के किस्म की मखलूक हैं। वो बिल्कुल भी इज़्ज़त के लायक नहीं; नाही वो आज़ादी खुद मुखतारी और अलग मुलक जैसे बुनियादी हुकूक के काबिल नहीं समझा जाता। बल्कि ये ख्याल किया जाता हैं के ये लोग दूसरों खसूसन अंग्रेज़ की गुलामी के लिए पैदा किए गए हैं।

दूसरे लोगों के लिए ऐसे मिलान खातिर रखने की वजह से अंग्रेज़ कभी भी अपनी नोआबादियो के मकीलों के बीच नहीं रहते बल्कि उनकी नोआबादियों में क्लब, रक्स गाहें, हमाम और स्टोर होते हैं जो सिर्फ़ अंग्रेज़ लोगों के लिए हैं। मकामी लोग इन जगाहों में दाखिल नहीं हो सकते।

फ्रांसिसी लेखक marcelle pernean, जो बिसवीं सदी में हिंदुस्तान में अपनी सय्याहत के लिए मशहूर हैं अपनी किताब **हिंदुस्तान के सफ़र की याददाश्तें/NOTES ON MY TRAVEL TO INDIA** में मंदरजाज़ेल बयान करता हैः

“मैंने एक हिंदुस्तानी आलिम से मुलाकात का वक्त तए किया। वो आलिम यूरोप में इतना ज़्यादा मशहूर था के उसे मुख्तलिफ़ युनिवर्सिटियों की जानिब से प्रोफ़ेसरी की पेशकश की गई थी। हम दोनो ने हिंदुस्तान में मौजूद एक ब्रिटिश क्लब में मिलने का फ़ैसला किया। जब वो हिंदुस्तानी आलिम वहाँ पहुँचा तो अंग्रेज़ अमले ने उसकी शौहरत से कतअ नज़र उसे अंदर दाखिल होने से मना कर दिया और उसे उस वक्त इजाज़त मिली जब मैंने तमाम मामले को भाँपते हुए ये इसरार किया के ब्रिटिश में इस हिंदुस्तानी क्लब में दाखिल की इजाज़त हासिल हैं।

अंग्रेज़ों ने दूसरे लोगों के साथ जानवरों से भी बरतरीन सुलूक किया। उनकी सबसे बड़ी कालोनी इंड़िया हैं, जहाँ उन्होने सालों तक जंसी मज़ालिम और वहशियाना सुलूक का जुर्म किया, अम्रितसर शहर में मज़हबी रसम की अदाएगी के लिए आए हुए हिंदुओं के एक ग्रप ने अंग्रेज़ ईसाई राहिब के सामने सिर न झुकाया जिस पर उस राहिब ने ब्रिटिश जनरल डायर से शिकायत करदी। इतनी सी बात पर इबादत में मसरूफ़ हिंदुओं पर गोली चलाने का हुकूम दे दिया। सिर्फ़ दस मिनट में सात सौ लोग मारे गए जबकि हज़ार से ज़्यादा ज़ख्मी हो गए। जनरल सिर्फ़ इस बात से मुतईन नहीं हुआ उसने लोगों

को मजबूर किया के वो जानवरों की तरह हाथ और पाओं की मदद से रिंग कर ज़मीन पर चलें तीन दिन तक ऐसा किया गया। एक शिकायत की रिपोर्ट तैयार करके लंदन भेजी गई जिस पर हुकूमत ने तफ़शीश का हुकूम सादर किया।

जब हिंदुस्तान भेजे गए तफ़शीशी अफसर ने जनरल से पूछा के उसने किस वजह से निहथ्थे लोगों पर गोलियाँ चलवाई तो जनरल ने जवाब दिया, "मैं हिंदुस्तान में अंग्रेज़ फौज का कमांड़र हूँ। मैं यहाँ होने वाले आपरेशनो के लिए हुकूम देता हूँ मैंने ऐसा हुकूम दिया क्योंकि मैं उसे सही समझता हूँ। " जब इंसपेक्टर ने पूछा के लोगों को ज़मीन पर रेंगने का हुकूम देने की क्या वजह थी, तो जनरल ने जवाब दिया, "कुछ हिंदुस्तानी अपना सिर ख़ुदा के सामने झुकाते हैं। मैं उन्हें बताना चाहता था के एक अंग्रेज़ औरत भी हिंदुओं के ख़ुदा के जितनी मुकददस हैं। इसलिए उन्हें उस औरत के सामने भी सिर झुकाना होगा। सिर्फ़ ख़ुदा के सामने सिर झुकाना उस औरत की बेइज़्ज़ती है। " जब इंस्पेकटर ने उसे याद दिलाया के उन लोगों को ख़रीदारी और दूसरे कामों के लिए बाहर जाने की ज़रूरत भी पेश आ सकती थी तो जनरल ने जवाब दिया, "अगर ये लोग इंसान होते तो गलियों में मुँह के बल रेंगना कभी कुबूल नहीं करते। ये लोग सपाट छतों वाले घरों में रहते थे। वो अपनी छतों पर इंसानो की तरह चल सकते थे। " जनरल की ये बातें ब्रिटिश अख़बारात में सुरख़ियों में छपी और उसे कौमी हिरो बना दिया गया। [डायर, रिनालड़ एडर्वड़ हेरी **1281** [ए .डी. **1864**] में पैदा हुआ और **1346** [ए .डी. **1927**] में लंदन में मरा। दुनिया की तारीख़ उसे इस तरह पेश करती हैं "एक मशहूर अंग्रेज़ जनरल जिसे अम्रितसर में ब्टिीश मज़ालिम के ख़िलाफ़ होने वाली बग़ावत को पूरे शहर को ख़ून की झील में तबदील करके **13** अप्रेल **1919** को कुचल डाला था। " जब पूरे हिंदुस्तान में अंग्रेज़ हुकूमत के ख़िलाफ़ बड़े पेमाने पर मुज़ाहरे शुरू हो गए तो उसे रिटायर कर दिया गया। ताहम ब्टिीश हाऊस आफ लार्डस

ने फ़ैसला किया के उसके अमाल काबिले तहसीन हैं इसलिए उसकी मदद करनी चाहिए। ये हकीकत इस बात को वाज़ेह करती हैं के ब्रिटीश नवाब और अवाम दूसरे लोगों को किस नज़र से देखते हैं।] अंग्रेज़ अपनी इन कालोनियों में जहाँ के मकीन गोरे और असली यूरोपी हों, में बनिस्बत उन कालोनियों/नोआबादियों के हों जहाँ के मुकीम काले, सांवले या ग़ैर यूरोपी हो, मुख्तलिफ़ इंतेज़ामी निज़ाम अपनाते हैं। पहला तबका मराअत याफ़ता हैं क्योंकि उन्हें जुज़वी आज़ादी हासिल थी। जबकि दूसरा ग्रुप हर वक्त उनकी ज़ालमाना कारवाइयों से चींखता रहता था। नोआबदियों का पहला 'dominions' कहलाया जाने वाला ग्रुप दाख़ली मामलात में खुदमुख्तार था ताहम खारजी मामलात ब्रिटीश के हाथ में थे ऐसी नौआबादियों की मिसालें केनेडा/चनदा, ऑस्ट्रेलिया और नयूज़िलैण्ड आदि हैं।

नौआबादियों से मुतअल्लिक मआमलात दो विज़ारतों के सपरूर किए जाते थे। ये मुश्तरका दौलत की विज़ारत और हिंदुस्तानी विज़ारत हैं। मुश्तरका दौलत की विज़ारत का सरबराह **वज़ीरे मुमलकत बराए महकमा नौआबादयात** कहलाता हैं। इस सेक्रेटरी (या वज़ीर) के दो कोनसिलर और चार मातहत होते हैं। एक कोनसिलर दारूलडलूम/house of connons से मुतंखिब किया जाता हैं। जबकि दूसरा कोनसिलर और चार मातहत मुस्तकिल तौर पर ऑफिस में होते हैं। हुकूमती तबदीली का इन ओहदों पर कोई असर नहीं पड़ता। चार मातहतों में से एक कनेडा और ऑस्ट्रेलिया और चंद दूसरे जज़ीरों से मुतअल्लिक मआमलात संभालता हैं, दूसरा जुनबी अफ्रीका के मआमलात का ज़िम्मेदार होता हैं, तीसरा मशरीकी व मग़रीबी अफ्रीका पर हुकूमरानी करता हैं जबकि आख़िरी को हिंदुस्तान के मआमलात सौंपे जाते हैं।

पुर तअफ्फुन बुनयादों, इस्लाम दुश्मनी, मुतलकुल अनानी, धोकेबाज़ी और खबासत पर मुबनी ब्रिटीश सरकार पहले पहल अपने आपको ऐसी रियास्त का नाम देती थी जिस पर "बाज़ मुल्क मसलन केनेड़ा, जुनूबी अफ्रीका, फिजी,

जज़ाइर बहरे अलकाहिल पापुआ, टाँगा, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटीश बलोचिस्तान, बर्मा, अदन, सुमालिया, बोरनियो, बरूनाई, सरावाक भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, मलेशिया, इंडोनिशिया, हाँक काँग, चीन के बाज़ हिस्से, साएपरास, मालटा, (और **1300** [ए . डी. **1882**]) में मिस्र, सुडान, नाजर, किनया, नाएजिरिया, युगांडा, ज़िम्बाबवे, ज़ामबिया, मलावी, बहामस, ग्रेनाडा, घयाना, बोस्तवाना, घमबिया, घाना, साएरा लिओन, तनज़ानिया और सिंगापुर अंग्रेज़ों के कबज़े में थे। दुनिया के इन मुल्कों को अपने मज़हब, ज़बानों, रस्मो रिवाज़ और सखाफ़त को खोना पड़ा। मज़ीद ये के उनके कुदरती वसाइल और कुदरती ज़राए को ब्रिटीश ने नाजाइज़ तौर पर इस्तेमाल किया।

19 वीं सदी में अपने हमलों के इखतेताम पर अंग्रेज़ों ने दुनिया के एक चौथाई हिस्से को अपने कब्ज़े में कर लिया, दुनिया की एक चौथाई से ज़्यादा आबादी की नौआबादी बना दिया।

अंग्रेज़ नौआबादियों में हिंदुस्तान सबसे शानदार और सबसे अहम था। ये हिंदुस्तान की कसीर आबादी (जो उस वक्त **30** करोड़ और अब **70** करोड़ से ज़ायदा है), और उसकी लाज़वाल कुदरती दौलत थी जिसने ब्रिटीश को आलमगिर हुकूमरानी हासिल करने की हिम्मत दी। पहली जंगे अज़ीम में ब्रिटीश ने **15** लाख हिंदुस्तानी अवाम को जंगी सिपाही के तौर पर इस्तेमाल किया और हिंदुस्तानी खज़ानों में से दस खरब नकद भी इस्तेमाल किया। उन्होंने इन असासों का इस्तेमाल ज़्यादातर उसमानिया सलतनत को टुकड़े करने में किया। अमन के ज़माने में भी हिंदुस्तानी ही था जिसने ब्रिटीश की बड़ी सनअतों को सहारा दिया और इस तरह ब्रिटिश मआशीयत और खज़ाने को तबाह होने से बचाए रखा। हिंदुस्तान के अहम नौआबादी होने के दो असबाब थेः पहला, ये के हिंदुस्तानी एक ऐसा मुल्क था जहाँ इस्लाम वसीअ पैमाने पर फ़ैला हुआ था, जिसे ब्रिटीश तमाम दुनिया पर कब्ज़ा करने के मंसूबे में सबसे बड़ी रूकावट

समझते थे, और मुसलमान इस मुल्क में ताकत में भी थे। दूसरी वजह, हिंदुस्तान के कुदरती ख़ज़ाने थे।

हिंदुस्तान को अपने कबज़े में रखने के लिए ब्रिटीश ने उन तमाम मुसलमान मुल्कों पर हमला कर दिया जिन का हिंदुस्तान से आमदो रफ़त का राबता था, उनके बीच फितने और शर्र के बीज बोए और भाई को भाई से लड़वाया, उन मुल्कों को अपने कब्ज़े में लेकर उनकी कौमी दौलत को ओर कुदरती दौलत को वापिस अपने मुल्क में भिजवाया।

ब्रिटीश पालिसी की फ़ितरत में शामिल जबली ग़दराना खसलतें साबित करती हैं के उन्होने सलतनत-ए उसमानिया में उठने वाली तहरीकों की बहुत बारिकी और खुफ़िया तरीके से मदद की और उसमानिया सलतनत की कोई सियासी चालों के ज़रिए से रूस के साथ जंग में लगा दिया और इस तरह उन्हें ऐसे हालात में फंसा दिया के उनके लिए हिंदुस्तान की मदद करना नामुमकिन हो गया। हिंदुस्तान के पहले युरोपी आबादकार पुर्तगाली थे। जो हिंदुस्तान के मालाकार साहिली इलाके के शहर कलकत्ता की बंदरगाह पर **904** [ए . डी. **1498**] में लंगरअंदाज़ हुए। पुर्तगालियों ने तिजारत में दाखिल होकर हिंदुस्तान की तिजारत पर कब्ज़ा कायम कर लिया मगर कुछ अरसे बाद ही उनकी ये हुकूमरानी डच ने ले ली। वो जिन्होंने डच से इंडिया की तिजारत छिनी वो फ्रेंच थे। ताहम कुछ अरसे बाद इन सब लोगो को ब्रिटीश के आगे सिर झुकाना पड़ा।

जैसा के किताब **अस-सुरतल-उल-हिंदिया** (जिसका मतलब **'हिंदुस्तानी इंकलाब'**) **में** बयान किया गया हैं, ये अलामा मुहम्मद फ़ज़ल-ए हक़ खैर आबादी, हिंदुस्तान के एक अज़ीम इस्लामी आलिम के ज़रिए लिखी गई और उनकी **अल-यवाकीत-उल-मिहरिय्या** नाम की आलोचना में बयान हैं, ये **1008** [ए. डी. **1600**] का साल था जब ब्रिटीश ने अकबर शाह से कलकत्ता

में तिजारती मकर्ज़ खोलने के लिए इजाज़त माँगी। उसी साल महारानी एलिज़ाबेथ अव्वल ने ईस्ट इंड़िया कम्पनी के कवाईद की मंज़ूरी दी। इन कवाईद के तहत कम्पनी के इजाज़त दी गई के वो ब्रिटेन में फौजी भरती करें और अपने फौजी बहरी बैढ़े के कयाम और हिंदुस्तान में तिजारती व फौजी मुहिमों को मुंज़म करने के लिए उन्हें मसलह करें।

अंग्रेज़ों ने शाह आलम अव्वल के वक्त में कलकत्ता में ज़मीन खरीदी। ([1] शाह-ए-आलम बिन आलमगीर ने **1124** [सी.ई. **1712**] में वफ़ात पाई)। अपनी ज़मीन की हिफ़ाज़त के बहाने फौजियों को वहाँ ले आए। अकबर शाह मज़हबी मआमलात को बराबर मानने वाला ख़राब आदमी था। दर हकीकत, उसने सारे मज़हबों के आलिमों को बुलाया ओर तमाम मज़हबों पर मुबनी एक मज़हब कायम करने की कोशिश की, ओर इस नए मज़हब का सरकारी एलान जारी किया, **990** [ए.डी. **1582**] में जिसका नाम उसने **दीन-ए-इलाही** (इलाही मज़हब) रखा। उस वक्त से उसकी मौत तक, इस्लामी आलिमों की इज़्ज़त पूरे हिंदुस्तान खास तौर पर शाही महल में मुसलमान कम होते रहें और जिन लोगों का झुकाओ अकबर शाह के नए मज़हब की तरफ़ था उनकी खास इज़्ज़त की जाने लगी। ये उन्ही दिनों की बात हैं जब ब्रिटीश हिंदुस्तान में दाखिल हुए। जब अंग्रेज़ो ने **1126** [ए.डी. **1714**], में सुल्तान फ़रूख सर शाह का कामयाब इलाज किया तो बदले में उन्हें ये ईनाम मिला के वो पूरे हिंदुस्तान में जहाँ चाहें ज़मीन खरीद लें। शाह आलम **2** की तख्त नशीनी **1174** [ए.डी. **1760**] के बाद उन्होने अपनी हुकूमरानी बंगाल से लेकर बस्ती हिंदुस्तान और राजस्थान तक फैला दी। उन्होने पूरे हिंदुस्तान में फितना व फ़साद बरपा कर दिया। **1218** [ए.डी. **1803**] में आख़िरकार ब्रिटीशो ने शाह आलम **2** को पूरे तौर पर अपने काबू में कर लिया। जो अहकामात वो दिल्ली से जारी करते वो अब शाह के नाम से जारी किए जाने लगे। इस तरह उन्हें ब्रिटीश के गर्वनर जनरल की ताकत को शाह-ए आलम **2**

के बराबर करने में कोई ज़्यादा वक्त नहीं लगा। उन्होने हिंदुस्तानी सिक्कों पर से मुसलमान हिंदुस्तानी बादशाहों के नाम मिटा दिए। **1253** [सी.ई. **1837**] में बहादुर शाह **2** बादशाह बना। लेकिन वो ब्रिटीश मज़ालिम के सामने ज़्यादा देर खड़ा न रह सका और, आवाम के इसरार और फौज की हिम्मत दिलाने पर ब्रिटीश के ख़िलाफ़ **1274** [ए .डी.**1857**] में एक अज़ीम बग़ावत का आग़ाज़ कर दिया। ताकि वो सिक्कों पर दोबारा अपना नाम कुंदा करवा सके और खुतबा दोबारा उसका नाम लेकर दिया जाने लगे। मगर इस बग़ावत पर अंग्रेज़ो का रददे अमल इंतेहाई शदीद और ज़ालिमाना था। ब्रिटीश फौज ने दिल्ली में दाख़िल होकर उसे तबाह कर दिया, घरों और दुकानों में लूट मार की और दौलत व जाएदाद हर चीज़ पर कबज़ा किया। उन्होने इस बात की परवाह किए बग़ैर के वो बूढ़ा हैं या मर्द हैं या औरत, जवान हैं या बच्चा, तमाम मुसलमानों पर तलवारकशी की। वो इतनी वसीअ तबाही थी के लोगों को पीने के लिए पानी तक न मिला।

बहादुर शाह **2** के एक सिपाहसलार जनरल बख़्त ख़ान ने सुल्तान को अपनी फौज से हथियार डालने के लिए कहा। इसी तरह एक और सिपाहसलार मिर्ज़ा इलाही बख़्श ने अंग्रेज़ उमरा के दिल में जगह करने के लिए बहादुर शाह को धोका दिया और कहा के अगर वो अपनी फौज छोड़ दें और हार मान लें तो वो अंग्रेज़ उमरा को कायल करने में कामयाब हो जाएगा के तुम बिल्कुल बेकसूर थे और तुम्हें बग़ावत की सरवराही पर मजबूर कर दिया गया और इस तरह तुम अंग्रेज़ हुक्काम से माफ़ी पा लोगे। बस बहादुर शाह ने अपनी फौज के अहाम अफ़राद को छोड़ दिया और हुमायू शाह के मकबरें में पनाह ली जो दिल्ली में किला-ए-मोअल्ला से दस किलोमिटर था।

रजब अली शाह नामी एक धोकेबाज़ बादशाह को अंग्रेज़ पादरी हडसन के पास ले गया, हडसन अपनी ग़ैर अख़्लाकी सरगर्मियों की वजह से बदनाम था और अंग्रेज़ फौज में जासूस आफ़िसर के तौर पर काम करता

था। उस शख़्स ने अपनी आदत के मुताबिक अंग्रेज़ फौज के सिपाहसलार जनरल विलसन को ख़बर दी और उससे बादशाह को गिरफ्तार करने के लिए मदद माँगी। जब विलसन ने उसको जवाब दिया के उसके पास कोई उजरती सिपाही मौजूद नहीं तो हडसन ने तजरीज़ किया के वो ये काम सिर्फ़ चँद लोगों की मदद से कर सकता हैं बशर्त ये के बादशाह को इस बात की ज़मानत दी जाए जो हार मान लेने की सूरत में उसे उसके घर वालों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा। पहले पहल विलसन ने ये तजवीज़ रद करदी मगर बाद में राज़ी हो गया। उसके बाद हडसन 90 लोगों को अपने साथ लेकर हुमायूँ शाह के मकबरे पर पहुँचा और बादशाह को यकीन दिलाया के उसे उसके बेटों और उसकी बीवी को कोई गज़ंद नहीं पहुँचाई जाएगी। पादरी की बात को सच्चा मानते हुए, बहादुर शाह ने हथियार डाल दिए। बादशाह के दो बेटे और एक पोते ने हार नहीं मानी थी इसलिए हडसन ने उन्हें गिरफ्तार करना चाहा। लेकिन उनके पास इतने मुहाफ़िज़ थे के उन्हें गिरफ्तार करना नामुमकिन था। इसलिए उसने जनरल विलसन की इजाज़त माँगी के उन्हें भी ज़मानत दी जाए के अगर वो हथियार डाल देंगे तो उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाया जाएगा। बादशाह के बेटों और पोते के पास कई पैग़ाम रसान भेजने के बाद, हडसन बदमाश उन्हें ये यकीन दिलाने में कामयाब हो गया के उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा। ये लोग भी पादरए के फरेब में आ गए और हथियार डाल दिए। जैसे ही हडसन ने बादशाह के दो बेटों और पोते को गिरफ्तार किया तो अपने वादे के बरख़िलाफ़ उन्हें जज़ीरों में जकड़ और उनकी जान बख़्शी के बजाए उन्हें कत्ल करने का पक्का इरादा कर लिया।

जब शाह के दो बेटों और पोते को दिल्ली ले जाया जा रहा था उनके बंधे हाथों के साथ तो हडसन ने जवान शहज़ादों को नंगा कर शहीद कर दिया। उसने उनका ख़ून पिया। लोगों को डराने के लिए उसने उनकी लाशों को किलाबंद शहर के दरवाज़े पर लटका दिया। दूसरे दिन उसने उनके सिर गर्वनर

जनरल हेनी बरनार्ड को भेज दिए। फिर, उसने उन शहीदों के गोशत से बने हुए सूप का एक पियाला शाह और उसकी बीवी को भेज दिया। बहुत ज़्यादा भूखे होने की वज़ह से, उन्होंने जल्दी से कुछ हिस्सा अपने मुँह में उंडेल लिया। हाँलाकि उन्हें मालूम नहीं था के वो किस किस्म का गोशत था मगर न वो उसे चबा सके और नही निगल सके। बजाए इसके उन्होने उलटी करदी और सूप को ज़मीन पर नीचे रख दिया। हडसन बदमाश ये देखकर कहने लगा, "तुमने इसे क्यों नहीं खाया, ये इंतेहाई मज़ेदार सूप हैं। मैंने इसे तुम्हारे बेटों के गोशत से बनाया हैं।

1275 [ए. डी. **1858**] में बहादुर शाह **2** को तख्त से हटा दिया गया और युरोपियों के कत्ले आम और बग़ावत कराने के जुर्म में कानूनी कारवाई की गई। **29** मार्च को उसे उमर कैद की सज़ा सुनाई गई और देश निकालके रंगून भेज दिया गया। नवंबर **1279** [ए .डी. **1862**] के दोरान्न इस्लामी गुरग़ानी/मुग़ल सलतनत के आखिरी सुल्तान बहादुर शाह का अपने मुल्क से दूर एक अंधेरी ज़मीन में मर गया। दूसरी तरफ़, अल्लामा (मुहम्मद) फ़ज़ल-ए हक़ को अन्डामान आइसलेन्ड को काल कोटरी मे बंद कर **1278**[सी **1861**] अंग्रेज़ों ने शहीद कर दिया ।

हिंदुस्तान को अपना मातहत मुल्क करार दे दिया। सल्तनते उसमानिया को इस जंग में ग़र्क करके मिदहत पाशा ने इस्लामी दुनिया पर सब से कारी ज़र्ब लगाई, वो बदनाम ज़माना फ्रीमैसन अंजुमन का बाकाएदा रूकन था। सुलतान अब्दुल अज़ीज़ खान को शहीद करना ब्रिटीश हुकूमत के लिए उसकी एक ओर आला खिदमत थी।

ब्रिटीशे ने खुसूसी ऐजेण्टों की तरबीयत की और उन्हें उसमानिया हुकूमत में ऊंचे औहदो पर फ़ाइज़ कर दिया। ये आला ओहदे वाले नाम के तो उसमानी थे लेकिन बोलने और दिमाग़ से ब्रिटीश थे। मुसतफ़ा रासिएद पाशा इन सब

आदमियों में सबसे ज़्यादा रूसवा था, उसे आफिस में सिर्फ़ **6** दिन हुए थे मुसलमानों का आख़िरी बड़ा बने जब उसने ब्रिटीश को **28** अक्टूबर **1857** को हिंदुस्तान के मुसलमानों पर दिल्ली में लूट मार और ज़ुल्म करने के लिए मुबारकबाद दी।

उससे पहले ब्रिटीश ने उसमानिया सलतनत से अपने फौजियों को मिस्र के रास्ते भारत भेजने की इजाज़त तलब की ताकि ये फौजी इन मुसलमानों को कुचल सकें जिन्होंने हिंदुस्तान में अंग्रेज़ों के मज़ालिम के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी थी। ये इजाज़त अंग्रेज़ जासूसों की मदद से ब्रिटीश को मिल गई।

ब्रिटीश ने हिंदुस्तान में नए स्कूल खोलने पर पाबंदी लगादी, बल्कि उन्होने सारे मदरसे और प्रइामरी स्कूल भी बंद करवा दिए जो इस्लामी शरीअत की बुनियादी और इमतियाज़ थे, और उन्होने सारे आलिमों और मज़हबी मुंतज़मीन को भी शहीद कर दिया गया जो अवाम की रहनुमाई कर सकते थे। इस मोके पर हम मुनासिब समझते हैं के एक सच्ची कहानी बयान करते हैं जो हमारे एक दोस्त ने हमें हिंदुस्तान और पाकिस्तान के सफ़र के वापसी पर सुनाई **1391** [ए.डी. **1971**]।

“सरहिंद शहर में औलिया इमामे रब्बानी और दूसरे कददस अल्लाह सिरहू के मज़ारों पर जाने के बाद, मैं पहले पानीपत शहर और फिर दिल्ली चला गया। पानीपत की सबसे बड़ी मस्जिद में जुमें की नमाज़ अदा की। उसके बाद इमाम की दावत पर उनके घर चला गया। रास्ते में, मैंने एक बड़ा दरवाज़ा देखा जो मेटी कड़ियों वाली ज़ंज़ीर के साथ बाँध दिया गया था। दरवाज़े पर लगे कुतबे से मालूम होता था के वो प्राइमरी स्कूल हुआा करता था। मैंने इमाम से पूछा ये बंद क्यों हैं। इमाम ने बताया ये **1367** [ए.डी. **1947**] से बंद हैं। ब्रिटीश ने हिंदुओं को अपना आला बनाकर इस कज़बे के तमाम मुसलमान मर्द, औरत, बच्चों और बूढ़ों को कत्ल करवाया। ये उस दिन से बंद हैं। ये ज़ंज़ीर

और ताला हमें अंग्रेज़ों की उस ज़ुल्म और सफ़ाफ़ाकी की याद दिलाता है। हम लोग तो महालरीन हैं जो बाद में आकर यहाँ बस गए।"

अंग्रेज़ों ने तमाम इस्लामी आलिमों, इस्लामी किताबों और इस्लामी स्कूलों का ख़ात्मा कर दिया, और यही वो अमल हैं जो वो तमाम मुसलमान मुल्कों के साथ अपनाते हैं। इस तरह इन चीज़ों के ख़ात्में से नौजवान नसल को तमाम दीनी इकदार से नाआशना ओर बैगाना कर दिया गया।

बदनाम अंग्रेज़ लार्ड मिकाले जैसे ही **1834** में कलकत्ता पहुँचा, उसने तमाम इकसाम की अरबी और फारसी इशाअत पर पाबंदी लगादी और हुकूम दिया के जो किताबें इशाअत के मरहले में हैं उन्हें बंद कर दिया जाए, और उसके इस बरताओ की अंग्रेज़ रफ़ीककारों ने इंतेहाई हिमायत की। ये ज़ुल्म सिर्फ़ मुस्लिम अकसरियत के इलाकों, ख़ासतौर से बंगाल में लागू किया गया।

हिंदुस्तान में एक तरफ़ तो ब्रिटीशो ने इस्लमी मदरसें बंद कर दिए और दूसरी तरफ़ **165** कॉलिज खोले, जिन में से आठ लड़कियों के लिए थे। जो तालिबे इल्म इन कालिजों में पढ़ते थे उनका ब्रेन वाश करके उन्हें उनके बापो के मज़हब, और आबाओ अजदाद से मुख़्तलिफ़ बनाया जा रहा था। जिस अग्रेज़ फौज ने हिंदुस्तान में मज़कूरा मज़ालिम और वहशियाना अमाल का जुर्म किया उस फौज का दो तिहाई उन मकामी लोगों पर मुशतमिल था जिन का ब्रेन वाश करके उन्हें अपनी कौम का मुख़्तलिफ़ बनाकर ईसाइ या बिकाऊ बना दिया गया। **1249** [सी.ई. **1833**] में नाफ़िज़ किए जाने वाले कानून ने ईसाई सरगरमियों के फ़ैलाओ और प्राटेस्ट फ़िरके इस्तहकाम में मदद दी। इन ईसाई अज़ाईम व हरकात के फ़ैलाओ और हिंदुस्तान के मुकम्मल तौर पर अग्रेज़ों की हुकूमती में आने से पहले ब्रिटीश मुसलमानों के मज़हबी अकाइद का एहतराम करता था; मुसलमानों की मज़हबी छुट्टियों को मानने के लिए वो लोग तौप के गोलों से धमाके करते थे, उनकी मस्जिदों और दूसरी इबादत गाहों

की तामीर में मदद की पेशकश करते थे, यहाँ तक के मुकददस अदारों और जगाहों मसलन मसाजिद मदरसे और मज़ारो वग़ेरा की तामीर में भी हिस्सा लिया करते थे। **1833** और **1838** में ब्रिटीश से आने वाले महकमों के पैग़ामात में अग्रेज़ों को इस किस्म की चीज़ों में हिस्सा लेने से मना कर दिया गया। जैसा के ये बातें साबित करती हैं के इस्लाम मज़हब पर हमला करने के लिए जो मंसूबे उन्होने बनाए थे वो पहले दुनिया के मुसलमानों को दोस्त और मददगार बनकर धोका देना था और ये जज़बा उन्होने दूर दूर तक फ़ैलाया के वो मुसलमानों से मौहब्बत रखते हैं और इस्लाम की खिदमत करना चाहतें हैं, और फिर, ये मकसद हासिल करने के बाद, आहिस्ता आहिस्ता सारी इस्लामी ज़रूरयात, किताबें, स्कूलों, और आलिमों को तहस नहस कर दिया जाए। ये उनकी दोहरी पॉलिसी मुसलमानों के लिए बहुत नुकसान वाली रहीं बल्कि इस्लाम के लिए तबाहकुत रहीं।

बाद में, उन्होने अंग्रेज़ी को सरकारी ज़बान करार दिलाने और मकामी लोगों की नई नसल को ईसाई बनाने की कोशिश और तेज़ करदी। इस मकसद में कामयाबी के लिए उन्होने ऐसे स्कूल कायम किए जो पूरे तौर पर मिशनरियों के काबू में थे। दर हकीकत, ब्रिटीश के वज़ीर आज़म लार्ड पालर्मसटन और दूसरे कई ब्रिटीश लार्डस कहा करते थे के "खुदा ने ब्रिटीश को हिंदुस्तान इसलिए दिया है ताकि हिंदुस्तानी लोग ईसाइयत की नस्लों को हासिल करके उनका मज़ा ले सकें।"

लार्ड मिकाले ने अपनी सारी ताकत और मदद इस बात पर लगा दी के हिंदुस्तान में एक ब्रिटीश कौम कायम की जाए जो रंग और खून में हिंदुस्तानी हो लेकिन इच्छाओं, सोच, खयालात, अखलाक और ज़हनी पहुँच में अंग्रेज़ हों। इसलिए, ईसाइयों के कायम करदा स्कूलों में ज़्यादा ध्यान और वक्त अंग्रेज़ी ज़बान और अदब और ईसाइयत की तालीमात पर था। सांईसी इल्म, (जैसे के हिसाब, फ़िज़िक्स कैमिस्टरी, वग़ैरह), को पूरे तौर पर नज़रअंदाज़

कर दिया गया था। इस तरह ऐसे लोगों की तादाद पैदा की गई जो सिवाए अंग्रेज़ी ज़बान के और अदब के कुछ और नहीं आता था। फिर इन लोगों को शहरी इंतेज़ामिया में नौकरियाँ दी गई।

इस्लामी कानून हैं के जो शख्स अपना ईमान छोड़ेगा वो एक मुरतदद बन जाएगा, जबकि हिंदू भी, उसको जो हिंदू मज़हब से दूर हो जाए उन्हें ग़ैर मज़हब करार दे देते हैं, लोग जो ईसाइयत अपना लेते थे वो अपने वालदेन की जाएदाद हासिल नहीं कर सकते थे। इन कानून को ख़त्म करने के लिए, मिशनरियों ने एक कानून बनाया, जिसे पहले **1832** में बंगाल में लागू किया गया, और उसके बाद **1850** में, पूरे हिंदुस्तान में लागू किया गया, इस तरह, इससे ये मुमकिन हुआ के ईसाइयत अपनाने वाले मुरतदिद और ग़ैर मज़हबियों को अपने वालदेन की जाएदाद में हिस्सा मिल सकें। इस वजह से, हिंदुस्तान में मौजूद अंग्रेज़ी स्कूलों को अंग्रेज़ी हिंदुस्तानी **शैतानी रजिस्टर** बोला करते थे। [हिंदुस्तान में और उस्मानिया सलतनत में सरकारी ब्यूरों और अदारों को दफ़तर (रजिस्टर) कहा जाता था।] फ्रेंच लेखक marcalle permean जब वापिस चला गया तो एक किताब शाय की। वो अपनी इस किताब में कहता हैं, “कलकत्ता, हिंदुस्तान का सबसे बुनियादी शहर, इतनी ज़्यादा ख़राब हालत में था के लंदन और पैरिस के आस पास में मौजूद गुरबत से बदहाल बस्तियाँ भी उसकी मिसाल देने के लिए इंतेहाई नाकाफ़ी हैं। लोग और जानवर एक साथ कोठरियों में रहते हुए, रोते हुए बच्चे और तड़पते हुए बीमार लोग। इसके अलावा तुम ऐसे लोग भी देखोगे जो लगातार शराब और मंशियात के इस्तेमाल की वजह से, ज़मीन पर इस तरह लेटे हुर जैसे कोई मरे हुए लोग। इन बेहद भूके, मुसिबत के मारे, कमज़ोर और थके हुए लोगों को देखकर, कोई शख्स भी अपने आप से ये सवाल करने की हिम्मत नहीं कर सकता के ये लोग ज़मीन पर क्या कर सकते हैं।

"लोगों के झूठ कारखानों की तरफ़ घसीटते चले जाते थे, और इन लोगों को ये कारखाने कितना अपने मुनाफ़ों में से देने वाले थे? ज़रूरतयात, मुशकलात, वबाई बीमारियाँ, शराब और मंशियात पहले से कमज़ोर, नहीफ़ और बेबस लोगों को तबाह व बरबाद कर रहे हैं। ज़मीन पर किसी और जगह इंसानी ज़िंदगी के साथ इतनी बेशर्मी और बदसलूकी वाला सुलूक नहीं किया जाता जितना के यहाँ पर। कोई काम और मेहनत यहाँ सख्त, मुश्किल और सहत के लिए नुकसान नहीं समझी जाती। अगर कोई मज़दूर मर जाता हैं तो उसकी कोई अहमियत नहीं हैं। उसकी जगह कोई दूसरा ले लेता हैं ब्रिटीश सरकार के लिए अगर कोई सोचने वाली बात हैं तो वो ये हे के किस तरह पैदावर और कीमतें बढ़ाई जाएँ और किस तरह ज़्यादा से ज़्यादा दौलत कमाई जाए।"

विलियमस जेंनिगस बरयन, एक साबिक यू .एस का खारजा सेक्रेटरी ने सबूतों के साथ साबित किया के ब्रिटीश सरकार रूस से ज़्यादा ज़ालिम और कमीने थे; जो बयान उसने अपनी किताब **हिंदुस्तान में ब्रिटीश सरकार british domination in india** में लिखा हैं वो मंदरजाज़ेल हैं: "हिंदुस्तानी लोगों की ज़िंदगी को भलाई और खुशी से सरफ़राज़ करने का दावा करने वाली ब्रिटीशो ने लाखों हिंदुस्तानियों को उनकी कब्रों तक पहुँचाया। ये कौम (अंग्रेज़) जो हर जगाह शेखी घाड़ती फिरती हैं के उसने कानूनी अदालतें और नज़मों ज़बत कायम किया दरहकीकत इस कौम ने हिंदुस्तान को सियासी ग़बन के ज़रिए उसकी बुनियादों तक लूट ड़ाला। डाकाज़ानी शायद किसी हद तक एक सही नाम हो ताहम कोई दूसरा लफ़ज़ अंग्रेज़ों की सफ़फ़ाकी को इतनी अच्छी तरह बयान नहीं कर सकता।

"ईसाई होने का दावा करने वाले अंग्रेज़ो का ज़मीर इस बात पर भी राज़ी नहीं होता के वो हिंदुस्तान के मुसलमानों की मदद के लिए पुकारी गई आवाज़ सुनें।"

मिस्टर होडबर्ट केमबटन/mister hodbert kembtan ने अपनी किताब **हिंदुस्तानी की ज़िंदगी।life of the india** में कहा, "एक हिंदुस्तानी अपने आका [अंग्रेज़] के ज़रिए अज़िज़यत दिया जाता हैं, ताहम वो फिर भी तब तक काम करता रहता हैं जब तक के वो अपना सब कुछ गंवा नहीं देता, जब तक वो मर नहीं जाता।"

हिंदुस्तानी मुसलमान जिन्हें ब्रिटीश की दूसरी नौआबादियों में नौकरियाँ दी गई थीं वो उससे ज़्यादा बदतर हालत में थे।**1834** में ब्रिटीश सनतकारों ने अफ्रीकियों के बजाए हिंदुस्तानी मज़दूरों को भरती करना शूरू किया।हज़ारों मुसलमान हिंदुस्तान से साऊथ अफ्रीकी नौआबादी में भेजे गए।इन मज़दूरों की हालतें जिन्हें **कूली** कहा जाता था, गुलामों से भी खराब थी।उन्हें एक समझौते जिसे **दस्तावेज़ मज़दूर** कहा जाता था उसके तहत बेबस कर दिया जाता था।इस समझौते के मुताबिक, कूली को पाँच साल के लिए दस्तावेज़ी तौर पर महदूद कर दिया जाता था।इस अरसे के दौरान वो ना तो अपना काम छोड़ सकता था और नही शादी कर सकता था; उसे दिन ओर रात रोते हुए कोड़ो के नीचे काम करना होगा।मज़ीद ये के उसे सालाना तीन ब्रिटीश सोने के सिक्के टेक्स के तौर पर देने होंगे। "ये हकीकतें पूरी दुनिया में इशाअत के ज़रिए एलान की गई जैसे के **हिंदुस्तान में मज़दूर, post–lecture in the university of new York**"

गाँधी, एक मश्हूर हिंदुस्तानी हुकमरान, ब्रिटेन से तालिम हासिल करके हिंदुस्तान वापिस आए।वो एक ईसाईयत वज़न हिंदुस्तानी बेटे थे।दरहकीकत, उनका बाप पोरबंदर शहर के थे।जब **1311** [ए. डी. **1893**] में उन्हें ब्रिटीश कंपनी की तरफ़ से जुनबी अफ्रीका भैजा गया और उन्होने वहाँ हिंदुस्तानियों की हालत देखी और कितने वहशयाना बरताव उनके साथ किया जाता था वो सब देखकर, उन्होने अंग्रेज़ो के खिलाफ़ जदोजहद शुरू करदी।हालाँकी वो ई साईयत ज़दा शख्स का बेटे थे फिर भी ब्रिटीश जुल्म और सफ़्फ़ाकी बरदाशत

नहीं कर पाए। ये उनका उस तहरीक तरफ़ पहला कदम था जो तहरीक बाद में उनकी शौहरत का बाइस बनी।

ब्रिटीश ने तमाम मुस्लिम दुनिया पर जिस हिकमत अमली का मुज़ाहिरा किया उसकी बुनियादें इस तीन हरफ़ी नारे पर मुबनी हैं: "उनके ईमान को तोड़ दो, तबाह करदो और उस पर हुकूमरानी करो।"

उन्होने अपनी इस पालिसी/हिकमत अमली को हर मुमकिन पूरा किया, चाहे किसी भी तरह।

सबसे पहली चीज़ जो उन्होने हिंदुस्तान में ढूँढी वो थी ऐसे लोगों की तलाश जो उनकी ख़िदमत कर सकें। उन लोंगों का इस्तेमाल करके, उन्होने फितने की आग भड़काई। इस मकसद के लिए सबसे मुनासिब हिंदू थे जो मुसलमानों की हुकूमत में रहें थे, इसलिए उन्होने इन लोगों को इस्तेमाल किया। हिंदू मुसलमानों की मुनसिफ़ाना हुकूमरानी में अमल भरी ज़िंदगी गुज़ार रहे थे, जब अंग्रेज़ों ने उन तक रसाई हासिल की और उन्हें इस बात पर उकसाया के हिंदुस्तान के असल मालिक वो हैं और ये के मुसलमान मज़हबी कुरबानी के नाम पर हिंदूओं के ख़ुदाओं को कत्ल कर रहें हैं, और ये के इस अमल को जल्द ही ख़त्म कर देना चाहिए। अब हिंदू उनकी तरफ़ हो गए। उन्होने कुछ को उजरती सिपाहियों के तौर पर भरती कर लिया। इस तरह इस्लाम के ख़िलाफ़ हिंदूओं की नफ़रत, अंग्रेज़ो की बरबरियत और दौलत की लालच को साथ मिलाकर मलका एलीज़ेबथ/queen Elizabeth की एक फौज की तशकील की नसीहत को पूरा किया गया। मुसलमान गर्वनर और हिंदू महाराजाओं के बीच में इख़्तलाफ़ पैदा किए गए। इसी दौरान, नापुख़्ता ईमान वाले मुसलमानों को भी ख़रीद लिया गया।

अंग्रेज़ sir lord strachey, जो कई मरतबा मकामे बादशाह के तौर पर काम कर चुका था और जो (हिंदुस्तानी तंज़ीम) एक रूकन भी था, मुस्लिम-हिंदू दुश्मनी के बारे में वो कहता हैं, "जो कुछ भी किया जाएगा हुकूमरानी करने के लिए या इख्तलाफ़ पैदा करने के लिए, वो हमारी सरकार की पालिसी के मुताबिक होगा। हमारी पालिसी के लिए सबसे बड़ी मददगार हिंदुस्तान में मौजूदा दो खुदमुख्तार समाज हैं जो एक दूसरे के खिलाफ़ हैं।" इस बरबरियत को सगीन बनाने के लिए ब्रिटीश **1164** [ए. डी. **1750**] से **1287** [ए. डी. **1870**] तक हिंदुओ की मदद लगातार करती रही और मुसलमानों के खिलाफ़ सारी लूट मार और कत्लों ग़ारत में उनका साथ दिया।

1858 से हिंदु-मुस्लिम झगड़े बढ़ते ही चले गए। अंग्रेज़ हिंदुओं को मुसलमानों के खिलाफ़ भड़काते और फिर जब हिंदू हमला करते तो उसे बैठकर मज़े लेते। कोई एक साल भी उन खूनी वाकयात और फितना अंग्रेज़ फसादात के बग़ैर नहीं गुज़ारा जो गाय को मज़हबी कुरबानी के तौर मानने से शुरू होते और सैंकड़ो बल्कि हज़ारों मुसलमानों की मौत पर खत्म होते। दोनो इतराफ़ से फितना और फसाद कराया। कहने के लिए एक तरफ़ मुसलमनों में ये यकीन फैला दिया के एक गाय की कुरबानी सात भेड़ों की कुरबानी से ज़्यादा पाक होगी, जबकि दूसरी तरफ़, हिंदुओं में ये अफ़वाह फैलाई गई के अपने खुदाओं को मौत से बचाना उन्हें दूसरे जहान में ज़्यादा सवाब दिलाएगा। उनकी ये फितना उनके हिंदुस्तान से जाने के बाद भी जारी रहा। हम इस हकीकत की वज़ाहत एक वाक्य से करना चाहेंगे जो **इतलाऊत** नामी रिसाले में लिखा हुआ था, जिसे ईरान में वज़ीरे आज़म मुसददीक के वक्त में शाए किया गया।

एक कुरबानी वाले दिन दो दाढ़ी वाले मुसलमान पगड़ियाँ शैर चौगे पहने हुए एक गाय को कुरबानी के लिए खरीद कर लाए। घर के रास्ते में, जब वो एक हिंदू इलाके से गुज़र रहे थे, एक हिंदू ने उन्हें रोका और पूछा के वो गाय के साथ किया करेंगे। जब उन्होने कहा वो उसकी कुरबानी करेंगे, तो हिंदू

चिल्लाने लगा, "ए, लोगों! मदद! ये आदमी हमारे खुदा को कत्ल करने के लिए ले जा रहा हैं।" और दोनो मुसलमान भी चिल्लाए, "ए मुसलमानों! मदद! ये लोग हमारी कुरबानी पर कब्ज़ा कर रहें हैं।" हिंदू और मुसलमान उस जगह पर जमा हो गए और लाठियों और चाकूओं से लड़ाई करनी शुरू करदी। सैकड़ों मुसलमान मारे गए। बाद, में, वो दो लोग जो हिंदुओं के इलाके से गाय ले जा रहें थे, ब्रिटिश सिगरतखाने में जाते हुए देखे गए। इससे ये नतीजा निकला के ये वाक्या अंग्रेज़ों के ज़रिए भड़काया गया। वो मरासला निगार जिसने ये वाक्या बयान किया मज़ीद कहता हैं, "हम जानते हैं तुमने मुसलमानों के कुरबानी के दिन को किस तरह खराब किया।" इस किस्म की तरकीबों और दूसरे लातादाद मज़ालिम से उन्होने मुसलमानों को तबाह और बरबाद करने की कोशिश की।

नोट : कुरबानी का दिन मुसलमानों के मज़हबी दिनों में से एक दिन जिसमें वो एक भेड़, एक गाए या एक ऊँट को मज़हबी तौर पर कुरबान करते हैं।)

बाद में, जब उन्होने देखा के हिंदू आहिस्ता आहिस्ता उनके खिलाफ़ उठ रहें हैं, तो **1287** [ए.डी. **1870**] से हिंदुओं के खिलाफ़ मुसलमानों की मदद शुरू करदी।

फिर ऐसे अजीब मुसलमान नमूदार हुए जिनके नाम तो मुसलमान थे मगर वो अहल-अस सुन्नत के खिलाफ़ थे, वो कहते थे तलवार से जिहाद करना फर्ज़ नहीं हैं, और उन चीज़ों को हालाल करार देते थे। जिन्हें इस्लाम ने हराम करार दिया था और इस्लाम के ईमान के उसूलों को बदलने की कोशिश की। सर सय्यद अहमद, गुलाम कादियान, अब्दुल्लाह अहमद ग़ज़नवी, इसमाईल दहलवी, नज़ीर हुसैन दहलवी, सिदिक हसन खान भोपाली, राशीद अहमद कनकुही, वहीद उज़-ज़मान हेदर आबादी, अशरफ़ अली तहानवी, और मुहम्मद इसहाक, जो शाह अब्दुल अज़ीज़ के पोते थे, वो उनमें से चंद थे। इन लोगों की

हिमायत करके, अंग्रेज़ों ने दूसरे नए फिरके पैदा कराए। उन्होने लोगों को इन फिरकों को मनाने के लिए जददाजिहद शुरू करदी।

इन फिरकों में सबसे बुरा **कादियानी** फिरका था, जो **1296** [ए.डी. **1879**] में नमूदार हुआ। उसके बानी गुलाम अहमद कहता था के ये फर्ज़ है (इस्लाम के एहकामात) के जिहाद (मज़हबी जंग) किया जाए असलह के इस्तेमाल के ज़रिए और जो जिहाद फर्ज़ हैं वो नसीहत हैं। बिल्कुल यही बात अंग्रेज़ी जासूस हेमफ़र ने नजदी मोहम्मद से कही थी।

गुलाम अहमद एक मुनाफ़िक था जो इसाईली ग्रुप से तअल्लुक रखता था। वो **1326** [सी.ई. **1908**] में मर गया ब्रिटीशे ने उसे रकम के ज़रिए खरीदा था। पहले पहल उसने मुजददीद होने का दावा किया; फिर उसने अपने वादे को आगे बढ़ाते हुए कहा के वो वादा करदा महंदी हैं; उसका अगला कदम था के वो ईसा मसीह है। आखिरकार, उसने ये एलान किया के वो एक नबी हैं जिसे एक नए मज़हब के साथ मबऊस किया गया है। जो लोग उसके धोके में आ गए, वो उन्हें अपनी उम्मत कहता था और दावा करता था के कुरआनी आयत में उसकी आमद का पहले से बताया गया है और ये के उसने किसी भी दूसरे नबी से ज़्यादा चमत्कार दिखाए हैं। उसने इलज़ाम लगाया जो उसकी बात नहीं मानेंगे वो काफ़िर हो जाएंगे। उसका फिरका पंजाब और बम्बई के जाहिल लोगों में फ़ैलता गया। कादयानी फिरका अभी तक यूरोप और अमरिका में **अहमदिया** के नाम पर फैल रहा हैं।

सुन्नी मुसलमानों का कहना था के असलेह की मद से जिहाद करना फर्ज़ हैं और ब्रिटीश की खिदमत करना बिदअत हैं। जो मुसलमान ये बाते बताते या मश्वरा देते उन्हें ज़ालिमाना तरीके से सज़ा दी जाती और अकसरियत को कत्ल कर दिया जाता। सुन्नी किताबों को जमा करके उन्हें तबाह कर दिया जाता।

इस्लामी आलिम जिन्हें खरीदा नहीं जा सकता था या जो ब्रिटीश के मकासिद पूरे नहीं करते थे उन्हें मुसलमान कौम से अला कर दिया जाता। उन्हें फ़ाँसी नहीं दी जाती थी के कहीं वो मश्हूर न हो जाएँ, बल्कि उन्हें अंडामान जज़ीरे की बदनाम ज़ेरे ज़मीन कोठरियों में ऊपर कैद कर दिया जाता था। तमाम मुसलमान आलिमों को दौराने इंकलाब बाग़ियों का साथ देने के बदले में इसी ज़ेरे ज़मीन कोठरियों में कैद किया जाता था। [बिल्कुल उसी तरह, जब उन्होने पहली जंगे अज़ीम के बाद उसमानिया पाशा और आलिमों को जिलावतन करके मालटा के जज़ीरे पर भेज दिया था।]

मुसलमान को धोका देने के लिए के वो उनकी इस्लाम के ख़िलाफ़ बुग्ज़ समझ नहीं पाएँ, उन्होने फतवे जारी किए जो हिंदुस्तान को दारूल हर्ब के बजाए दारूल-इस्लाम करार देते थे, और इन फतवों को सब तरफ़ फैलाया।

ब्रिटीश ने जिन मुनाफ़िकों की तरबीयत की उन्हें आलिमों का रूप दिया। इन मुनाफ़कीन ने इस तासिर की इशाअत की के उसमानी सुलतान ख़लीफ़ा नहीं थे। और ख़िलाफ़त सिर्फ़ कुरेशियों के लिए हैं जबकि उसमानी सुलतानों ने ताकत के ज़रिए ख़िलाफ़त पर कबज़ा जमाया और इसलिए इनकी इताअत नहीं की जानी चाहिए।

[अहदीस शरीफ़, "ख़लीफ़ा **कुरैशी कबीले से होगा**, (अपनी नसल से), का मतलब हैं," अगर वहाँ कुरैशी मौजूद हों, [मिसाल के तौर पर सय्यद] उनके दरमियान जो ख़लीफ़ा होने के शराईत पूरी करता हो, तो तुम्हें उनमें से एक शख्स को अहमियत देनी होगी। अगर वहाँ ऐसा कोई आदमी मौजूद नहीं तो किसी ओर को मुंतख़िब करना होगा। अगर एक शख्स जिसे ख़लीफ़ा तो मंतख़िब नहीं किया गया और ताकत या लडाई के ज़रिए हिमायत हासिल करले, तो उस शख्स की हिमायत की जानी चाहिए। क्योंकि ज़मीन पर एक ही

ख़लीफ़ा हो सकता है। तमाम मुसलमानों को उसकी फरमाबरदारी करनी चाहिए।]

मज़हबी तालीमात में बिगाड़ पैदा करने ओर इस्लाम को अंदरूनी तौर पर कमज़ोर करने के लिए अंग्रेज़ों ने अलीगढ़ में एक नाम निहाद इस्लामी मदरसा ओर एक इस्लामी यूनीर्वसिटी ख़ोली। इन स्कूलों में वो मज़हबी आदमी जो इस्लाम की तालीमात से परे था इस्लाम से जंग हार गया था। इन लोगो ने इस्लाम को काफी नुकसान पहुचाया। इन लोगो की एक टीम ब्रिटेन भेजी गई और उसे अंदर से इस्लाम को बरबाद करने की ट्रेनिंग दी गई, और उन्हे हुकमती दरजात दिये गए ताकी वो मुसलमानों के लीडर बन जाएं। अय्युब ख़ान जिसे पाकिस्तान का सदर बनाया गया उनमे से एक है।

हालांकी ब्रिटीश दूसरी जंग ए अज़ीम के विजेताओ मे से एक लगता हे, दरहकीकत, वो यह जंग हार गया था। ब्रिटेन, एक ऐसा मुल्क हैं जहाँ सूरज कभी डूबता नहीं, "जैसा के अंग्रेज़ अपनी ज़मीन के बारे में कहते हैं, के "एक ऐसा मुल्क जहाँ सूरज कभी निकलता नहीं" जंग के बाद अपनी तमाम नौआबादियों को खो दिया। और ऐसा बन चुका है जेसे मिसाल छिली मुर्गी।

अली जिन्नह, जिसे पाकिस्तान का सदर बनाया गया, वो एक शिया और ब्रिटिश पिठ्ठू था। जब उसका **1367** [ए. डी. **1948**] में इंतिकाल हुआ तो अयूब खान, एक फ्रीमेसन, उसने इंकलाब का नाटक करते हुए इकतेदार पर कब्ज़ा कर लिया। याहया खान जिसने इस काफ़िर की जगह ली, वो भी एक कटटर शिया था। जब पाकिस्तान और हिंदुस्तान के बीच **1392** [सी. ई. **1972**] के शुरू में होने वाली जंग में जब उसे हार हुई तो उसे मशरिकी पाकिस्तान से हाथ धोना पड़ा बल्कि उसे कैद भी कर दिया गया। **1971** में ही याहया खान ने हुकूमत ज़ुलफिकार अली भुटटो को सौंप दी थी, जो एक ब्रिटिश कारिंदा था और उसकी तालीम भी ब्रिटेन में हुई थी। **1974** में वो हुकूम

जो उसने अपने हरीफ़ों के कत्ल के लिए जारी किया था वही हुकूम उसकी अपनी फाँसी का बाइस बना।

ज़ियाऊल हक, जिसने जुलफ़कार अली भूटटो को हुकूमत से हटाया, वो इस्लाम और मुसलमानों को तबाह करने के मंसूबों को समझने के लिए काफ़ी अकलमंद था। उसने दुश्मनों की इच्छाओं और मकासिद को पूरे नहीं होने दिया। उसने अपने मुल्क में साईस, टेकनॉलोजी और आर्टस की तरक्की के लिए कोशिश की। वो इस बात को अच्छी तरह जानता था के इस्लाम ही सारे लोगों, खानदानों, समाज और पूरी कौम के लिए कामयाबी और भलाई का वाहिद ज़रिया हैं, इसलिए वो शरीअत के मुताबिक कानून बनाने का सोच रहा था। इसलिए ये सवाल उसने अपनी कौम के हवाले कर दिया। उसने एक राए ली/इसतिसबाब राय कराई और अवाम ने उसकी तज़वीज़ के हक में फैसला दिया। ब्रिटिश खलनायकों ने ज़िया उल हक्क और उसके आदमीयों को मरवा दिया और अपने आकाओं के लिए एक और बहतरीन ख़िदमत सर अंजाम दी। कुछ अरसे बाद अली भुट्टो की बेटी वज़ीर-ए-आज़म बनी जिस ने तमाम खलनायकों को बरी कर दिया जिन्हें मुल्क, कौम और इस्लाम के ख़िलफ़ मुख़तलिफ़ किस्म के जराईम की वजह से कैद किया गया था। उसने उन्हें आला सरकारी औहदे भी दिए। पाकिस्तान में हंगामों और फसादात की शुरूआत हुई। मआमलात की यही अबतर हालत ब्रिटिश हुकूमत की इच्छा थी।

पहली दूसरी बड़ी जँगों के बाद, बहुँत सारे मुल्कों में उन लोगों को बड़े मंसब दिए गए जो अंग्रज़ों के मंसूबों को अमली जामा पहनाकर ब्रिटिश के मफ़ादात की हिफाज़त करते थे। ऐसे मुल्कों के अपने कौमी तराने, कौमी परचम और सदर होते हैं, मगर वो फिर भी कभी मज़हबी आज़ादी हासिल नहीं कर सके।

पिछली तीन सदियों में तुर्की और इस्लामी दुनिया के ख़िलाफ़ जितनी भी गददारियाँ और बग़ावतें हुई उनकी जड़ों में अंग्रज़ो की साज़िशें कार फरमा थीं।

ब्रिटिश ने उसमानिया सलतनत को ख़त्म करके उसकी ज़मीन पर तेईस बड़ी और छोटी रियास्तें कायम कीं।ऐसा करने से उनका मकसद मुसलमानों को एक ताकतवर और अज़ीम रियास्त को कायम करने में रूकावट डालना था।

उन्होने हमेशा उन मुल्कों के बीच में जो इस्लामी मुल्क कहलाते थे बग़वतें और जंगो को फैलाए रखा।मिसाल के तौर पर उन्होने शाम में नौ/9 फीसद नुसरानियों को वहाँ का हाकिम बना दिया, जबकि सुन्नी वहाँ पर अकसियत में थे।1982 में मसलह फौजों ने हमा और हमस पर हमला करके, इन दोनो शहरों को उजाड़ दिया और निहथ्थे व बेबस सुन्नी मुसलमानों पर बम्बारी की।

उन्होने सच्चे सुन्नी आलिमों को कत्ल किया, कुरआन अल करीम की कापियों समेत बहुत सारी इस्लामी किताबों को ख़त्म कर दिया।फिर इन इस्लामी आलिमों के बजाए, वो मज़हबी तौर पर जाहिल, बिदअती लोगों को आगे लाए इन लोगों की तरबीयत ब्रिटिश ने की थी।इन लोगों में सेः **जमालउददीन अफग़ानी** 1254 [ए. डी. 1838] में अफ़ग़ानिस्तान में पैदा हुआ।उसने फलसफे की तालीम हासिल की।वो रूस के लिए अफ़गानिस्तान में जासूसी भी करता रहा।फिर वो मिस्र चला गया, जहाँ वो एक फ्रिमेसन बन गया और मेसोनिक लॉज का चीफ़ बन गया।मिस्र का अदिप इस-हाक अपनी किताब **एद-दुरएर** में बयान करता है के वो काहिरा की मेसोनिक लॉज का चीफ था।**les france-macons/लेस फ्रांचो मेचोनस** नामी किताब, जो 1960 में फ्रांच में छापी गई, उसके सफ़ह नम्बर 127 पर बयान किया गया है ः

“जमालउददीन अफ़गानी को मिस्र में मौजूद मेसोनिक लॉज का चीफ़ बना दिया गया, और उसके बाद मोहम्मद अबरोह ने उसकी जगह ली। उन्होने मुसलमानों के बीच में फ्रिमेसन निज़ाम को फैलाने में बड़ी मदद की। ”

अली पाशा, जो सुल्तान अबदुल मजीद और सुल्तान अब्दुल अज़ीज़ के दौर-ए-हुकूमत में पाँच मरतबा वज़ीर-ए आला के औहदे पर रहए वो एक फ्रीमेसन था जो ब्रिटिश लॉज से मुसलिक था। उसने अफ़गानी को इस्तानबुल आने की दावत दी। उसने उसे चंद फराईज़ सौंपे। उस वक्त के इस्तानबुल युनिवर्सिटी के रेक्टर, हसन तहसीन, जिसे एक फतबे के ज़रिए मुनाफिक करार दिया गया था, उसने अफ़ग़ानी से तकरीरें दिलवाई। हसन तहसीन ने, अपनी बारी में, मुसतफ़ा रशीद पाशा वज़ीरे आला से तरबीयत पाई जो ब्रिटिश मेसोनिक लॉज का मेमबर/रूकन था। अफ़ग़ानी ने अपने काफिराना ख्यालात व नज़रयात को दूर और पास फैलाने के लिए बहुत जद्धोजहद करी। उस वक्त के शैख्र-उल-इस्लाम हसन फहमी आफ़ंदी ने अफ़ग़ानी को गलत करार दिया और ये साबित किया के वो एक जाहिल मुनाफ़िक था। अली पाशा को इस्तानबुल से निकलवाना पड़ा। इस बार उसने अपने मुनाफ़काना इंकलाबी ख्यालत और मज़हबी इसलाहात को मिस्र में फैलाने की कोशिश की। उसने ब्रिटिश के खिलाफ़ **अराबी पाशा** की मदद करने का नाटक किया। उसने मुहम्मद अबदोह के साथ दोस्ती की जो उन दिनों मिस्र का मुफ़ती हुआ करता था। उसने इस्लाम में इस्तलाहात करने के नज़रयात से उसको भटकाया। मेसोनिक लॉज की मदद से उसने पेरिस और लंदन से एक रिसाला निकाल्लना शुरू किया। फिर वो ईरान चला गया। उसने वहाँ भी बरताव नहीं रखा। नतीजे के तौर पर उसे ज़ंज़ीरो में जकड़ कर उसे उसमानी सरहद के कहीं छोड़ दिया गया। ताहम वो किसी तरह बचकर बग़दाद चला गया, और फिर लंदन, जहाँ उसने ऐसे मज़ामीन लिखे जिन में ईरान पर तंकीद की जाती

थी। फिर उसके बाद वो इस्तानबुल चला गया और ईरान में भाइयों की मदद से मज़हब को सियासी मकसद के लिए इस्तेमाल करने लगा।

जमालउददीन अफ़गानी के जाल में फँसने वाला सबसे बदनाम शख्स जिसने मज़हब की आढ़ में इस्लाम का अंदरूनी तौर पर खात्मा करना चाहा वो मोहम्मद अब्दोह था, वो **1265** [ए.डी. **1905**] में वंही मरा। बेरूत में कुछ अरसा गुज़ारने के बाद, वो पेरिस चला गया, जहाँ वो जमालउददीन अफ़गानी के कामों में शामिल हो गया जिन्हें मेसोनिक लॉज की तरफ से तजवीज़ किया गया था। उन्होने एक **अल-उरवत-उल-वुसका-नामी** रिसाला निकालना शुरू किया। फिर वो वापिस मिस्र और बेरूत गया और उन इलाकों में मेसोनिक लॉज के फैसलों का अमली जामा पहचाने की कोशिश करने लगा। ब्रिटिश की हिमायत की वजह से वो काहिरा का मुफ़ती बन गया और अहल अस सुन्नत के लिए इंतेहाई ज़ालिमाना तरज़े अमल अपनाया। इस तरज़े अमल में जो पहला मदरसा के निसाब की बेहुरमती और उसे बिगाड़ना था ताकि नौजवान नसल को कीमती मज़हबी मालूमात के हुसूल से रोका जा सके। उसने युनिवर्सिटी में पढ़ाए जाने वाले मज़ामीन में तंसीख करवाई और सैकंडरी सतह पर पढ़ाई जाने वाली किताबें उनके निसाब में शामिल कराई। एक तरफ़ इन स्कूलों को इल्म गाहों का लिबादाह उढाया गया जबकि दूसरी तरफ इन स्कूलों में इस्लामी आलिमों को गालियाँ दी जाती थीं और उन पर ये इल्ज़ाम लगाया जाता था के यही आलिम सांईसी तालीम की राह में रूकावटें हैं, उसने ये दावा किया के अपने इल्म का इज़ाफ़ा करके वो इस्लाम को मज़ीद बहतर बनाएगा। उसने **इस्लाम और ईसाइयत** नामी एक किताब लिखी, जिसमें उसने कहा, "सारे मज़हब एक जैसे हैं। वो सिर्फ़ अपनी ज़ाहिरी शक्ल में मुख्तलिफ़ हैं। यहूदी, ईसाई और मुसलमानों को एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। "लंदन में एक पादरी को वो अपने खत में लिखता है, "मेरी ख्वाहिश है के मैं दो अज़ीम मज़हबों इस्लाम और ईसाईयत को हाथों में हाथ डालकर गले मिलते हुए देखना चाहता हूँ। फिर

तौरह और इंजिल/बाएबल और कुरआन एक दूसरे की मदद करने वाली किताबें बन जाएंगी, हर तरफ़ पढ़ी जाने वाली, और हर कौम के ज़रिए इज़्ज़त दी जाने वालीं।" जो मज़ीद इज़ाफ़ा करता है के उसे उम्मीद है के वो मुसलमानों को तौराह और बाएबल पढ़ते हुए देखेगा।

जो कुरआन अल करीम की तफ़सीर मे, जो **शालतुत** के तआतुन से लिखी थी, जामिया उल अज़हर के डिरैक्टर ने फतवा जारी किया के बैंक का सूद जाईज़ है। बाद में इस बात के डर से के इस बात पर उसे मुसलमानों के कहर का सामना करना पढ़ेगा तो उसने बहाना बनाया के वो इस सोच से दस्तबरदार हो चुका है।

हन्नाअबू राशिद, बेइरूत में मेसोनिक लॉज का सदर अपनी किताब **दाएरा-तुल-मआरिफ़-उल-मसुनिया** के **197** वें सफ़ह पर मंदरजाज़ेल एतराफ करता है, जिसे उसने **1381** [ए. डी. **1961**] में शाय कियाः "जमालउददीन अफ़ग़ानी मिस्र में मेसोनिक लॉज का चीफ़ था। लॉज के तकरीबन तीन सौ/**300** रूकन थे, जिनमें से ज़्यादातर आलिम और मुदब्बिर थे। उसके बाद मोहम्मद अबदोह, एक इमाम, एक मास्टर सदर बना। अब्दोह एक आला फ्रीमेसन था। कोई भी इस हकीकत से इंकार नहीं कर सकता के अरब मुल्कों में मेसोनिक रूह को उसी ने तरक्की दी।

एक और रूसवा बदनाम मुनाफ़िक जिसके बारे में ब्रिटिश सारे हिंदुस्तान में शोर मचाया करते थे के वो एक इस्लामी आलिम है, सर सय्यद देहली अहमद खाँ था। वो **1234** [ए. डी. **1818**] में देहली में पैदा हुआ। उसके बाप ने अकबर शाह के दौरे हुकूमत में हिंदुस्तान में हिजरत की थी। **1837** में उसने देहली में अपने ताया के सेक्रेटरी के तौर पर काम करना शुरू किया जो ब्रिटिश कानूनी अदालत का जज था। **1841** में उसे एक जज बना दिया गया और **1855** में आला जज के औहदे पर तरक्की दे दी गई।

एक और बदनाम नाम निहाद मज़हबी शख्स ब्रिटिश ने हिंदुस्तान में तालीम दी वो हैं हमीदउल्लाह। वो **1326** [ए. डी. **1908**] में हैदराबाद में पैदा हुआ, जहाँ इसमाईली ग्रुप अकसरियत में था। उसे इस्माईली ग्रुप में पाला गया और, इसलिए, वो अहल अस-सुन्ना का मुतअस्सिब मुखालिफ़ था। वो पेरिस में तहकीकी अदारे सी-एन-आर-एस का रूकन था। वो मुहम्मद अलैहि सलाम को सिर्फ मुसलमानों का नबी के तौर पर पहचान कराने की कोशिश करता रहा।

अंग्रेज़ों ने इस्लाम की तबाही की जंग में फतह हासिल करने के लिए सरगरम और काबिल मुसलमानों को धोके और जालसाज़ी के ज़रिए मात देने के लिए, ब्रिटिशों ने जो सबसे कारआमद हथियार इस्तेमाल किया वो था के इस्लाम को वक्त के मुताबिक अपनाया जाए, इसे जदीद बनाना चाहिए और साथ के साथ उसके हकीकी मआनी और रूह को भी बरकरार रखा जाए, ये धोका एक बार फिर ग़ैर मज़हबी मुआशरे के कायम की साज़िश थी। शैख-उल-इस्लाम मुसतफ़ा साबरी एफ़ंदी, एक अज़ीम आलिम, उन लोगों में से थे जिन्होने बयान दिया, "मज़हबों को आपस में मिलाने का मकसद है एक ऐसे रास्ते की तामीर जो गैर मज़हबियत की तरफ़ ले जाता है," इस तरह उन्होने वाज़ेह कर दिया के उनका असल मकसद किया है।

ब्रिटिश समेत इस्लाम के दुश्मनों ने बड़ी कोशिश से जद्दोजहद की के किसी भी तरह से दरवेशी खानकाहों और तसव्वुफ़ के रास्तों को बिगाड़ दिया जाए। उन्होने शरिअत के तीसरे जुज़ब अखलास को भी मिटाने की सख्त कोशिश की। तसव्वुफ़ के अज़ीम तरीन रहनुमाओं ने ना तो कभी सियासत से कोई लगाओ रखा और नहीं किसी शख्स से दुनियांवी फाएदे हासिल होने की उम्मीद रखीं। इन अज़ीम लोगों में से ज़्यादा तर फाज़िल मुजतहिद थे। क्योंकि, तसव्वुफ़ का मतलब मुहम्मद अलैहिसलाम के बताए हुए रास्ते की पैरवी करना हैं। दूसरे लफ़्ज़ों में, इसका मतलब हैं एक शख्स का अपने हर कौल और फ़ैल में सख्ती से शरीअत में कारबंद रहना। ताहम, एक लंबे अरसे तक, जाहिल,

गुनहगार लोग, और यहाँ तक के बेरूनी एजेंट भी अपने शर्मनाक मकासिद के हुसूल के लिए, इन अज़ीम तसव्वुफ़ के आदमियों का नाम इस्तेमाल करते रहें, और इस तरह इस्लामी मज़हब और उसकी शरीअत में बिगाड़ पैदा करते रहे। ज़िकर (मिसाल के तौर पर) का मतलब है अल्लाह तआला को याद करना। ये दरअसल दिल का कारोबार है। ज़िकर इंसान के दिल को अल्लाह तआला की मोहब्बत के आलावा हर तरह की मोहब्बत मसलन दुनिया की या दूसरी मख्लूक की मोहब्बत से साफ कर देता है, और इस तरह अल्लाह की मोहब्बत दिल में मज़बूती से कायम हो जाती है। ये ज़िकर नहीं हैं के लोगों के हुकूम में मर्द और औरतें एक साथ हो जाएँ और अजीब गरीब आवाज़ें निकालें। उन अज़ीम मज़हबी रहनुमाओं, असहाब-ए किराम का बताया हुआ रास्ता पहले ही भुलाया जा चुका है। अहमद इबनि तएमिया, एक मुनाफिक बग़ैर किसी मसलक के और तसव्वुफ़ का एक दुश्मन, उसे एक इस्लाम आलिम करार दे दिया गया। एक नया फिरका, जिसका नाम **वहाबिइज़म/wahabism** था, वो उसकी तकलीद में आया। ब्रिटेन की मदद और वहाबी मरकज़ो की मदद के ज़रिए जो उन्होने **राबिता-त-उल आलाम-इल-इस्लामी** के नाम से सारी दुनिया में कायम किया, वहाबीइज़म को सारी दुनिया में बढ़ावा देने के लिए उन्होने किताबें छापीं। बड़ी इमारतें जो उन्होने सारे मुल्कों में तामीर कीं इस इबारत के साथः 'इबनि तेएमिया मदरसा।' इबनि तएमिया की किताबों मुनाफिक ख्यालात की मिली जुली हैं और वो झूठ जो ब्रिटेनी जासूस हेम्फर के ज़रिए फैलाया गया जिसे **वहाबीइज़म** कहते हैं। अहल अस सुन्नत के आलिमों, सच्चे मुसलमानों ने, कई किताबें लिखीं जिसमें उन्होने लिखा के इबनि तैमिया की किताबें बिदअती हैं। उनमें से एक किताब जिसका नाम **अल-मकालात-उस-सुन्निया फी कशफ-ए-दलालात-ए-अहमद इबनि तएमिया**, शैख़ 'अबद-उर-रहमान' अबदुल्लाह बिन मुहम्मद हररी, के ज़रिए लिखी गई, जो सुमालिया के एक आलिम थे। वो आलिम हरार, शुमालिया, (आज वो इथ्थोपीया में हैं) में **1339**

[**1920** ए. डी.] में पैदा हुए। उनकी किताब बेरूत में **1414** [**1994** ए. डी.] में छपी और शाय हुई। ये किताब उन आलिमों की तफसीली बयानात हैं जिन्होंने इबनि तएमिया को मलामत की थी और उन आलिमों के ज़रिए लिखी गई कीमती किताबों की तफसील भी हैं। तसव्वुफ़ के खिलाफ़ दुश्मनी आम बदमाशी हैं सारे बिदअती फिरकों की जिन्हें वहाबीइज़म, बे-मज़हबीइज़म, reformism, सलफिया, कादियानी thrice mawdudism, और तबलीग़-ए-जमाअत कहते हैं, ये सारे ब्रिटेनी मंसूबे बाज़ो के ज़रिए मुंज़म और कायम किए गए थे।

इस्लाम के तमाम दुश्मन खास तौर से ब्रिटेन के मुसलमानों को साईन्स और टैक्नोलॉजी में पीछे रखने के लिए तमाम हरबे इस्तेमाल किए। मुसलमानों को तिजार और हुनर मंदी से रोक दिया गया। शराब, फहाशी और रंग रलियाँ और जूए जैसे अमाले बद को मकबले आम बनाया गया ताकि इस्लामी मुल्कों में मौजूद आला अखलाकी इकदार को आलूदा किया जाए और इस्लामी मुआशरत को तबाह किया जाए। बाज़नतिनी, आरमिनियाई और दूसरी ग़ैर मुस्लिम औरतों को लोगों को बिगाड़ने के लिए एजेंटों की तरह रखा गया। नौजवान लड़कियों को भ्रम के जालों के ज़रिए अपनी पाकिज़गी खोने पर वरग़लाया गया, जैसे के पैशन गाहें, डाँस कलब, और वो स्कूल जहाँ मॉडल और अदाकारा बनने की तरबीयत दी जाती थी। मुस्लिम बालदेन को तो अब भी इस सिलसिलें में बहुत कुछ करने की ज़रूरत हैं। उन्हें बेहद चौकस रहना होगा ताकि अपने बच्चों को इन नापाक लोगों के बिछाए हुए जालों में गिरने से बचा सकें।

अपने ज़वाल के सालों से कुछ अरसे पहले, उसमानिया सलतनत अपने तुल्ब/तालिबों और आला औहोददारों को तरबीयत के लिए यूरोप भेजा करती थी। उनमें से कुछ तालिबे इल्म और मुदब्बिर को मेसोनिक लॉज में शामिल होने पर राज़ी कर लिया जाता था। इस तरह वो लोग जिन्हें साईन्स और टैक्नोलॉजी का इल्म हासिल करना था उन्हें इस्लाम और उसमानिया

सलतनत को खत्म करने की चालें सिखाई जाने लगीं। इन लोगों में से जिस शख्स ने मुसलमानों ओर सलतनत को सब से ज़्यादा नुकसान पहुँचाया वो मुसतफा राशिद पाशा था। लंदन में उसका क्याम उसे इस्लाम के एक पक्के और अय्यार दुश्मन के तौर पर मुंज़म करने के लिए इंतेहाई मौंज़ूँ था। उसने सकोटिश मेसोनिक लॉज से तआवुन कर लिया। आखिरकार सुल्तान महमूद खान ने मुस्तफा राशिद पाशा के गददारी के आमाल की तरफ ध्यान दिया और उसे फाँसी पर चढ़ाने का हुकूम दिया; मगर अब बहुत देर हो चुकी थी, क्योंकि उसकी बाकी ज़िंदगी इतनी कम थी के वो अपने हुकूम को अमली जामा नहीं पहना सका। सुलतान की वफ़ात के बाद मुस्तफ़ा राशिद पाशा और उसके साथी वापिस इंस्तंबुल चले गए और इस्लाम और मुसलमानों को इतना शदीद नुकसान पहुँचाया जितना पहले कभी नहीं पहुँचाया गया था।

अबदुल मजीद खान, जो **1255** [ए. डी. **1839**] में बादशाह बना, उस वक्त सिर्फ़ **18** साल का था। वो बहुत कम उमर और नतर्जुबेकार था। उस के आस पास के आलिमों ने भी उसे नहीं समझाया। ये वही अरसा था जो उसमानी तारीख के लिए सबसे बड़ा और अफसोसनाक नुकताए ज़वाल का सबब बना और पूरी सलतनत को एक **ज़वाल पज़ीरी** की तरफ़ ले गया जहाँ से वो कभी बहतरी की जानिब वापिस ना आ सकी। सादा लूह और मासूम नौजवान बादशाह ब्रिटेन की चापलूसी में आ गया, वही ब्रिटेन जो इस्लाम का इंतेहाई अय्यार दुश्मन हैं, और स्कोटलैंड/सकाटिश मेसोनिक लॉज के ज़रिए तरबीयत दिए गए जाहिलों को आला इंतेज़ामी औहदो पर लगाया। वो रियास्त अंदरूनी तौर पर खत्म करने की उनकी पॉलिसी को समझने के लिए बहुत नासमझ था। और वहाँ पर उसे खबरदार करने वाला कोई नहीं था। इस्लाम की तबाही के नज़रये के तहत ब्रिटेन में **Scottish Masonic organization** कायम की गई, इसका एक इंतेहाई शातिर रूकन लार्ड रैडिंग/lord rading को ब्रिटेन सफ़ीर बनाकर इस्तंबुल भेजा गया। कुछ खुशामदी बयानात के साथ जैसे

के, “अगर तुम इस मुहज़्ज़ब और कामयाब वज़ीर को आला वज़ीर के औहदे पर फाईस करोगे तो ब्रिटेन सलतनत-ए और आपकी अज़ीम सलतनत के बीच तमाम इख्तलाफ़ात हल कर दिए जाएंगे, और अज़ीम उसमानिया सलतनत मआशियत, मुआशरत और फौज में तरक्की हासिल करेगी,” वो खलीफ़ा को राज़ी करने में कामयाब हो गया।

जैसे ही राशिद पाशा ने **1262** [ए. डी. **1846**] में आला वज़ीर के औहदे को संभाला, उसने बड़े शहरों में मेसोनिक लॉजो को खोलना शुरू किया, और इस मकसद के लिए उसने नाम निहाद **तंज़ीमात** [reorganization] के कानून को बुनियादों के तौर पर इस्तेमाल किया, ये कानून उसने लार्ड राडिंग की मदद से उस वक्त तैयार किया था जब वो **1253** में वज़िरे खारजा था और ये कानून **1255** में कानूनी तौर पर नाफिस कर दिया गया। जासूसी और गददारी के घरों ने काम करना शुरू कर दिया। नौजवान लोगों को बग़ैर किसी मज़हबी तालीम के तालीमयाफता बनाया जाने लगा। लंदन से मिलने वाले एहकामात पर काम करते हुए, वो, एक तरफ़ इंतेज़ामी, ज़रई और फौजी नज़्मों ज़बत को चलाया, इस तरह अपनी हरकात लोगों के सामने पैश कीं के लोगों की मुकम्मल तव्वजह उस तरफ बट गई, और, दूसरी तरफ, उन्होने इस्लामी अखलाकियात, बुजुर्गो की मुहब्बत और कौमी एकता को खत्म करना शुरू कर दिया। अपने मकासिद के लिए मौज़ूँ जासूसों/एजेंटो को तरबीयत देने के बाद उन्हें आला इंतेज़ामी औहदों पर फाइस किया। उस दौर में यूरोप फिज़िक्स और कैमिसटरी में बहुत तेज़ी से तरक्की कर रहा था। नई खोजें और इसलाहात की जा रही थीं और बहुत शानदार कारखाने और तकनीकी स्कूल खोले जा रहे थे। ये सब तरक्कियाँ उसमानिया सुल्तानों ने नज़रअंदाज़ कीं। इसके बरअकस, अहम मज़ामीन जैसे फातिह (मुहम्मद इस्तानबुल का फातेह) के दौर से मदरसों में निसाब में शामिल थे, वो हमेशा के लिए खारिज कर दिए गए। इसी तरह साईन्सी तालीम याफ़ता आलिमों के इल्म इस मुग़ालता

आमेज़ी से ज़ाया कर दिया गया के "मज़हबी आलिम को साईन्सी तालीम की कोई ज़रूरत नहीं।" फिर, बाद के आने वाले इस्लाम दुश्मनों ने मुसलमान बच्चों को ये कहकर इस्लाम से बैगाना करना चाहा के "मज़हबी आलिम साईन्स नहीं जानते। इसलिए वो जाहिल और पिछड़े हुए लोग हैं। "इस्लाम और मुसलमानों के लिए जो कुछ भी शदीद नुकसानदह होता था उसे जिद्दत और तरक्की का नाम दिया जाता था। रियास्त के लिए नुकसानदह कानून मंज़ूर करवाया जाता था। तुर्कियों को, जो मुल्क के असली मालिक थे, उन्हें दूसरे दरजे के शहरी का दरजा दिया जाता था।

वो मुसलमान जो अपने फौजी फराईज़ अदा करने में नाकाम रहते तो उन्हें दौलत की एक बड़ी जुर्माने तौर पर अदा करनी पड़ती जो उनकी पहुँच से बाहर होती थी, जबकि ग़ैर मुसलमानों को उसी जुर्म के लिए गैर अहम जुर्माना अदा करना पड़ता था। उसी मुल्क के बच्चों को ब्रिटिश की मोल ली हुई जंगों में शहीद किया जर हा था, मुल्क की सनअतें और तिजारत आहिस्ता ग़ैर मुस्लिमों और फ्रीमेसनो के हाथों में जा रही थीं ये सब कुछ रशीद पाशा ओर उसके गुलामों की साज़िशों का नतीजा था।

इस बात का इल्ज़ाम लगाते हुए के रूसी ज़ार निकोलस अव्वल यरूशलम में दकियानूसी ख्यालात के हासिल लोगों की आबदी को केथौलिक के खिलाफ़ भड़का रहा हैं, ब्रिटिश ने फ्रांस के बादशाह बोनापार्ट **3** से तुर्की ओर रूस के दरमियान होने वाली करिमियन जंग में शामिल होने का इसरार किया जो पहले ही बहिरए रोम के इरद गिरद के इलाकों में रूसी हुकूमत के कायम के ख्रदशे से काफी परेशान था। ये तआवुन दरहकीकत ब्रिटिश के फाएदे के लिए, राशिद पाशा की सिफारती हुनरमंदी के नतीजे में तुर्की अवाम के सामने पैश किया गया। सुल्तान ने बज़ाते खुद सबसे पहले इन तखरीबी कारवाइयों को महसूस किया जिन्हें दुश्मन झूठी आराईश ज़दा इशतेहार बाज़ी और नकली दोस्ती के ज़रिए छुपाने की कोशिश कर रहा था। वो इतनी कढ़वी

शर्मिन्दगी महसूस करता था के वो वकतन फवकतन अपने आपको महल के ज़ाती हिस्से में अपने आपको डांटा करता था और ग़मग़ीन तरीके से सिसकियाँ लिया करता था। वो बहुत कोशिश कर रहा था के कोई ऐसी राह निकाली जा सकें जिस के ज़रिए वो कौम और मुल्क को घूम की तरह खाने वाले दुश्मनों से लड़वा सके, और मातम ज़दा तरीके से अल्लाह तआला से मदद के लिए मिन्नत समाजत करता था। इसलिए, उसने राशिद पाशा को वज़ीरे आला के औहदे से कई मरतबा हटाया, ताहम कर बार ये अय्यार शख्स, जिसने अपने लिए कई खिताबात तलाश किए हुए थे जैसे 'अज़ीम' आरै 'आला', किसी भी तरह ये अपने हरीफ़ो को शिकस्त देकर अपनी पाज़िशन बहाल कर लेता था। बदकिस्मती से, सुल्तान के ग़म ओर शर्मिंदगी के शदीद एहसासात ने उसे तपेदिक टी बी जैसी खतरनाक बीमारी लगा दी जिसने जवान बादशाह की ज़िंदगी का जल्द ही खात्मा कर दिया। आने वाले सालों में मुसतफ़ा राशिद पाशा को सिर्फ़ ये यकीनी बनाना था के तमाम इंतेज़ामी औहदों युनिवर्सिटी की रूकनियत और कानूनी अदालतों की सदारत को उसके मानने वालो में तकसींम कर दिया जाए; और उसने ऐसा ही किया। इस तरह उसने उसमानी तारीख में ऐसे अरसे के लिए राह हमवार की जिसे **कहत-ए-रिजाल** (यानी काबिल शख्स की कमी) कहा जाता है और उसमानिया सलतनत **बीमार मर्द** कहलाने का बाइस बना।

उमर अकसा, मआशियत का एक प्रोफ़ेसर, **22** जनवरी **1989** को रोज़नामा **तुर्कियें** में छापने वाले अपने कॉलम में कहा, "**1839** का तंज़ीमात फरमान मग़ारिबी बनने की तहरीक की तरफ़ पहला कदम करार दिया जाता हैं। अभी तक ज़ाहिर नहीं हुआ के हम इस हकीकत से आगाह हो चुके हैं के हमें मग़रिब से सिर्फ टेक्नोलॉजी हासिल करनी चाहिए; दूसरी तरफ, सखाफ़त को कौमियत पर रहना चाहिए। हम मग़रिबयत को ईसाईयत को अपनाने से गरदानते हैं। मुसतफ़ा राशीद पाशा ने जो ब्रिटिश के साथ जो तिजारती

मुआहिदा किया वो हमारी सनतकारी के फरोग की कोशिश पर कारी ज़र्ब थी।"

१काच मेसोनिक लॉजो ने उसमानिया सलतनत पर अपना कब्ज़ा कायम कर लिया।बादशाह शहीद कर दिए।मुल्क और कौम के लिए हर कारआमद अमल पर एतराज़ात उठाए जाते थे।बार बार बग़ावतें और इंकलाब खड़े होते।इन नमक हरामों के खिलाफ़ सब से ज़्यादा जद्धोजहद करने वाला सुल्तान अब्दुल-हमीद खान **2** थे (उन्हें जन्नत में जगह मिले)।इसलिए उन्होने उसे "लाल सुल्तान करार दिया।सुल्तान अब्दुल हमीद ने सलतनत को मआशी तौर पर मज़बूत किया ।बड़ी तादाद में स्कूल और यूनिवर्सिटी खोलीं और मुल्क को तरक्की याफता बनाया।उनके बनाए हुए एक तिब्बी मकर्ज़ का यूरोप में कोई सानी नहीं था सिवाए उस एक इदारे के जो वियाना में था।**1293** [ए. डी. **1876**] में पॉलिटिकल साईंसिस का एक इदारा कायम किया गया।उन्होंने **1297** में कानून का शोबा और मोहतसिब का इदारा कायम किया।उन्होंने **1301** में एक ऐंजिनिअरिंग का इदारा कायम किया और लड़कियों के लिए एक अकामती हाई स्कूल।उन्होंने तरकोस झील से इस्तानबुल तक पानी लाने का बंदोबस्त किया।उन्होंने बुरसा में रेशम के कीड़े की अफ़ज़ाईश का स्कूल खुलवाया और हालका में ज़रई और हैवानी अदवियात व इलाज मुआलजें का मकर्ज़ खुलवाया।उन्होंने हमदिया में एक कागज़ की फैकटरी खुलवाई, कदिकोए में एक कोएला-गैस कारखाना कायम कराया, बेरूत बंदरगाह पर एक मालगोदाम तैयार कराया।उन्होंने उसमानिया बीमा कम्पनी कायम कराई।अरेगली और ज़नगाद में कोएले की खाने खुदवाई।पागलों के लिए एक पनाह गाह तामीर कराई, शिशली में हमदिया अतफ़ाल नामी अस्पताल कायम करवाया, और दार-उल किज़ा भी कायम कराया।उन्होंने अपने वक्त की दुनिया की सबसे ताकतवर फौज तशकील की।उन्होंने अपनी पुरानी और बौसिदा किशतियों जहाज़ों को गोलडन हार्न में लगावा दिया और बहरी बेड़े को

आला किस्म के तेज़रू जंगी जहाज़ों और जंगी किशतियों के ज़रिए से मज़ीद मज़बूत किया नई-नई यूरोप में बनाई गई थीं। उन्होंने इस्तंबुल-एसकीशहर-अंकारा, एसकीशहर-अदाना-बग़दाद, और अदाना- दमिशक-मदीना रेलवे लाईन बनवाई। इस तरह दुनिया का सबसे लंबा रेलवे निज़ाम उसमानिया सलतनत में था। अब्द उल-हमीद ख्रान (जन्नत में उन्हें जगाह मिले) के ये सारे काम आज तक बाकी हैं। आज भी जो लोग तुर्की में ट्रेन से सफर करेंगे वो ये देखकर फख्र महसूस करेंगे के तुर्की में तमाम रेलवे स्टेशन वही हैं जो अब्द उल हमीद ख्रान के दौरे हुकूमत में तामीर किए गए थे।

ब्रिटिशों की पुश्त पनाही और हौसला अफज़ाई से, यहूदियों ने फिलिस्तिनी इलाकों में एक यहूदी रियास्त कायम करने का मंसूबा बनाया। अब्दुल हमीद ख्रान जो उनकी सीहूनी हरकात और ख्रुव्वाहिशात की तह तक पहुँचने के लिए काफ़ी अकलमंद थे और इसीलिए यहूदियों को नसीहत की के वो फ़िल्सितिनी ज़मीन यहूदियों को न बेंचे। आलमी सीहूनी तज़ीम का सदर, डियोडोर हरतशल अपने साथ रब्बी मशे लेवी को लेकर सुल्तान अब्दुल हमीद से मिला और उससे दरख्वास्त की के यहूदियों को ज़मीन फरोख्त की जाए। सुल्तान का जवाब ये था: "मैं तुम्हें ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा भी न दूँगा यहाँ तक के दुनिया की तमाम रियास्तें मेरे पास आएँ और मेरे सामने दुनिया के तमाम ख्रज़ानों का ढेर लगादें तब भी नहीं। ये ज़मीन, जिस पर हमारे बुजुर्गों ने जाने कुरबान कीं और इसे आज तक महफ़ूज़ रख्रा, फरोख्र नहीं की जा सकती।"

इस पर यहूदियों ने union and progress नामी पार्टी से इशतराक कर लिया। ज़मीन पर मौजूद बदी की तमाम ताकतें सुल्तान के ख्रिलफ़ मिल गई, आख्रिरकार **1327** [सी.ई. **1909**] में उन्हे तख्त से उतार दिया गया और सारे मुसलमानों को यतीम कर दिया गया। इत्तेहाद व तरक्की जमाअत के

रहनुमाओं ने रियास्त के तमाम आला औहदों पर इस्लाम दुश्मनों और फ्रीमेसनों को भरती कर दिया। दरहकीकत, ख़ैरउल्लाह और मूसा काज़िम, जिन्हें उन्होने शैख़-उल-इस्लाम बनाया था, वो फ्रीमेसन थे। उन्होने पूरी रियास्त में ख़ून करवाया। बलकान और चनाकला (dardaneller) में लड़ी जाने वाली, रूस और फिलिस्तिनी जंगे, जो दरहकीकत ब्रिटिश पीठ्ठूओं की पैदा करदा थी, इन जंगों के ज़रिए से अब्दुल हमीद ख़ान की तशकील की हुई दुनिया की सब से बड़ी ताकतवर और मज़बूत फौज को ख़ुफ़िया मंसूबों और चालबाज़ी से तबाह कर दिया गया। उन्होने लाखो मासूस नौजवानों को शहीद कर दिया और मुल्क से फरार होकर अपनी गददाराना फितरत साबित कर दी। ये ग़ददार लोग मुल्क से ऐसे वक्त फरार हुए जब मुल्क को एकता और हिफ़ाज़त की पहले से कही ज़्यादा ज़रूरत थी।

हमारे ग़ैर मुस्लिम हमवतन जिन्हें गिरजो और उसमानिया सलतनत में कायम ईसाई स्कूलों में गुमराह किया जाता है उन्हें वरग़लाया गया के वो उस्मानी इंतेज़ामिया के ख़िलाफ़ बग़ावत करें। काली टोपियों वाले जासूस, जिन्हें आगे भेजा जाता था ऐसे नामों के साथ स्कूलों के उस्ताद और गिरजों के पादरी, और नाम निहाद अख़बारी मरासला निगारों के भैस में वो पैसा, असलह और तरग़ीब देते जहाँ भी जाते। बड़ी बग़ावतें शुरू हो जातीं। यूनानी गिरी अब भी तारीख़ के सफ़हात पर इंसानी जुल्म के नमूने के धब्बों की सुरत में मौजूद हैं। ये भी ब्रिटिश ही था जो यूनानियों को इज़मीर लाया। अल्लाह तआला ने तुर्क कौम पर इंतेहाइ रहम फरमाया जिसकी वजह से वो लोग आज़ादी की एक अज़ीम तहरीक के आख़िर में इस ख़ुबसूरत मुल्क का दिफ़ाऊ करने में कामयाब हुए।

जब उसमानिया सलतनत का ज़वाल हुआ तो, पूरी दुनिया एक बद नज़म रियास्त की शकल इख़्तियार कर गई। उसमानिया सलतनत मुख़्तलिफ रियास्तों के बीच फ़ाज़िल रियास्त का काम दें रही थी। वो मुसलमानों के लिए

एक मुहाफ़िज़ ओर काफ़िरों के लिए माने जंग थी। सुलतान अब्दुल हमीद के बाद, किसी भी मुल्क में अमनव सुकून न रहा। न ही यूरोप में लूट मार और कत्ले आम का सिलसिला कभी खत्म हुआ, जिसकी रियास्तें पहले जंगे अज़ीम अव्वल में घुसी, फिर जंगे अज़ीम दोम, और फिर कम्यूनिस्ट हमलों और जंग की चक्की में पिस्ती रहीं।

वो रियास्तें जिन्होने ब्रिटिश से हाथ मिलाया और पीछे से उसमानिया सलतनत पर हमला किया वो अब ऐसी हालत में थीं के ऐसा महसूस होता था के वो अब कभी अमल का मज़ा नहीं पा सकेंगी। वो लोग अपने बुरे काम पर इतने शार्मिंदा हुए के उन्होने दोबारा उस्मानी सुलतान के नाम से खुत्वा अदा करना शुरू कर दिया। जब आखिरकार फिलिसितिन में ब्रिटिश ने एक ईसाएईली रियास्त कायम करदी तो ये बहुत वाज़ेह हो गया के सलतनत उसमानिया की मौजूदगी में जो बरबरियत फिलिसितिनी झैल रहें हैं उसकी खबरें अखबारों में आती हैं और दुनिया भर में टेलिविज़न पर दिखाई जाती हैं। मिस्री वज़ीरे खारजा अहमद अबद उल मजीद ने **1990** में ये बयान दिया:

"मिस्र ने सबसे पुर अमन और पुर सुकून दिन उसमानी दौर में गुज़ारें।"

ऐसा मालूम होता हे के ईसाई मिशनरियों की मौजूदगी इन इलाकों में नागुज़ीर होती थी जहाँ अमेरिका और योरोप के ईसाई मफ़ादात मौजूद होते थे। ये मिश्नरी मफ़ादात के शिकारी और अमन व सुकून में बिगाड़ पैदा करने वाले हैं। जो हज़रत ईसा की इबादत भी करते हैं (अल्लाह तआला हमें ऐसे कुफ़र से बचने की तौफिक अता फरमाए)। उनकी सबसे अहम ड्यूटी ये है के जो मुल्क उन्हें सौंपे गए हैं उनको ईसाई मुल्कों का मोहताज बनाया जाए। मिशनरियों को जिन मुल्कों में जाना होता था वो इन मुल्कों की ज़ुबाने, रसूम और सखाफ़त मुकम्मल तौर पर सीख लेते थे। जैसे ही वो किसी मुल्क में

काम शुरू करते थे, वो उसकी सियासी हालतिए फौजी ताकत, जीऔग्रॉफ़ी हालतिए मआशी सतह, और मज़हबी ढाँचा का छोटी से छोटी मुकम्मल तफसील का मुतालआ करके, इन मालूमात को इन ईसाई मुल्कों को पहुँचाते जिनके लिए वो काम कर रहें होते थे। वो जहाँ कहीं भी जाते उन्हें मददगार अफराद मिल जाते और वो उन्हें रकम देकर खरीद लेते थे। अभी तक मकामी अफराद से मिलते जुलते नाम होने की वजह से वो या तो अब ईसाईयत ज़दा बिल्कुल जाहिल हैं या फिर बिके हुए नमक हराम।

उम्मीदवार मिशनरी को या तो उस मुल्क में तरबीयत दी जाती थी जिस मुल्क में उसे अपने मिशन को अमली जामा पहनाना होता था या फिर किसी ऐसे मिशनरी के ज़रिए से जो उस मुल्क का तरबीयत याफ़ता हो।

फ्रीमेसन, राशीद पाशा के तैयाद करदा ओर सरकारी एलाल **गुलहाने फरमान** के नतीजे में मिशनरी सरगरमियाँ नज़ीद बढ़ गई। अनातोलिया के खुबसूरत इलाकों में कॉलिज खोले जाने लगें। **फिरात कॉलिज 1276** [ए.डी. **1859**] में हज्रपत में खोला गया था। इस कॉलिज के क्याम के सिलसिले में खर्चे की किसी भी हद को नज़र में नहीं रखा गया। इसी दौरान हरपत की सतह पर **62** मिशनरी तंज़ीमें कायम की गई, और **21** गिरजे बनाए गए। आरमेनिया के **66** गाँव में मिश्नरी तंज़ीमें कायम की गई और कर तीन गाँव के लिए एक गिरजा तामीर किया गया। तमाम आरमिनियाई अफराद को उनकी उमर की परवाह किए बग़ैर उसमानियों का हरीफ़ बनाया गया और मिशनरी औंरतों और लड़कियों को वरग़लाते का कोई मौका ज़ाया न किया। एक बदनाम मिशनरी औरत मारिया ए वेस्ट ने अपनी किताब **रोमांस ऑफ मिशन/मिशन का इश्क** में वज़ाहत की, जिसे उसने बाद में छपायाः "हम आरमिनियों की रूह में घुस गए थे। हम उनकी ज़िदगियों में इंकलाब ले आए थे। " ये तरजे अमल आरमिनाई आबादी के साथ हर इलाके में रखा गया। ग़ाज़पंतयप का अतंप कॉलिज, मरज़फून का अनादोला कॉलिज, और इस्तानबुल का रार्बट कॉलिज उसकी चंद

मिसालें हैं। मिसाल के तौर पर मरज़फून कॉलिज में एक भी तुर्की तालिबे इल्म नहीं था। इसके **135** शार्गिदों में से, **108** आरमिनियाई थे और **27** बाज़नतिनी। ये तालिमे इल्म अनातोलिया इलाकों से जमा किए जाते और हास्टेल में रहते थे। डाएरैक्टर दूसरे इदारों की तरह एक पादरए था। इसी दौरान अनातोलिया में एक जौशिती तहरीक शुरू हुई। खुफिया आरमिनयाई तंज़ीम के बाग़ी इंतेहाई संगदिली से मुसलमानों को कत्ल कर रहे थे और मुसलमानों के गाँव को आग लगा रहे थे, वो उसमानियों के ज़िंदा रहने के हक को तसलीम न करते थे, और इस बात को भी मदद्दे नज़र रखते थे के यही लोग इस मुल्क के असल मालिक व मुहाफ़िज़ हैं। बाद में आरमिनयाई की शामत आई और उनका पीछा करने के बाद उनके खिलाफ़ बदले और इंतेकाम का एक ऑपरेशन **1311** [सी.ई. **1893**] में अमल में लाया गया, जहाँ पर पता चला के वो बाग़ी इसी कॉलिज की पैदावार थे और इसी कॉलिज में उन्होने अपनी सरगरमी अमली तए की थी, और ये के उनके सरगुना कॉलिज के दो उस्ताद थे जिनके नाम कयायान और तुमायान थे। इस राज़ के अफशान हो जाने पर मिशनरियों ने आलमगीर एहतेजाज शुरू कर दिया। इन दो शैतानी आरमिनयाइको बचाने के लिए अमेरिका और इंगलैण्ड में अज़ीम अवामी मुज़ारे शरू हो गए। ये कहना बाइसे हैरानी है के ये वाक्या ब्रिटिश और उसमानिया सलतनत के बीच इखतलाफ़ात का अहम सबब था। और जो बात मज़ीद हैरत वाली हैं वो ये हैं के जब ब्रिटिश मिशनरियों की रेलियाँ **1893** में हो रही थीं, तो मरज़फून के अनादोला कॉलिज का डाएरेकटर लंदन में था, बल्कि मुज़ाहोरा करने वालों में शामिल था। अनातोलिया में मुसलमानों का कत्लें आम, जो दरहकीकत ईसाईयों ने किया था, बाद में ईसाई लेखको अपनी तसानिफ़ में बिल्कुल उलट लिखा। इसी तरह का एक झूठ अरबी लुग़त **अल-मुनजिद** के मेराश बाब में लिखा हैं, एक किताब जिसे बेरूत में तैयार कराया गया।

1893 में, **30** लाख इंजील की कॉपिया और **40** लाख दूसरी ईसाई किताबें तुर्की में मौजूद आरमिनाई बाशिंदो को बाँटी गई। इस के मुताबिक, हर आरमिनयाई हत्ता के पैदा हुए बच्चों तक को सात किताबें दी गई। सिर्फ़ अमेरिका मिशनरी सालाना जो रकम खर्चकरते हैं वो **285,000** डालर हैं। इस बात की वज़ाहत के लिए के ये रकम कितनी बड़ी थी, हम ये बताना चाहेंगे के **1728** शानदार स्कूल जैसे मरज़फून अनादोला कॉलिज जैसे शानदार कॉलिज इस रकम से तामीर किए जा सकते हैं।

ये सोचना सरासर खुशफहमी होगी के मज़हबी जोश व जज़बे के बाइस मिशनरियों ने इतनी अज़ीम उसाशान रकम खर्च की। मिशनरियों की नज़र में मज़हब एक तिजारत हैं। ये दोलत, जो मिशनरियों ने इस्लाम को तबाह करने और उस्मानी कौम का नामो निशन मिटा देने के लिए अनातोलिया में खर्च की, इस रकम का एक छोटा सा हिस्सा था जो उन्होने इस बात का वावीला मचाकर हासिल की थी के "तुर्की आरमिनयाइयों को कत्ल कर रहें हैं। आओ उनकी मदद करें।"

ये उन्हीं सालों की बात हैं के हमारे यूनानी हम वतनों ने एथेंस और येनीसहर में, कॉलिजों और गिरजों के मिशनरियों के उकसाने पर और ब्रिटिश की इंतेहाई बड़ी और मसल्लह फौज की हिमायत और मदद की वजह से, बग़ावत करदी लाखों मुसल्मान मर्द, औरतों और बच्चों का यकसा कत्ले आम किया। ये बग़ावत **1313** [ए.डी. **1895**] में एधेम पाशा की सरकरदगी में लड़ने वाली फौज ने कुचल डाली। ये इंतेहाई अहम फतह थी जो न सिर्फ़ यूनानी फौज के खिलाफ़ हासिल की गई बाल्कि बग़ावत के असल महरक ब्रिटिश के खिलाफ़ भी।

ब्रिटिश पर तीन हाकिमों की हुकूमरानी हैंः शहनशाह, पार्लमण्ट और गिरजा (यानी वेस्टमिनिस्टर)। **918** [ए.डी. **1512**] तक पार्लमण्ट और

शहनशाह का महल वेसटमिनिस्टर के अंदर ही था। 1512 में होने वाली आगज़नी के बाद शहनशाह बकिंघम पैलेस में चला गया, जबकि संसद और गिरजा वहीं रहे। ब्रिटिश में गिरजा और रियास्त एक दूसरे के साथ मुंसलिक हैं। बादशाह और मलका को गिरजे में लॉट पादरए के ज़रिए ताज पहनाया जाता है।

"मआशरती रूहजानात" नामी एक रिपोर्ट जो ब्रिटिश वफ़ाकी मोहकमा शुमारयात ने शाय की इस रिपोर्ट के मुताबिक ब्रिटिश में पैदा होने वाले हर सौ बच्चों में से 23 नाजाईज़ रिश्तों के नतीजे में पैदा होते हैं।

ब्रिटिश मेटरोपॉलिटन पुलिस स्काटलैण्ड यार्ड की एलान करदा शुमारयाती रिपोर्ट जो 7 मई 1990 को इस्तानबुल के एक रोज़नामा में शाया हुई, के लंदन में अब इंसानी ज़िंदगी बिल्कुल भी महफ़ूज़ नहीं, लंदन एक इंतेहाई ख़तरनाक शहर बन चुका हैं, ख़सूसन औरतों के लिए। ब्रिटिश पुलिस की रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले 12 सालों में तमाम जराईम की शरह में इज़ाफ़ा हुआ हैं, ख़ास तौर से डाका ज़नी और अज़मत दरी में।

तमाम मुल्कों और मज़हबों में ख़ानदान से मुराद ऐसा गहवारा हैं जिसे मर्द और औरत बाहिमी तौर पर मिलकर जाईज़ रिश्ते पर तामीर करते हैं। जबकि दूसरी तरफ़, ब्रिटिश के कानून ने हम जिंस परस्ती को जाईज़ करार दिया हैं बल्कि हमजिंस परस्तों को कानूनी हिफ़ाज़त भी दे रखी हैं।

12 नवंबर 1987 में इस्तानबुल के एक रोज़नामे में छापने वाली ब्रिटिश फौज में सकैंडल नामी रिपोर्ट में कहा गया के मलका ऐलिज़ेबथ 2 से तअल्लुक रखने वाली गार्ड रेजिमेण्ड में नए भरती होने वाले लांस नायक को जंसी तौर पर सताया गया और उन पर जंसी तशददुद भी किया गया।

28 दिसंबर **1990** के रोज़नामा **तुर्कीये** में शाय हाने वाले एक तहकीकी मज़मून में कहा गया के ब्रिटिश गिरजों में हमजिंस परस्तों की तादाद **155** हैं जबकि howes of lords and commons में ये तादाद इससे कहीं ज़्यादा है। फहाशी ससंद तक फैल चुकी हैं और कई सकैंडल भी सामने आ चुके हैं। ब्रिटिश यूरोप का पहला मुल्क हैं जहाँ हमजिंस परस्तों ने एक तंज़ीम कायम की हैं। अफ़सोसनाक बात ये हैं के ब्रिटिश इस्लाम दुश्मनी उन जगाहों पर भी वाज़ेह नज़र आली हैं जहाँ ये फहश हरकात की जाती हैं। लंदन की पुश्ती गलियों में जहाँ ज़िना, लवातत ओर दूसरी फहाशी आम हैं, उन पर सबज़ रंग किया गया हैं, क्योंकि इस्लाम इस रंग को नापाक करार देता हैं, बेग़ैरती के अडडो के दरवाज़ो पर मक्का के नक्शे वाली तख्तियाँ लटकाई जाती हैं।

ब्रिटिश रोज़नामे गारडिअन में शाया होने वाली एक रिपोर्ट के मुताबिक **2** लाख लड़कियों ने अदालत से रजुअ करके अपने बापों की तरफ से हिफ़ाज़त की दरख्वास्त की उन्होने बयान दिया के उनके बाप उस वक्त से उन्हें जिंसी तौर पर हरासान कर रहें हैं जब से वो सने बलौग़ को पहुँची। दूसरी तरफ़, बी बी सी के मुताबिक उन लड़कियों की तादाद जिन्होने अदालत से राब्ता नहीं किया (इस किस्म की हरकत का निशाना बनने के बावजूद) उनकी तादाद **50** लाख है। ज़मीनी हिस्सेदारी का सब से ग़ैर मुंसिफ़ाना निज़ाम ब्रिटिश में हैं। नवाबी के खिलाफ़ काशतकारों की चलाई जाने वाली लड़ाइयाँ तारीख में महफूज़ हैं। ये एक हकीकत है के हत्ता के आज भी ब्रिटिश ज़मीन के **805** हिस्से पर मराआत याफ़ता अकलियत का कब्ज़ा हैं।

रोज़नामा **तुर्कीये** के **31** मई **1992** के इतवार के एडिशन में लिखा है, "मआशी दबाओ की वजह से पैदा होने वाली बेरौज़गारी और गुरबत की वजह से ब्रिटिश में खुदकशी का रूहजाह बढ़ रहा है। ब्रिटिश मैडिकल रिसाले में इतलाह दी गई के ऑकसफाई अस्पताल के दो डॉक्टरों ने एक सरवे किया जिसके मुताबिक ब्रिटिश में हर साल एक लाख अफराद खुदकशी की कोशिश

करते हैं जिन में से **4500** की मौत हो जाती हैं। उनमें, **625** जवान लड़कियाँ होती हैं। ” कोई दूसरी रियास्त ब्रिटिश जितनी धोकेबाज़, ज़ालिम और वहशी नहीं हैं, जिसने पहले लाखों मुसलमानों को हर साल कत्ल किया और अब अपनी ही कौम के लाखों अफराद को खुदकशी पर मजबूर कर रही हैं।

दूसरी तरफ़ आयरलैंड के लिए दर्दसर बना हुआ है। हमें उम्मीद है के हम सब उन शानदार दिनों को देखने के लिए ज़िंदा रहेंगे जब वो अपने इन जालों में फँस जाएंगे जो उन्होने हमारे लिए बिछाए थे।

अपने ऊपर सैयद अब्दुल हकीम अरवासी रहमतुल्लाही अलैह के नाम के साथ रहमत भेजते हुए, हम अपनी किताब के दूसरे बाब का इस्तेमाल उनके इस मंदरजाज़ेल बयान से करना चाहेंगे जिसमें उन्होने तमाम अहम नुकतात का अहाता करते हुए ब्रिटिश की असलियत बताई हैः

“अंग्रेज़ इस्लाम के सबसे बड़े दुश्मन हैं। इस्लाम को एक पेड़ से तसव्वुर करते हैं; तो आम कफ़फ़ार जब भी मौका पाएंगे इस पेड़ को आखिरी हिस्से तक काट कर गिरने की कोशिश करेंगे। नतीजे के तौर पर, मुसलमान उनके लिए जारहाना सुलूक अपनाएँगे। इसलिए ये पेड़ कभी न कभी अपनी जड़े दोबारा फैला सकता है। जबकि दूसरी तरफ़, ब्रिटिश पॉलिसी मुख्तलिफ़ है। वो इस पेड़ की खिदमत करेंगे; वो इसे सिचेंगे। ताकि मुसलमान उनको अपना दोस्त ख्याल करें। ताहम, एक रातए जब सारे लोग गहरी नींद सो रहे होंगे, तो वो इसकी जड़ो में सबकी नज़र बचाकर ज़हर डाल देंगे। पेड़ हमेशा के लिए खुश्क हो जाएगा और फिर कभी नहीं मुज़ाहिरा करते हुए धोका देते रहेंगे। ज़हर देने की ये मिसाल उन ब्रिटिश चालों को ज़ाहिर करती है जो अंग्रेज़ो ने इस्लामी आलिमों, इस्लामी अदब और इस्लामी तालीम को नेसतो नाबूद करने के लिए चलीं, ये चालें उन्होने मुनाफ़िक और बेग़ैरत मकामी लोगों की मदद से चलीं, इन बैग़ैरत लोगों को इन्होने जिंसियाती खुव्वाहिशात की

तसकीन के ज़राए मसलन दौलत, नौकरी, औहदे और औरतों के बदले खरीदा था।"

अल्लाह तआला से दुआ है के तमाम मुसलामानों को सारी बदी से महफ़ूज़ रखे। वो सारे मदब्बिरों, इस्लामी आलिमों और सारे मुसलमानों को ब्रिटिश और मिशनरियों के मक्कर व फरेब और चालों में फँसने और इन लोगों की खिदमत करने से महफ़ूज़ रखे!

खुलासा-त-उल-कलाम

मंदरजाज़ेल बाब एक किताबचह खुलासा-त-उल-कलाम का तर्जुमा हैंः

ये किताबचह अरबी में हैं। इसके लेखक युसूफ़ नबहानी, बेरूत में **1305** h [**1932** ए.डी.] फौत हो गए। सारी हमद (तारीफ़, सना और शुक्रिया) सिर्फ़ अल्लाह तआला के लिए हैं! वो जिसे चाहता हैं नवाज़ता हैं हिदायत के साथ (सारी रास्ते की तरफ़ रहनुमाई और नतीजे के तौर पर निजात की तरफ़) और किसी को भी ज़लालत में भी छोड़ देता है जिसे वो चाहता है (बेहिदायत, गुमराही की तरफ़)। [अपने अदल के साथ वो उनकी दुआएँ सुनता है जो ज़लालत से बचना चाहते हैं अबदी खुशी की दुआएँ माँगते हैं।] हम अपने मास्टर, मुहम्मद अलैहि सलाम पर दुरूद भेजते हैं जो सारे नबियों और सारे चुने हुए लोगो से से अव्वल हैं। आपकी आल (करीबी रिश्तेदार, आल औलाद) पर भी दुरूद व सलाम भेजते हैं, आपके असहाब पर भी, जो ज़मीनपर इस तरह चमकतें हैं जिस तरह आसमान में तारें।

इस किताबचह के सिर्फ़ चंद सफ़हात हैं।लेकिन इसमें मौजूद मालूमात के लिहाज़ से ये बहुत कीमती है।साहिबे इल्म व फहम अगर इस किताब को सूझ बूझ से पढ़ेंगे तो वो इस बात से इतफ़ाक करेंगे, और वो जिन्हें अल्लाह तआला ने, हिदायत और सीधे रास्ते पर चलने की नएमत से नवाज़ा हैं, वो इस किताब पर मुकम्मल यकीन कर लेंगे। ये अता करदा नएमतों में से सबसे आला नएमत **सिरात-ए-मुखतकीम** और उसके दुश्मनों पर उसके अज़ाब यानी **ज़लालत/dalator** को एक दूसरे से जुदा कर देती हैं।मैने इस किताबचाह को **खुलास-त-उल-कलाम फी तरज़ीह-ए-दीन-इल-इस्लाम** का नाम दिया हैं, जिसका मतलब है 'इस्लाम मज़हब को कुबूल करने में मदद देने वाले बयानात का खुलासा।'

इंसान अगर तुम अबदी अज़ाब से बचने और लामहदूद नएमतों के हसूल की ख्वाहिश रखते हो। अगर तुम सारा वक्त इस अहम और अज़ीम सच पर गोर करने में गुज़ारोगे, और तुम अपनी ज़ात को अबदी अज़ाब से बचाने के ज़रिए की तलाश में तमाम तवानाइयाँ सर्फ़ कर लोगे, जब तुम तन्हा थे और हर किस्म के सुरतहाल में अगर तुम दूसरे तमाम अफराद से मिलकर और अपनी सारी काबिलियत के साथ इस मकसद को हासिल करने में जद्दोजहद करोगे, ये तमाम कोशिशे बिल्कुल गैर अहम नज़र आएंगी अगर इसका मवाज़ना इस जद्दोजहद के नतीजे में हासिल होने वाले नताईज से करोगे।दरहकीकत ये तमाम काम पूरी दुनिया के खज़ाने के बदले सिर्फ़ एक मिट्टी का ज़रराह हासिल करने की तरह होगा।इस सच की अहमियत हमारे इस मज़मून से वाज़ेह नहीं की जा सकती।ये सब लिखने से हमारा मकसद अकलमंद को कुछ इशारे देना हैं।एक अकलमंद शख्स के लिए एक हल्का सा इशारा ही काफी है मआनी समझने के लिए।मैं, इसलिए, कुछ इशारिया बयानात दूँगा ताकि इस बात को मुकम्मल तौर पर समझा जा सकेः आदमी अपने ते शुदा रूहजानात से पसंददीगी वाबस्ता कर लेता है। वो अपने आपको उन पर अमल करने से बाज़ नहीं रख

पाता। मिसाल के तौर पर, जब वो पैदा होता है तो दूध चूसने का आदी हो जाता है और दूध छुड़ाने से नफ़रत करने लगता है। जब वो बड़ा होता है, वो अपने घर से, अपने इलाके से अपने शहर से जहाँ उसका घर होता है उससे मानूस हो जाता है। उसके लिए उनसे अलग होना बहुत मुश्किल होता है। बाद में, वो अपनी दुकान, अपने पैसे, अपनी साईसी ब्रांच, अपनी फ़ैमिली, अपनी ज़बान और अपने मज़हब का आदी हो जाता है, और उनसे अलग होने से नफ़रत करता है। इस तरह मुख्तलिफ़ मसकन, कबीले और कौमें वजूद में आती हैं। साबित होता है के किसी कौम की अपने मज़हब से मौहब्बत, मुख्तलिफ मुशाहरात और तर्जुमा की बिना पर अपने मज़हब को सच्चा और हक पर पाने की वजह से नहीं हुआ करती बल्कि अपने मज़हब का आदी होने की वजह से होती हैं। एक अकलमंद शख्स को अपने मज़हब का मुतालअ करना चाहिए और उसका दूसरे मज़ाहिब से मुवाज़ना करना चाहिए और ये मालूम करना चाहिए के कौनसा मज़हब सच्चा है और फिर इस सच्चे मज़हब की मज़बूती से पैरवी करनी चाहिए। क्योंकि एक गलत मज़हब से वाबस्तगी इंसान को अबदी तबाही और हमेशा के अज़ाब में मुबतला करने का बाईस बनती है। ए आदमी, ग़ाफ़लत की नींद से जागो! अगर तुम कहो, "मैं कैसे मालूम करूँ कौनसा मज़हब सच्चा है? मुझे यकीन है के जिस मज़हब को मैं मानने वाला हूँ वो सच्चा है। मुझे इस मज़हब से प्यार हैं," तब तुम्हें मालूम होना चाहिए "मज़हब का मतलब अल्लाह के अहकामात और ममनुआत को मानना है जिन्हें नबियों के ज़रिए भेजा गया।" ये फरमान इंसान के लिए अपने रब के लिए फराईज़ हैं और एक दूसरे के लिए भी।

तमाम मौजूदा मज़ाहिब में कौन सा मज़हब रब की सिफ़ात, इबादत और मख्लूक के आपस के रिश्ते की सबसे बहतरीन वज़ाहत करता है? समझ/अकलमंदी एक ऐसी हिस है जो अच्छे और बुरे में तमीज़ करती हैं। जो बुरा है उसे छोड़ देना चाहिए और जो अच्छा है उसका मुतालअ करना

चाहिए। किसी मज़हब के मुतालअ के लिए ज़रूरी है के उसकी इबतिदा, उसके नबी, उसके (साथी) असहाब और उम्मत (मानने वालो को), ख्वासतौर से नुमाया अफ़राद के बारें में भी मालूमात हासिल की जाएँ। अगर तुम उन्हें पसंद करो, तो उस मज़हब को चुन लो! अपने दिमाग़ की तकलीद करो, न के अपने नफस की! तुम्हारा नफस तुम्हें तुम्हारें ख्वानदान, तुम्हारें दोस्तों और ख्बीस और रूसवा मज़हबी आदमियों से अलग होने पर शर्मिन्दगी और ख्वौफ़ के अहसासात तुम्हारे अंदर डालेगा और इस तरह तुम्हें गुमराह करेगा। वो तकलीफ़ जो ये लोग तुम्हें पहुँचाए वो हमेशा के अज़ाब के मुकाबले कुछ भी नहीं। एक शख्स जो इन हकाईक को मुकम्मल तौर पर समझ जाएगा वो **दीन-ए-इस्लाम** मुंतख्विब करेगा। वो मुहम्मद अलेहिसलाम पर ईमान लाएगा, जो की आख्विरी नबी हैं। इसके अलावा, इस्लाम सारे नबियों पर ईमान लाने का हुकूम देता है। ये तालीम देता है के उनके मज़ाहिब और शरई कानून सच्च थे, और ये के हर नया नबी अपने से पहले वाली शरीअत को कालअदम करार देगा, और इसी तरह मुहम्मद अलैहि सलाम का ज़हूर पिछली सारी शरीअत को कालअदम करार देंगे। किसी शख्स का ये जान लेना के जिस मज़हब और इस मज़हब को छोड़कर मुहम्मद अलैहि सलाम पर उसे ईमान रखना होगा, उस शख्स की नफस के लिए ये बरदाश्त करना मुश्किल है। क्योंकि नफस की फितरत में अल्लाह तआला, मुहम्मद अलैहि सलाम और उसकी शरीअत के साथ दुश्मनी पैदा फरमाई। नफस की ये फितरती दुश्मनी **हमीयत-उल-जाहिलीया** (बेमआनी गलत जोश, हसद, तअसुब) कहलाती हैं। गलत मज़हब में वालदेन, उस्ताताद, अय्यार दोस्त, [रेडियो और टेलिविज़न के प्रोग्राम, मुदब्बिर] इस तासुबाना जज़बे की हिमायत करेंगे। इसके अलावा ये कहावत भी है, "बच्चे को पढ़ाना पत्थर पर लिखने की तरह हैं।"

इस तआसुब को ख्त्म करने के लिए ज़रूरी है कोशिश की जाए, नफस के ख्विलाफ़ जद्दोजहद की जाए और नफस को असबाब के ज़रिए

कायल किया जाए। अगर आप ज़ेल में लिखीं हुई बातें गौर से पढ़ेंगे तो आपको अपनी इस जद्दोजहद में मदद मिलेगी अपने आपको एक खास मज़हब पर कायम करना अबदी खुशी के हुसूल और हमेशा के अज़ाब से हिफ़ाज़त का बाईस होता है। अपने वालदेन से जो मज़हब मिला उसके बारे में फख्र करना के वही सच है। हर नबी एक इंसान होता है जो नब्बुवत की अहमियत और काबलियत का हामिल होता है और अलाह तआला के अहकामात उसके पैदा करदा बंदो तक पहुँचाया। हर शख्स को ऐसे ही नबी की पैरवी करनी चाहिए जो इन सब पर पूरा उतरता हो और उसके मज़हब में दाखिल हो जाना चाहिए। ऐसे लोग जो बुतों और मुजस्समों की पूजा करते हैं वो वसानी कहलाते हैं और बग़ैर देवता के लोग दहरी, [फ्रीमेसन और इश्तराकी] कहलाते हैं, जो जानवरों की तरह होते हैं। इसी तरह, नुज़रानी (ईसाई) और यहूदी मज़ाहिब मंदरजाज़ेल असबाब की वजह से मुस्तअमिल हैंः

इस्लाम मज़हब में, अल्लाह तआला कामिल सिफ़ात वाला है। उसकी सिफ़ात में कोई नुक्स नहीं। इबादत की अदाएगी आसान हैं। मआशी तअलुकात इंसाफ पर मुबनी हैं। दूसरे मज़हबों में बताई जाने वाली इबादत और मआशरती तअल्लूकात वक्त के साथ साथ तबदील हो चुके हैं, इसलिए अब वो माकूल और काबिले अमल नहीं हैं।

मुहम्मद, ईसा (जिसस) और मूसा (मोसिस) अलैहिमुस सलाम की ज़िन्दगियों का मवाज़ना ये बताएगा के मुहम्मद अलैहि सलाम का शजरा नसब सबसे आला, सबसे ज़्यादा रहमदिल, सबसे ज़्यादा बहादुर, सबसे ज़्यादा महरबान, सबसे ज़्यादा जानने वाला, सबसे ज़्यादा अकल वाला, सबसे आला, और इस दुनिया और बाद की दुनिया में सबसे ज़्यादा जानने वाले। जबकि दूसरी तरफ़ आप उम्मी पढ़े लिखे नही थे। दूसरे लफ़्ज़ों में, आपने कभी किताब नहीं पढ़ी नाहीं आपने किसी से कुछ सीखा।

मुहम्मद अलैहि सलाम के मोअजिज़े (करामतें) दूसरो के ज़रिए किए गए मोअजिज़ों से ज़्यादा और लातादाद थे। दूसरों के मोअजिज़े अब जा चुके हैं और नापैद हो चुकें हैं। दूसरी तरफ़, मोहम्मद अलैहि सलाम के कुछ मोअजिज़े खास तौर से कुरआन अल-करीम का मोअजिज़े अब भी जारी हैं और आपकी उम्मत की करामतें। दुनिया के खत्म होने तक बाकी रहेगा। एक गैरमामूली वाक्या जिसे अल्लाह तआला एक शख्स के ज़रिए ज़ाहिद करवाता है जिसे वो प्यार करता है एक अजूबा, या एक मोअजिज़ा कहलाता है। जब एक अजूबा, या एक मोअजिज़ा एक नबी के ज़रिए होता हैं तो उसे इसे **मोअज़िज़ा** कहते हैं। जब ये **वली** के ज़रिए, यानी शख्स जिसे अल्लाह तआला के ज़रिए पसंद किया गया, तो उसे एक **करामत** कहते हैं। बराए महरबानी हमारी किताब **नब्बुवत का सबूत** देखिए।) खासतौर से औलिया, ([2] **वली** की जमा।) के ज़रिए मुसलसल हर जगह ज़ाहिर हो रहीं हैं।

इन तीनों मज़ाहिब से हासिल होने वाली मालुमात और खबरों में से वो जो हमें कुरआन अल करीम और अहदीस-ए-शरीफ़ के ज़रिए हासिल होती हैं तादाद में बहुत ज़्यादा और काबिले भरोसा हैं। वो सब किताबों में लिखी गई और पूरी दुनिया में फैल गई। मुहम्मद अलैहि सलाम 40 साल के थे जब आपको बताया गया के आप नबीं हैं। और जब आपने रहलत फरमाई तो आप 63 साल के थे। आपकी नब्बुवत 23 साल रही। आप के इंतेकाल के वक्त तमाम जज़ीरत उल अरब आपका मतीअ हो चुका था, इस्लाम मज़हब हर तरफ़ फैल चुका था, आपकी पुकार मग़ारिब व मश्रिक में सुनी जा चुकी थी, और आपके असहाब की तादाद 150 हज़ार हो चुकी थी। आपने हजतल विदा/आखिरी हज 120 हज़ार सहाबियों के साथ अदा किया, और इसके अस्सी दिन बाद रहलत फरमा गए। सूरह माएदा की तीसरी आयत-ए करीमा, जिसका मतलब हैं, "**आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और अपनी नएमते तुम पर पूरी करदीं और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसंद**

किया," इसी हज के दौरान नाज़िल हुई। ये सारे सहाबा वफ़ादार और सच्चे थे। उनमें से अकसरियत इस्लाम को गहराई से सीख चुकी थी और वली थे। उन्होने रसूलुल्लाह के मज़हब और मोअजिज़ों को रोए ज़मीन पर फैलाया। क्योंकि उन्होने जिहाद के लिए दूसरे मुल्कों का सफर किया। वो जहाँ कहीं भी गए उन्होने मज़हबी तालीमात और मोअज़िज़े आलिमों को सीखाए जो वहाँ रहते थे। और अपनी बारी आने पर, इन लोगों ने दूसरों को सीखाया। इस तरह हर सदी के आलिमों ने अगली नसल के कई आलिमों को तालीम दी। और फिर इन आलिमों ने इन तालीमात को हज़ारों किताबों की शक्ल में लिखा और साथ साथ उन लोगों के नाम भी लिखे जिन्होने ये इल्म उन तक पहँचाया। जो अहदीस-शरीफ़ उन्होने सीखी थी उनकी हिमायत बंदी करके उन्हें मुखतलिफ दरजों में तकसीम किया और उनकी मुखतलिफ़ इसतलाहत रखीं जैसे सही, हसन वग़ैरह। उन्होने मुनाफिकों और यहूदियों के मन घड़त और झूठे बयानात इन किताबों में दाखिल नहीं होने दिए। वो इस मामले में बहुत सख्त और हसास थे। इनकी इन्हीं सख्त कोशिशों की वजह से इस्लाम मज़हब इंतेहाई मज़बूत बुनियादों पर कायम हुआ और बगैर किसी तबदीलों के फैलता चला गया। कोई दूसरा मज़हब इतने सहतमंद तरीके से नहीं फैला। हमारे प्यारे नबी मुहम्मद अलैहि सलाम के मोअजिज़े, वाज़ेह तौर पर साबित करते हैं के आप सच्चें नबी हैं। इस्लाम की बुनियदी और लाज़मी तालीमात अल्लाह तआला की मौजूदगी और वहदत, और उसकी सिफ़ाते कामिल, मुहम्मद अलैहिसलाम की नब्बुवत, वो ये के आप वफ़ादार और काबिले भरोसा और सारे नबियों से आला, ये के लोग मरने के बाद दोबारा उठाए जाएंगे और हिसाब के लिए बुलाए जाएंगे, पुल सिरात, जन्नत की नएमतें, दोज़ख का अज़ाब, ये के फर्ज़ हैं (एक सादा इस्लामी अहकाम) नमाज़ अदा करना रोज़ाना पाँच बार और ये के दोपहर, तीसरे पहर, और रात की नमाज़ की फर्ज़ रकअतें चार हैं जबकि सुबह नमाज़ की फर्ज़ रकअत दो और शाम की नमाज़ की फर्ज़ रकअत तीन हैं, ये भी फर्ज़ हे के जब आसमान पर रमज़ान के महीने का नया चाँद दिखे तो रोज़े रखो और

जब शव्वाल के महीने का नया चाँद दिखे तो इद (दावत) जिसे फितर कहते हैं मनाओ, और ये भी फर्ज़ है के ज़िंदगी में एक बार [एक इबादत जिसे कहते हैं] हज ज़रूर अदा करो, ये हराम हैं (ममनुअ) [औरतों और लड़कियों का बगैर अपने बालों और अपने सरो को ढँापे हुए बाहर निकलना, (हर किसी के लिए, मर्दो और औरतों दोनो के लिए यकसाँ) बदकारी करना] ज़िना करना, शराब पीना [या चाहें एक बूँद जो ज़्यादा पी ली जाए तो माहौल से बेगानगी हो जाए], (बेगुसल शख्स, जिस को गुसल की हाजत हो) एक शख्स जो जुनुब हो या फिर हैज़ दार औरत का भी नमाज़ अदा करना हराम है, बग़ैर वुज़ू नमाज़ अदा करना, और बाकी सारी ज़रूरी मज़हबी तालीमात सारे मुसलमानों को, पढ़े लिखे और जाहिल सबको बराबर है, और उसमें बगैर किसी रद्दो बदल के हम तक पहुँचाना। ये हकीकत माकूल ईसाई और यहूदी भी तसलीम करते हैं। ये लोग इस बात को मानते हैं के वो ज़राए जिन से इन्होने खुद अपने मज़हब के मुतअलिक मालूमात हासिल कीं वो इतनी मसतंद और कबिले भरोसा नहीं हैं। क्योंकि मुहम्मद अलैहि सलाम का वक्त हमारे करीब हैं और क्योंकि जिन आलिमों ने इस्लामी तालीमात हम तक पहँचाई वो ज़्यादा हैं, और इस्लाम में तौहम परस्ती दाखिल करना मुमकिन नहीं हैं। ईसाईयत और यहूदियत को ये दो नएमतें हासिल नहीं हैं। ईसा अलैहि सलाम और मुहम्मद अलैहि सलाम बिसात/ज़हूर [तारीखदानो के मुताबिक] में छः सौ साल का वकफा है। क्योंकि [वो कहते हैं] ईसा अलैहि सलाम की पैदाइश और मुहम्मद अलैहिसलाम की मक्का से मदीना हिजरत (नकलमकानी) के बीच **621** साल हैं। [दूसरी तरफ़, ये वक्त का वक़फा इस्लामी आलिमों के मुताबिक **1000** साल का है।] इस वकफे के दौरान पूरी दुनिया में जहालत थी। इसलिए सही और गलत खबरों और मालूमात के दरमियान फर्क करना बेहद मुश्किल है।

ईसा अलैहि सलाम की पुकार ज़्यादा अरसे तक नहीं रही। अल्लाह तआला ने उन्हें जब वो **33** साल के थें तो ऊपर उठा लिया। इस अरसे के

दौरान वो कफ़्फ़ार के मुकाबले काफ़ी कमज़ोर और दिफाऊ करने के लायक नहीं थे। उनके लिए हालात भी इतने साज़गार नहीं थे जो काम उनके साथ अदा कर सकते। उस वक्त की यहूदी आबादी और हुकूमत एक मज़ीद रूकावट थी। न ही उनके कोई मददगार थे सिवाए उन वंद हवारियों (हिमालय) के। उनके सिर्फ यही **12** हवारी मानने वालों में से थे, जो गरीब, जाहिल शिकारी थे। आपके जन्नत में ऊपर/आराम ([**1**] ईसाइयों के अकीदे मुख्तलिफ़ , जो ये बताती हैं के ईसा अलैहि सलाम को सलीब पर चढ़ाया गया और उसके बाद आसमान में उठा लिया गया, इस्लाम बताता है के ये बुलंद नबी सलीब पर नहीं चढ़ाए गए, और ये के अल्लाह तआला ने उन्हें ज़िंदा ऊपर उठा लिया था। बराएमहरबानी हमारी किताब **जवाब न दे सके** देखिए।) उठाए जाने के बाद, कई ख्बरें और बयानात को [चार] किताबों में जिसे इंजील कहते हैं तालीफ किया गया, जो मुख्तलिफ़ नाअहल हाथों में होती हुई और एक गोस्पलस में मौजूद मालूमात एक दूसरे के उलट हैं और इसी लिए ग़ैर मतंकी भी हैं। हत्ता के इनमें से एक में दी जाने वाली मालूमात को झूठला कर उनकी तग़लीज़ करती हैं। इस तरह एक ही गोस्पल के मुख्तलिफ़ तर्जुमों में भी यही उसूल लागू होता है। इन सब गलतियों और फर्क को ठीक करने के लिए, हर सदी में पादरियों ने इजलासा बुलाए और मौजूदा गोस्पलस को ठीक किया, इस तरह मुख्तलिफ़ बातों के अंदर बाहर करने से किताबों में तहरीफ़ शामिल हो गई और उनमें ऐसी लगू बातें शामिल हो गई जिनका मज़हब से कुछ लेना देना नहीं था। उन्होने लोगों को इन किताबों पर ईमान लाने पर मजबूर किया। इन किताबों में दर्ज बयानात में से अकसर बयानात ईसा अलैहि सलाम या उनके हवारियों से तअल्लुक नहीं रखते। जिसके नतीजे में वो कई ग्रुप में बंट गए। हर सदी में एक नया फिरका ज़ाहिर हुआ। उनकी अकसरियत पहले के फिरकों से इख्तलाफ़ रखती थी। और वो सब जानते हैं के उनके पास मौजूद गोस्पल ईसा अलैहि सलाम पर नाज़िल होने वाली मज़हबी तालीम देने वाली सच्ची और मुकददस किताब नहीं हैं।

यही हाल मूसा अलैहि सलाम का मज़हब और मोअजिज़े बताने वाली यहूदी किताबों का हैं। यहाँ वक्त का वक्फ़ा ज़्यादा हैं। मूसा अलैह सलाम की वफ़ात मुहम्मद अलैहि सलाम की हिजरत से दो हज़ार तीन सौ और अढ़तालीस (**2348**) साल पहले हुई। जहालत के इस लंबे अरसे में यहूदी मज़हब का सही मुंतकिल हो पाना मुमकिन नहीं था। मज़ीद ये के यहूदी मज़हबी आलिमों को ज़ालिम और सफ्फ़ाक हुकूमरान कत्ल करवा दिया करते थे, नबूचंद नज़ेर जैसे हाकिम, और दूसरों को कैदी बनाकर बैत-उल-मुकददस से बेबिलान भेज दिया जाता था। दरहकीकत, ऐसे भी वक्त थे जब जरूसलेम में कोई एक शख्स इतना पढ़ा लिखा नहीं था जो तौरह को पढ़ सकता। दानियाल अलैहि सलाम ने तौरह हिफ़ज़ कर रखी थी, इसलिए वो इसकी तिलावत करते और इसकी इमला कराते। इस खिदमत ने मुबारक नबी की वफ़ात तक किताब को तहरीफ़ात से बचाए रखा। असल बात ये हैं, के उन के बाद बनाई जाने वाली नकूल में दर्ज बातें इतनी वाहियात हैं के अल्लाह तआला या किसी नबी से मसूंब नहीं की जा सकतीं।

ये बातें सब जानते हैं के इस किस्म की जहालत मुहम्मद अलैहि सलाम के ज़माने के बाद नहीं हुई। असल में सारे मुसलमानों में इल्म एक आम सिफत बन गई थी, आला इस्लामी रियास्तें कायम की गई और उन्होने इल्म, साईस, इंसाफ़ और इंसानी हुकूम को चारों तरफ़ फैलाया। अगर कोई अकलमंद और माकूल आदमी इन तीनों मज़हबो का जाएज़ा लेगा, तो वो यकीनन इस्लाम को ही अपनाएगा। क्योंकि मकसद सच्चे मज़हब का इंतेखाब हैं। झूठ और तौहमत इस्लाम में हराम हैं। आयत-ए-करीमा और अहदीस-ए-शरीफ़ इन दो बुराइयों को ज़ोर देकर मना करती हैं। जब एक आम शख्स पर इल्ज़ाम लगाना बड़ा गुनाह हैं, तो ये उससे भी खराब हैं, ज़्यादा हराम हैं के अल्लाह के नबी पर इल्ज़ाम लगाना। इस वजह से, मुहम्मद अलैहि सलाम के बारे में और आपके मोअजिज़ों के बारे में बताने वाली किताबों में कोई झूठ, कोई गलती नहीं हो

सकती। एक अकलमंद शख्स को अपनी मुस्तकिल मिज़ाजी पर काबू पाना चाहिए, दोज़ख़ की तरफ़ ले जाने वाले मज़हब से किनारा कर लेना चाहिए और अपने आपको इस सच्चे मज़हब पर कायम करना चाहिए जो अबदी ख़ुशी की तरफ़ ले जाता हो। इस दुनिया में ज़िंदगी बहुत छोटी हैं। इसके दिन गुज़रते जा रहें हैं और एक एक करके गुज़ारे हुए सपने में बदलते जा रहें हैं। हर इंसान का ख़ातमा मौत पर होगा, उसके बाद या तो अज़ली अज़ाब हैं या फिर हमेशा की नएमतों वाली ज़िंदगी और हर शख्स का वक्त तेज़ रफ़तार से उसकी तरफ़ बढ़ रहा हैं।

ए आदमी! अपने ऊपर रहम कर! अपने दिमाग़ से तग़ाफुल का परदा हटा! जो गलत हैं उसे गलत की तरह देखो और इससे बचने की कोशिश करो! जो सही हैं उसे सही की तरह देखो, और उसे मज़बूती से पकड़ लो! जो फैसला तुम करोगे वो बहुत अहम हैं। और वक्त बहुत कम हैं। तुम बेशक मरोगे! उस वक्त का सोचो जब तुम मरोगे! अपने आपको तैयार करो जिसका तुमको तर्जुबा होने वाला है! तुम अज़ली अज़ाब से छुटकारा नहीं पा सकते जब तक तुम अपनै आपको हक पर कायम न कर लो। उस वक्त पछताना बेकार होगा जब देर हो चुकी होगी। आख़िरी साँस के वक्त सच की तसदीक कुबूल नहीं की जाएगी। मौत के बाद की तौबा कारआमद न होगी। उस दिन, अगर अल्लाह तआला पूछे, "ए मेरे बंदे! मैंने तुझे दिमाग़ की रोशनी दी। मैंने तुम्हें हुकूम दिया इसमें मुझे जानो, मुझ पर ईमान लाओ, मेरे नबी मुहम्मद अलैहि सलाम पर, और उसके ज़रिए नाज़िल होने वाले इस्लाम मज़हब पर। मैंने तौरह और इंजील में नबी के ज़हूर की इतलाअ दी । मैंने उनका नाम और उनका मज़हब सारे मुल्कों में फैला दिया। तुम ये नहीं कह सकते के तुमने उसके बारे में सुना नहीं। तुम ने दिन और रात दुनियावी कमाई, दुनियवी ख़ुशी के लिए काम किया। तुमने ये कभी नहीं सोचा तुम आख़िरत में क्या तर्जुमा करने वाले

हो। इस ग़फ़लत की हालत में तुम मौत के चंगुल में फँस गए," तुम कैसे जवाब दोगे?

ए आदमी! सोचो तुम्हारे साथ क्या होने वाला हैं! अपने होश में आ जाओ इससे पहले के तुम्हारी ज़िंदगी ख़त्म हो जाए। वो लोग जिन्हें तुम अपने आस पास देखा करते थे, जिन से तुम बात करते थे, जिन से तुम हमदर्दी करते थे, जिन से तुम डरते थे, एक एक करके मर गए। अब वो मौजूद नहीं। वो आए और ख़यालों की तरह चले गए। अच्छी तरह सोचो! अज़ली आग में जलने का तसव्वुर ही कितना भयानक है। और कितनी अज़ीम किस्मत हैं के अबदी नएमतों में रहा जाए। अब तुम्हें चुनना है। हर किसी का इस्तेमाल इन दो शहीद रास्तों में से किसी एक पर होगा। कोई और सूरत नामुमकिन है। इस बारे में ख़याल न करना और इसके मुताबिक एहतायात न बरतना निरी जहालत और पागलपन होगा। अल्लाह तआला से दुआ हैं के वो मंदरजाज़ेल सबब से हम सब पर अपनी रहमत नाज़िल फरमाए! अमीन।

कौल-उस-सबत फी रद-द-ए-अला-दुओ-इल-परोटेस्टेन्ट नामी किताब में मंदरजाज़ेल बयान हैं: अल्लामा रहमतुल्लाह हिंदी ([1]) रहमतुल्लाह हिंदी मक्का में **1306** [ए.डी. **1869**] फौत हुए।) अपनी किताब (**इज़-हार-उल-हक**) में बयान करते हैं, "इस्लाम के आग़ाज़ से पहले तौरह या इंजील की कोई भी असल जिल्दें कहीं पर मौजूद नहीं थीं। आज की मौजूदा किताबें तारीख़ की किताबें हैं जो सच्ची और झूठी ख़बरों पर बनाई गई हैं। जो तौरह और इंजील कुरआन अल करीम में ज़िकर किए गए हैं वो तौरह और इंजील के नाम पर मौजूद किताबें नहीं हैं। इन किताबों में मौजूदा मालूमात में से जिन का बाज़ाबता एलान कुरआन अल करीम में किया गया हैं वो सच हैं जबकि जिन मालूमात को कुरआन अल करीम नकारता हैं वो झूठी हैं। हम उन मालूमात के सच्चा या झूठा होने का दावा नहीं कर सकते जिनका ज़िकर कुरआन अल करीम में नहीं किया गया। इस बात को साबित करने के लिए के

चार गॉस्पेल अल्लाह तआला के अलफ़ाज़ है कोई दस्तावेज़ी सुबूत नहीं हैं। एक अंग्रेज़ पादरए जिससे मेरी हिंदुस्तान में बातचीत हुई उसने इस हकीकत का एतराफ़ किया के इस सिलसिले में मुतअल्लिक सारे दस्तावेज **313** ए. डी तक दुनिया में होने वाले हंगामों में ज़ाया हो गए। हेरोन के ज़रिए लिखी गई इंजील की तशरीह की दूसरी जिल्द में, तारीखदाँ मोशेम की तारीख की पहली जिल्द के **65** वें सफहें पर, जो **1332** [ए. डी. **1913**] में छपी, और लार्डीस के ज़रिए इंजील की पांचवी जिल्द के **124** वें सफ़हें पर लिखा है के गॉस्पेलस में बहुत सारी तहरीफ़ात शामिल हैं। जरोम कहता है, "जब मैंने इंजील का तर्जुमा किया, तो मैंने देखा के मुख्तलिफ़ कापियाँ/नकल एक दूसरे के बरखिलाफ़ हैं।" एडम कर्लाक अपनी तशरीह की पहली जिल्द में कहता है, इंजील का लातिनी में तर्जुमा करते वक्त उसमें कई तहरीफ़ात की गई। एक दूसरे के बरखिलाफ़ नकल बनाई गई। "वार्ड केंथोलिक ने अपनी तश्रीह के **18** वें सफहे, जो **1841** में छपी में कहा है, "मश्रीकी कफ़्फ़ार ने इंजील के बहुत सारे हिस्से तबदील कर दिए। प्रोटैस्टेण्ट पादरियों बादशाह जैम्स **1** को एक रिपोर्ट पेश की और कहाः हमारी दुआओं की किताबों में मौजूद हमद व सना हिबरानी ज़बान की किताबों से मुख्तलिफ़ हैं। उन में तकरीबन **200** तबदीलियाँ हैं। दूसरी तरफ़, प्रोटैस्टेण्ट पादरियों ने उसमें मज़ीद तबदीलियाँ करदी।" इन तहरीफ़ात की बहुत सारी मिसालें **इज़-हार-उल-हक्का** किताब में दी गई हैं। गॉस्पेल के मुख्तलिफ़ इशाअतों में तफरीफ़ात की वज़ाहतें इज़-अद-दीन मुहम्मदी की किताब **अल-फासिल-बएन-अल-हक्क वल-बातिल**, और **तौहफत-उल-अरीब** अब्दुल्लाह तरजुमान के ज़रिए की गई हैं।

सारे पादरए जानते हैं के ईसा अलैहि सलाम ने कुछ नहीं लिखा। न ही उन्होने कोई लिखी हुई दस्तावेज़ अपने पीछे छोड़ी और ना हीं किसी और ने कुछ लिखा। उनके ऊपर उठाए लिए जाने के बाद नुज़रानियों में इख्तलाफ़ात शुरू हो गए। वो अपनी मज़हबी इल्म को एक साथ इकट्ठा नहीं कर

पाए। नतीजे के तौर पर, पचास से भी ज़्यादा गॉस्पेल लिखी गइं। उनमें से चार मुंतखिब की गई। ईसा अलैहि सलाम के आठ साल बाद फिलिसितिन में शामी ज़बान में **मैथयू** की गॉस्पेल लिखी गई। इस गॉस्पेल की असली कॉपी आज मौजूद नहीं हैं। अलबत्ता एक किताब मौजूद हैं जिसे इस किताब का यूनानी तर्जुमा कहा जाता हैं उनके **3** साल बाद **मार्क** की गॉस्पेल रोम में लिखी गई। **लयूक** की गॉस्पेल उनके **28** साल बाद यूनान में Alexandria में लिखी गई। और उनमें **38** साल बाद, **जॉन** की गॉस्पेल आफसस में लिखी गई। ये तमाम गॉस्पेलस हवालों, कहानियों, और वाक्यात पर मुबनी हैं जो ईसा अलैहि सलाम के बाद रोनुमा हुए। लयूक और मार्क हवारियों में से नहीं थे। उन्होने जो दूसरो से सुना वही लिखा। इन गॉवपेलस के लिखने वाले अपनी किताबों को इंजील (बाएबल) नहीं कहते थे। वो कहते थे ये तारीख की किताबें हैं। इन किताबों का बाद में तर्जुमा करने वालो ने इन्हें इंजील का नाम दिया।

ये किताब, **कौल-अस-सबत** **1341** [ए.डी. **1923**] में सैयद अब्द-उल-कादिर इस्कंदरानी के ज़रिए लिखी गई, **अकाविल-उल-कुरआनिया** नामी किताब के जवाब में, जो अरबी में लिखी गई और एक प्रोटैस्टेण्ट पादरए के ज़रिए छापी गई; **1990** में, (हकीकत किताबेवी) ने इस किताब को दो किताबों **अस-सिरात-उल-मुस्तकीम** और **खुलासा-त-उल-कलाम** के साथ दोबारा शाय करवाया।

असली इंजील हिबरानी ज़बान में लिखी हुई थी और इसे यहूदियों ने उस वक्त तबाह कर दिया था जब उन्होने ईसा अलैहि सलाम को सूली पर चढ़ाने के लिए गिरफ्तार किया था। ईसा अलैहि सलाम का दावत का ज़माना, उन तीन सालों के दौरान कोई एक जिल्द भी असली मुकददस किताब की लिखी नहीं गई। ईसाई असली इंजील से इंकार करते हैं। चार गासॅपेलस जिन्हें वो इंजील बताते हैं इबादत का कोई निजाम नहीं बताती। जो कुछ उसमें हैं वो ईसा अलैहि सलाम और यहूदियों के बीच होने वाली बहसें हैं। अगरचे, एक

मज़हबी किताब को इबादत के तरीके बताने चाहिए। अगर वो ये दावा करते हैं के वो अपनी इबादत तौरह के मुताबिक करते हैं, तो फिर वो उसकी इतनी अहम अहकामात को क्यों नज़रअंदाज़ करते हैं जैसे के सब्बत [हफ़्ते के दिन] करना, ख़ात्मा कराना, और ख़िंज़िर के गोश्त से परहेज़ करना? उनकी गॉस्पेलस में इस किस्म का कोई हुकूम नहीं मिलता के इन अहकामात की परवाह नहीं करनी चाहिए। दूसरी तरफ़, कुरआन अल-करीम हर किस्म की इबादत, अख़लाकयात, कानून, तिजारत, ज़राअत और साईन्स के बारे में तफ़सीमी मालूमात फराहम करता हैं, और इन शौबो को बढ़ावा भी देता है। ये सारे किस्म की जिस्मानी और रूहानी मसाईल का हल तजवीज़ करता है।

चौदह सौ साल/1400 साल के अरसे में कोई शायर अदब का आदमी, या कोई भी ज़ीद्दी काफ़िर इस काबिल नहीं हो सका के कुरआन अल-करीम की किसी भी एक आयत की हु बहू कोई कहावत या जुमला बना सके, बेशक कितनी भी कोशिश की हो। ना ही इस्लामी किसी एक आयत की सहत के बारे में कुछ कहा जा सका, इसके बावजूद के इसमें इस्तेमाल होने वाले ज़ख़ीरा अलफ़ाज़ आम इस्तेमाल होने वाले सादा अलफ़ाज़ पर मुशतमिल हैं, ये साबित करते हैं के साफ़ मोअजिज़ा हैं (चमत्कार जो नबी के ज़रिए आया)। मुहम्मद अलैहिसलाम के दूसरे मोअजिज़े माज़ी के वाक्यात हैं वो सिर्फ़ आज नाम में मौजूद हैं। जहाँ तक कुरआन अल-करीम का तअल्लुक हैं; तो ये सूरज की तरह चमक्ता रहेगा, हमेशा और सब तरफ़। ये हर बीमारी की दवाई हैं, ये हर बीमारी का मरहम हैं। अल्लाह तआला, सबसे ज़्यादा रहीम, ने इसे अपने हबीब-ए-अकरम (सबसे ज़्यादा प्यारे) को अता किया और आज पर नाज़िल किया ताकि उसके सारे बंदे मसरूर हो जाएँ। अपनी लामहदूद महरबानी और रहमदिली से, उसने इसे तबदीलियों और तहरीफ़ात से महफ़ूज़ रखा। उसने ये वादा दूसरी आसमानी किताबों के लिए नहीं फरमाया।

तमाम नबियों की शरीआत, (अल्लाह तआला के ज़रिए) उन औकात की ज़रूरयात मुताबिक बनाई थी जिसमें वो रह रहे थे, इसलिए कुदरती तौर पर वो एक दूसरे से मुख्तलिफ़ थीं। ताहम, ईमान के उसूल, उन सबमें यकसाँ थे। उन सब ने तालीम दी के अल्लाह तआला एक हैं, और मौत के बाद दोबारा ज़िंदा किया जाएगा।

तौरह की कुतब ख्मसा/deuteronomy की **39** वीं आयत में कहा गया है ः "...खुदा तो वही है जो आसमान में ऊपर है, और ज़मीन के नीचे तकः दूसरा कोई और नहीं है।" (deut:4-19), और छठे बाब मेंः "सुनो, ए बनी ईसराईलः हाकिम हमारा खुदा सिर्फ एक हाकिम हैः" (IBID:6-4) सरगुज़िश्त **2** में सुलेमान (सेलोमन) अलैहि सलाम इस तरह बयान करते हैं, "...ए मालिक बनी ईसराईल के खुदा, आपकी तरह का कोई खुदा आसमान में नही, नाहीं ज़मीन में,..." (**2** chr:**6-14**) "...देखो, जन्नत और जन्नतों की जन्नत भी इसको नहीं रख सकती, कितना छोटा ये मेरा घर है जिसे मैंने बनाया है!" (IBID:6-18) बैत-उल-मुकददस (जरूसलाम में मस्जिद अल-अकसा) बनाने के बाद ये बात कही। **15** वे बाब में **1** samevel/सेमूईल में लिखा है के नबी **सेमूईल** ने कहा, "...बनी ईसराईल का रब ना ही झूठ बोलेगा ना ही पछताएगाः क्योंकि वो आदमी नहीं है, के वो पछताए।" (sam:15-29) नबी **ईसा** सप मंसूब किताब **45** वें बाब में मंदरजाज़ेल बयान है ः "मैं ही खुदा हूँ, और कोई दूसरा नहीं है,..." (IS 45-5) मैं ही रोशनी बनाता हूँ, और अँधेरा पैदा करता हूँः मैं ही अमन लाता हूँ, और बुराई तख्लीक करता हूँः..." (IBID: 45-7) मैथयू की गॉस्पेलस के **19** वें बाब में लिखा हैं..." और, देखो, एक आया और उनसे कहा, अच्छे आका, मैं कौन सा अच्छा काम करूँ, के मुझे अबदी ज़िंदगी मिल जाए? और उन्होने कहा उससे तुमने मुझे अच्छा क्यों कहा? यहाँ पर सिर्फ़ एक ही अच्छा हे और कोई नहीं, वो हे, अल्लाह ः लेकिन अगर तुम अबदी ज़िंदगी हासिल

करना चाहते हो, तो अहकामात बचा लाओ। (matt: 19-16,17) मार्क के **12** वें बाब में मंदरजाज़ेल बयान हैं: "और एक मुंशी आया, और..." उसने पूछा, सबसे पहला हुकूम कौन सा है? और "जिस्स/ईसा ने उसे जवाब दिया, तमाम अहकामात में से सबसे पहला हुकूम है, सुनो, ए बनी ईसराईल; मालिक हमारा रब एक खुश है :" "और तुम्हें अपने रब से अपने दिल से, अपनी पूरी रूह से, और अपने पूरे ज़हन से और अपनी पूरी कुव्वत से मोहब्बत करनी चाहिए;" (मार्क: **12-28,29,30**) मुहम्मद अलैहि सलाम ने भी यही फरमाया है। एक शख्स जो मुहम्मद अलैहि सलाम से इख्तलाफ़ [ईमान नहीं रखता] रखता है वो सारे नबियों से ईमान नहीं रखता। तसलीस पर ईमान [तीन खुदाओं की मोजूदगी] का मतलब है सारे नबियों से मंकट होना। तसलीस का अकीदा ईसा आलैहिसलाम के आसमान में उठाए लिए जाने के बहुत अरसे बाद नमूदार हुआ। इससे पहले, सारे नासरी **तौहीद** (अल्लाह को एक मानना) पर यकीन रखते थे और तौरह के कई उसूलों को माना करते थे। मगर जब बुत परस्तों और यूनानी फलसफ़ियों की एक बड़ी तादाद ईसाईयों से आकर मिल गई तो उन्होने अपना पूराना ईमान, यानी तसलीस नासरियों के मज़हब में भी शामिल कर दिया। ये एक फ्रांसिसी किताब में लिखा हुआ है, जिसे अरबी में तर्जुमा किया गया और **कुरआत-उल-नफूस** नाम दिया गया, के एक शख्स जिसने सबसे पहले, **200** सन ईसवीं में, ईसाई मज़हब में मिलाया, वो एक पादरी था जिसका नाम सबलेकस था, और ये के इस इल्हाक की वजह से बहुत खून खराबा हुआ। उस वक्त बहुत सारे आलिमों ने तौहिद के अकीदे का दिफ़ाअ किया और कहा के ईसा अलैहिसलाम एक इंसान और नबी थे। ये **300** वें साल की बात हैं के इस्कंदरिया के अरिअस ने तौहिद के अकीदे को नाफ़िज़ किया और ये एलान किया के तसलीस का अकीदा गलत और खोखला है। नाएसन काउन्सिल (पहला) इजलास जो **325** में अज़ीम कौंसटेंटाई ने मुनअकिद करवाया था इसमें, अकीदा ए तौहीद को बंद कर दिया गया और आएरस को इस ज़ात से बाहर कर दिया गया। वो बज़ाते खुद ये नहीं जानते

के **मुकददस जिन** (रूह), जिसे वो तसलीस के तीसरे खुदा से मंसूब करते हैं दरअसल क्या है उनका कहना है के वो मुकददस रूह थी जिसके ज़रिए ईसा अलैहि सलाम अपनी माँ के रहम में आए, जबकि इस्लाम तालीम देता है के रूह-उल-कुदस (मुकददस रूह) एक फरिश्ते-ए-अज़ीमा है जिनका नाम जिब्राईल है। ([1] **इज़ाह-उल-मेराम** तुर्की किताब जिसे अब्दुल्लाह अबदी बिन दसतान मुस्तफ़ा मनसीर के बए रहमतुल्लाही अलैह ने लिखा। वो **1303** [ए.डी. **1885**] में फौत हो गए। ये किताब याहया एफ़न्दी के छापेखाने में छपवाई गई, मुसतफा पाशा के शैख ने इसे फौरन इदिरनेक, इस्तानबुल में जमा कर दिया।)

शम्स-अद-दीन सामी बए ने अपने **कामूस उल-अंलाम** के **1316** [ए.डी. **1898**] के एडिशन में लिखा : इस्लामी नबी मुहम्मद अलैहि सलाम है। आपके वालिद अब्दुल्लाह और आपके दादा अब्द-उल मुतालिब बिन अबद-ए-मनाफ़ बिन ज़ोहरा बिन किलाब। किलाब अब्दुल्लाह के पर दादा थे। अब्दुल्लाह ने **दार-उल-नाबिघा** में दमिकश से तिजारती सफ़र से वापसी पर वफ़ात पाई। ये जगाह मदीना के मज़ाफ़ात में वाक्य हैं। उनकी उमर **25** साल थी। उन्होने अपने बेटे को नहीं देखा था। आप (मुहम्मद अलैहि सलाम) अपनी दाई हलीमा के साथ उनके कबीले में पाँच साल रहे। ये कबीला जिसका बनी साईद था, अरब का सबसे फसीह कबीला था। इसी वजह से, मुहम्मद अलैहि सलाम बहुत फसाहत से गुफ़तगू फरमाते थे। जब आपकी उमर **6** साल हुई तो आमना (आपकी मुबारक माँ), आपको आपके मामूँ के घर ले गई मदीना में और वहीं रहलत फरमा ली। आपकी आया, उमम-ए एमन, आपको मक्का अब्दुल-मुतालिब (आपके मुबारक दादा) के पास ले आई। आप जब आठ साल के थें, तब अब्दुल मुतालिब भी रहलत फरमा गए और आपने अपने चाचा अबू तालिब के घर रहना शुरू कर दिया। जब आप **12** साल के हुए तो आप अपने चाचा अबू तालिब के साथ एक तिजारती सफर पर दमिक्श गए। जब आपकी उमर **17** साल हुई तो आपके चाचा जुबेर आपको ले

गए।जब आप **25** साल के हुए तो ख़दीजा रज़ी अल्लाहु अन्ह के तिजारती कारवान के रहनुमा के तौर पर तिजारती मुहिम पर दमिश्क गए। आप अपने आला अतवार, खुबसूरत अख़लाक व सीरत और महनती आदात की वजह से मशहूर हो गए।दो महीने बाद आपकी शादी ख़दीजा से हो गई।जब आप चालीस साल के हुए तो जिब्राईल नामी फरिश्ते आपके पास आए और आपको नब्बुवत के बारें में इतलाअ दी।ख़दीजा आप पर सबसे पहले ईमान लाई, और उनके बाद अबू बकर, फिर अली, जो आप **43** साल के थे तो आपको सबको इस्लाम का दावते आम देने का हुकूम हुआ।कुफ़फ़ार ने आपको बहुत तकलीफ़ें पहुँचाई।जब आप मदीना-ए-मुनव्वरा हिजरत कर गए तो आपकी उमर **53** साल थी।आप पीर के दिन रबी उल अव्वल की **8** वीं को जो इततेफ़ांक से सितम्बर का **20** वा दिन था, **622** वें साल में ईसाई सदी के मुताबिक, मदीना के कबा गाँव में पहुँचे।हज़रत उमर की खिलाफ़त के दौरान ये साल (यानी **622** ए . डी) मुस्लिम सदी यानी हिजरी की शरूआत माना गया और मोहररम के महीने का पहला दिन इस्लामी साल यानी **हिजरी कमरी** के साल का पहला दिन माना गया।ये दिन जुलाई के महीने की **16** तारीख़ थी, और जुमा था।सितम्बर की **20** तारीख़ हिजरी शमसी का पहला दिन माना गया।ईसवीं सदी का **623** वाँ नया साल का दिन पहली हिजरी शमसी और कमरी सालों में आया।जब पहला हुकूम आया ग़ाज़ा और जिहाद करने का काफ़िरों के ख़िलाफ़ (अल्लाह तआला की तरफ से), तो **बदर** की (मुकददस जंग) **ग़ज़वा** हिजरत के दूसरे साल में लड़ी गई।**950** कफ़फ़ार की ताकतवर फौज के, **50** मारे गए और **44** बंदी बना लिए गए।तीसरे साल में, **ग़ज़वा-ए औहद** लड़ा गया।काफिरों की तादाद **300** थी, जबकि मुसलमान शुमार में सिर्फ़ **700** थे।**75** सहाबी शहीद हुए।चौथे साल में **ग़ज़व-ए-खंदक** (गढ़ा) लड़ा गया और पाँचवे साल में **गज़व ए मुसतलाक** लड़ी गई।और इसी साल के दौरान मुसलमान औरतों अपने आपको ढाँपने का हुकूम दिया गया।**ग़ज़ब-ए-ख़ैबर** और हुदेबिया के मकाम पर होने वाली अमन का मुआहिदा जिसे

बैत-उर-रिज़वान कहते हैं, छठे साल में हुआ। सातवें साल में कैसर और कसरा को इस्लाम कुबूल करने के दावत के खत भेजे गए। आठवें साल में **ग़ज़व-व-मूता** हरकोलस की सरकरदगी में बाज़नसतिनी फौज से लड़ा गया. मक्का को फतह किया गया और **ग़ज़व-ए-हुनएन** में कामयाबी हुई। नौवें साल में **ग़ज़व-ए-तबुक** के लिए मुहिम चलाई गई। दसवें साल में **हज्जतुल विदा** (अलविदा) अदा किया गया। ग्यारवें साल में, तेरह दिन बुखार में रहने के बाद, मुबारक नबी मस्जिद के बराबर अपने कमरे में **12** रवी उल अव्वल को पीर के दिन रहलत फरमा गए, जब आप **63** साल के थे। रसूलुल्लाह 'सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम' हमेशा खुश अखलाक और नरम गुफ़तार रहे। आपके मुकददस चेहरे पर हमेशा नूर चमकता रहता था। जो भी आपको देखता उसे आपसे इश्क हो जाता। आपकी शराफ़त, सबर, आला खलकी और बहतरीन आदात हज़ारो किताबों में लिखी गई। खतीजा रज़ी अल्लाहु अन्ह से आपकी चार बेटियाँ और चार बेटे थे। और मिस्र की माटिया से एक बेटा था। आपकी तमाम औलद सिवाए फातिमा के आपकी ज़िंदगी में ही वफ़ात पा गई। **कामूस-उल-अलाम** से हमारे इकतेबास का ये इखतेताम हैं।

इमाम ग़ज़ाली ने अपनी किताब **किमया-ए-सआदत** में लिखा है, "अल्लाह तआला ने अपने बंदो के पास नबी भेजे। इन अज़ीम लोगो के ज़रिए अल्लाह तआला ने अपने बंदो को खुशी की रहनुमाई करने वाले और तबाही की तरफ़ ले जाने वाले रास्तों के बारे में आगाह किया। सब से अज़ीम, आला मरतबें और तमाम नबियों से आखिरी नबी **मुहम्मद** अलैहिसलाम हैं। आप तमाम लोगों, सारी कौंमो के लिए नबी पर ईमान लाना होगा।" एक शख्स जो आपके ऊपर ईमान लाए और आपके मुताबिक चले तो वो इस दुनिया में और आखिरत में भी नएमतें और रहमतें हासिल करेगा। दूसरी तरफ़ वो जो, आप पर ईमान नहीं लाएगा, वो आखिरत में कभी न खत्म होने वाला अज़ाब झेलता रहेगा।

इखतिमाम

मुख्तसर में, **दीन** (मज़हब) के मआनी हैं ज़ाबतों का निज़ाम जिसे अल्लाह तआला ने अपने नबियों पर नाज़िल किया ताकि ईमान, बरताव अलफ़ाज़ और रवय्यों जो अल्लाह तआला के ज़रिए पसंद किया जाता हैं उनको सीखाया जाए इबादत की अदाएगी और इस दुनिया में और आखिरत में आबादी खुशी के हुसूल के तरीको के बारे में तालीमाद दी जाए। अधूरे इंसानों की मन घड़त वहमी और तसव्वुराती कहानियों को दीन करार नहीं दिया जा सकता। ज़हन/दिमाग़ अहकामात व मुमानियत और उनकी अताअत के लिए बहुत कारआमद हैं। ताहम ज़हन इन अहकामात और मुमानिआत में छुपे हुए पुरअसरार और बुनियादी हिकमत को समझने से कासिर हैं। न ही वो उनका कोई मंतकी नतीजा निकाल सकता है। ऐसे पुरअसरार हकाईक तबही समझे जा सकते हैं जब अल्लाह तआला इनके बारे में नबियों को मतलअ करे या फिर मखफ़ी अंदाज़े से औलिया पर नाज़िल फरमाए। और ये दरहकीकत एक नएमत हैं जो सिर्फ़ अल्लाह तआला की जानिब से ही अता होती हैं।

अब बात ये हे के, इस दुनिया में और अगले जहान में असली खुशी हासिल करने के लिए और अल्लाह तआल की मोहब्बत पाने के लिए मुसलमान होना लाज़मी है। एक ग़ैर मुस्लिम काफ़िर (मुनाफ़िक, ईमान न रखने वाला) कहलाता हैं। और **मुसलामान होने के लिए**, दरहकीकत **ईमान का होना** और **इबादत करना** लाज़मी हैं। **इबादत करने** का मतलब हैं के पूरे तौर पर, अपने कौल व फैल से मुहम्मद अलैहि सलाम की शरीअत की पैरवी की जाए। हुकूम करदा इबादत सिर्फ़ इस लिए अदा करनी चाहिए के ये अल्लाह तआला के अहकामात में से हैं और इनके अदा करने से किसी किस्म का दुनियावीं फाएदा हासिल करने की इच्छा नहीं रखनी चाहिए। शरीअत से मुराद **उसूल व ज़वाबित** [अहकामात और मुमानिआत] हैं जिनकी तालीम कुरआन अल करीम में दी गई

है और अहादीस-ए शरीफ़ के ज़रिए वज़ाहत की गई, और जो फिकह की किताबों, या इल्महाल मर्द और औरतों दोनों के लिए यकसाँ हैं, **फ़र्ज़-ए-ऐन** हैं, के शरीअत के बारे में सीखे, यानी, मज़हबी उसूल वाजिब हैं (करना या नहीं करना) हर मुसलमान मुफरिद के लिए। ये उसूल आदमियों के लिए हर किस्म की रूहानी व जिस्मानी बीमारी का इलाज है। एक शख्स को तिब, फनून, तिजारत या कानून सीखने के लिए कई साल लगते हैं पहले हाई स्कूल और फिर कई साल युनिवर्सिटी में। इसी तरह, इल्महाल की किताबों को सीखना और अरबी ज़बान का मुतालआ भी कई साल लगता है। जो लोग ये चीज़े नहीं सीखते वो इन झूठी बातों और इल्ज़ामों में आसानी से फँस जाते हैं जो अंग्रेज़ जासूसों और उजरती सिपाहियों, मुनाफिकों, नाम निहाद मज़हबी आलिमों और अंग्रेज़ जासूसों के भटकाए हुए ग़ददार मुदब्बिर अपने से घढ़ते हैं, और आखिरकार इनका अंजाम एक कहर ज़दा और तबाह हाल मंज़िल पर होगा और वो इस दुनिया में और आखिरत में अज़ाब झेलते रहेंगे।

कलिमा-ए शहादात पढ़ना और उसके मआनी पर यकीन करना **ईमान** कहलाता है। एक शख्स जो कलिमा-ए शहादत वाज़ेह करता हैं और उसके इस लफ्ज़ के ज़रिए बताए गए हकीकी मआनी पर यकीन करता है वो **मोमिन** कहलाता है। कलिमा ए शहादत ये है "अशहदु अन ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलूहू।" इसका मतलब है : "कोई नहीं है इबादत के लायक सिवाएं अल्लाह के, और मुहम्मद अलैहि सलाम उसके बंदे और उसके नबी हैं जिसे उसने सारी आलमियत की (रहनुमाई) के लिए भेजा।" आपके बाद कोई नबी नहीं आएगा। तहतावी के फुटनोटस में मंदरजाज़ेल तरीके से बयान हैं, उस मज़मून के आखिर में जिसमें रोज़ाना की पाँच नमाज़ों को किस तरह अदा किया जाए जो उसने किसी तरह छोड़ दीं या कज़ा हो गई, **मिराक-इल-फलाह** किताब में बताया गया है, "इस्लाम सिर्फ़ ये मानना नहीं हैं के अल्लाह तआला मौजूद हैं। वो काफ़िर जो उसके साथ किसी

शरीक करते हैं वो भी उसकी मौजूदगी को मानते हैं। मोमिन बनने के लिए ज़रूरी है के ईमान लाया जाए के अल्लाह का वुजूद है, और ये के वो सिफ़ाते कामल का हासिल हैं, वो एक है और हमेशा से ज़िंदा हैं और ज़िंदा रहेगा, वो हर चीज़ का इल्म रखता है, उसे हर चीज़ पर कुदरत हासिल है, सब कुछ इसी की मरज़ी से होता है, वो सब देखता है, और सुनता है, और उसके अलावा कोई खलिक नहीं। उसने कुछ हकाईक मख्फ़ी ज़बान में ज़ाहिर किए। लोग जो कुरआन अल करीम और अहदीस ए शरीफ़ पर तो ईमान रखते हैं मगर उनके कुछ हिस्सों की तशरीह में अहल अस सुन्ना के आलिमों से इत्तेफ़ाक नहीं रखते, उन्हें बग़ैर **मसलक** के लोग कहा जाता है। उन लोगों में से जो मसलक के बग़ैर हैं, वो जो सिर्फ़ ईमान की मखफी तालीमात की गलत वज़ाहत करते हैं वो लोग **बिदअती** या गुमराह मुसलमान कहलाते हैं। वो लोग जो ज़ाहिरी एलान करदा अहकामात की गलत वज़ाहत करते हैं वो **मुलहिद** कहलाते हैं। एक मुलहिद काफ़िर होता हैं, अगरचे वो अपने आपको एक मुस्लिम बताए। बिदअत वाला शख्स, हालाँकि, एक काफ़िर नहीं होता। ताहम वो बेशक दोज़ख में सख्त अज़ाब पाएगा। उन किताबों में जो इस बात से आगाह करती हैं के अहल अस सुन्नत के आलिम अज़ीम और राहे रास्ते पर हैं, उनमें **महज़ान उल-फिकह इल-कुबरा** नाम की किताब जो एक नेक सुहानी, मुहम्मद सुलेमान एफ़ंदी की हैं, जो बहुत कीमती हैं। दूसरी तरफ़, वो काफ़िर जो मुसलमान होने का नाटक करते हैं और कुरआन अल करीम की मनफ़ी तालीमात की, अपनी ज़हनी इस्तात और तर्जुबाती मालूमात के मुताबिक गलत वज़ाहत करते हैं और मुसलमानों को भटकाते हैं, वो **ज़िंदकी** कहलाते हैं।

अहल-अस-सुन्नत के मुख्तलिफ़ आलिमों ने शरीअत के मख्फ़ी वज़ाहतों वालें हिस्सों से मुख्तलिफ़ नतीजे निकाले हैं। इस तरह मज़हबी दस्तूर के बारे में मआमलात यानी शरीअत के बारे में चार मसालिक नमूदार हुए। ये मसालिक **हन्फी, मालिकी, शाफीई** और **हंबली** हैं। ये चारों मसालिक ईमान के

मामलात में एक मत हैं। ये सिर्फ़ इबादत के तरीकों में मामूली फर्क रखते हैं। इन चारों मसालिक से तअल्लुक रखने वाले लोग एक दूसरे को इस्लामी भाई मानते हैं। हर मुसलमान को आज़ादी हासिल हैं के वो इन चार मसालिक में से किसी को भी मुंतखिब करे और अपने सारे अमाल इस मसलक के मुताबिक करें। मुसलमानों का चार मसालिक में तकसीम होना अल्ल्लाह तआला की मुसलमानों पर महरबानी का नतीजा हैं। अगर किसी मुसलमान को अपने मसलक से हम आंहग होकर इबादत की अदाएगी में किसी किस्म की परेशानी महसूस होती है तो वो दूसरे मसलक की पैरवी इख्तियार करके अपनी इबादत आसानी से अदा कर सकता है। दूसरे मसलक की पैरवी करने के लिए ज़रूरी शर्ते हमारी (तुर्की की) किताब **सआदत-ए-अबदिया** (कभी न खत्म होने वाली खुशियाँ) में लिखी गई हैं।

सबसे अहम इबादत नमाज़ है। अगर एक शख्स नमाज़ अदा करता है तो उसे मुसलमान समझ लिया जाएगा। अगर एक शख्स नमाज़ अदा नहीं करता तो उसके मुसलमान होने पर शक हो सकता है। अगर कोई मुसलमान शख्स नमाज़ की अहमियत से आगाह है मगर सस्ती अंदाज़ कर देता है और नमाज़ को नज़र अंदाज़ कर देता हैं और नमाज़ अदा न करने का उसके पास कोई माकूल उज़र नहीं हैं, तो मालिकी, शाफ़िई और हंबली मसालिक की शरअई अदालतें उसे सज़ाए मौत देंगी, (अगर वो इन मसालिक में से किसी एक में है)। अगर वो हन्फ़ी मस्लक में हैं तो उसे उस वक्त तक केद में रखा जाएगा जब तक वो बाकाएदगी से नमाज़ की अदाएगी शुरू नहीं कर देता और उसे हुकूम दिया जाता है के वो अपनी तमाम कज़ा नमाज़ें भी अदा करे। तुर्की में हकीकत किताबों के ज़ेरे अहतमाम शाया करदा किताबें **दुरर-उल-मुंतका** और **इबनि आबिदीन**, और **किताब-उल-सलात** में बयान किया गया हैः "दिन की पाँच नमाज़ों को कज़ा करना या फिर बग़ैर किसी काबिले कुबूल उज़र के इन नमाज़ों को मुकर्रर औकात पर अदा न करना एक कबिरा गुनाह है। इस गुनाह की

माफ़ी हज या तौबा करने से ही मिल सकती है। और ये तौबा उस वक्त तक कुबूल नहीं हो सकती जब तक वो शख्स नमाज़ या कज़ा नमाज़ें अदा न करले। एक शख्स अपने आपको इस हराम हालत से बाहर निकाल सकता है अगर वो फर्ज़ नमाज़ों की कज़ा अदा करले बजाए रोज़ाना की सुन्नत नमाज़ों के जिसे रवातिब कहते हैं। एक मोअतबिर मज़हबी किताब में लिखा है के अगर किसी शख्स के ज़िम्मे फर्ज़ रकअतों की नमाज़ का कर्ज़ हैं तो उसकी कोई भी सुन्नत और नफ़िल नमाज़ें कुबूल नहीं होगी बेशक वो बिल्कुल सही ही क्यों न हो। यानी वो इस सबब (ईनाम) को नहीं पाएगा जिसका वादा अल्लाह तआला ने किया है। इसके बारे में इकतेबासात हमारी किताब **सआदत-ए-अबदिया** में है। इस्लाम की तरफ़ से मुकर्ररा करदा उज़र और असबाब की वजह से नामाज़ का छोड़ देना बाइसे गुनाह नहीं। ताहम चार मसालिक इस बात पर राज़ी हैं के इंसान को जितनी जल्दी हो सके वो नमाज़ें अदा करनी होंगी जो उसने कज़ा करदीं या छोड़ दीं, बेशक वो नमाज़ काबिले कुबूल उज़र की वजह से ही क्यों न छोड़ी हो। सिर्फ़ हन्फ़ी मसलक में ये जाईज़ है के कज़ा नमाज़ों को उस वक्त तक मुल्तावी कर दिया जाए जब तक कोई शख्स अपनी रोज़ी कमाने में मसरूफ़ हो या फिर सुन्नत जिन्हें रवावित कहा जाता हैं नमाज़ें या फिर अहदीस में नसीहत करदा नफ़िल नमाज़ों की अदाएगी में मसरूफ़ हो। यानी ये जाईज़ हैं के इन असबाब से कज़ा नमाज़ों को मुल्तवी कर दिया जाए। ताहम बाकी तीन मसालिक के मुताबिक ऐसे शख्स के लिए ये जाईज़ नहीं जो ना काबिले कुबूल उज़र के तहत नमाज़ छोड़ दे, के वो सुन्नत या नफ़िल नमाज़ें अदा करे। ये हराम हैं। ये हकीकत हैं के नमाज़ की वो रकअते जो काबिले कुबूल उज़र की वजह से छोड़ी ये उनके बराबर नहीं हैं जो बग़ैर किसी काबिले कुबूल उज़र के छोड़ी गई हों ये **दुरर उल-मुखतार, इबनि अबिदीन, दुरर उल-मुतका,** तहतावी की **मेराक इल-फलाह** और **जोहरा** की वज़ाहत में लिखा हुआ है।

11 नवंबर-1991

पोस्ट बाक्स 4249 कदुना

नाएजिरिया

बिस्मिल्लाहि-रहमानिर-रहीम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाही तआला व बराकाताहु

प्यारें भाई,

मैं तुम्हारी तंज़ीम से अपने लिए और अपनी फैमिली के लिए इस्लामी अदब की दरख्वास्त के लिए लिख रहा हूँ।

मेरी परेशानी ये है के मुझे इस्लाम की गहरी समझ नहीं है ख्वासतौर से तारीख्वी, और आम उसूलों की। ये मेरे लिए बहुत परेशानी का बाइस है क्योंकि, मग़रिबी इल्म ज़्यादा हासिल करने की वजह किसी भी इस्लामी अहसास को भटकाने के लिए काफ़ी है, यह निज़ाम अनजाने में मेरे ज़हन मे बस गया है जो मेरे ईमान को हमेशा तबाह करने की कोशिश करता है। मैं इन झुकाओं से लगातार लड़ता रहता हूँ-एक लड़ाई जो अकसर मेरी आदत में हैं के हमारी पाक किताब कुरआन में कुछ अहम मसलें हैं, मेरे बहुत सारे ग़ैर मुस्लिम साथी और दोस्त, ख्वासतौर से ईसाई हमेशा इस्लाम के बारे में जानना चाहतें हैं, मुकददस कुरआन और कुछ हम ज़माना मसलों जो मुसलमानों के बारे में हो या आम तौर से मेरी तरफ़ से इस्लाम के बारे में बताए जाते हैं। मैं, ज़्यादातर, अपने आपको इस मामले में मफ़लूज़ पाता हूँ और अच्छे तरीके से उनके सवालों के जवाब नहीं दे

पाता क्योंकि मैं खुद इस्लामी अदबी जानकारी नहीं रखता। इसके अलावा मुझे अरबी ज़बान समझ नहीं आती, मगर मे इस सिलसिले में बहुत ज़्यादा मेहनत कर रहा हूँ क्योंकि मुझे गहरी दिलचस्बी और पक्का इरादा है वो सब इस्लाम के बारे में जानने का जो मुझे जानना चाहिए।

मैं, इसलिए आपकी सख़्त मदद चाहता हूँ, इनशाहअल्लाह आप मुझे और मेरी फैमली को ईमान की अच्छी तालीम पर मुबनी करने में मदद करेंगे। ये हमें इनशाहअल्लाह अच्छी तरह तैयार कर देगी, इस्लाम की रोशनी को अपने माहौल में और उससे भी बाहर फैलाने के लिए। मैं खासतौर से आपका शुक्रगुज़ार रहुँगा अगर आप मेरी इल्तिजा पर गोर फरमाएंगे और उसमें इस्लामी मज़हब का इल्म पर इशाअते और साथ ही साथ जो आपको लगता हो हमारी रूहानी बढ़त के लिए ज़रूरी और फाएदेमंद हों उसे भी शामिल करलें।

शिददत से आपके महरबानी भरे जवाब का मुंतज़िर।

वअस्सलाम।

इस्लाम में आपका भाई

इस्माईल अल हसन सती

खास पैग़ाम सुन्नी नौजवानो के नाम

मेरे सुन्नी भाइयो!

होश में आओ। खबरदार हो जाओ। यह दौर बड़ा नाज़ुक और सिर्फ फ़ितना नही **Double** फ़ितना यानी मोबाईल इंटरनेट का दौर है। **You Tube** में रियाकारी न करे। **Whatsapp** या **Facebook** में अपना **Face** या **Fitness** को दिखाकर तकब्बुर पैदा न करे। दोस्ती अल्लाह के लिए और दुश्मनी भी अल्लाह के लिए करे। सख्त आज़माइश का वक्त है। बे दीनी व बद अकीदगी सुलहकुल्लीयत और मुनाफ़िकत की आंधियों और गुमराही के तूफान जोरों पर है। लिहाज़ा अपने ईमानो अकाइद की खूब हिफाज़त करो और बुज़ुर्गाने दीन के तरीके पर काइम रहो। गैरों की सोहबत व मजलिस और तकारीर व लेट्रेचर से बचो और उल्मा–ए– रब्बानीइन, बुजुरगाने दीन, सल्फे सालेहीन के हालात का मुताअला करो (एक किताब **तज़किरतुल औलिया** पढ़ो) और उनकी किताबें पढ़ो और सौम व सलात की पाबन्दी करो। दुरूद व सलाम की कसरत रखो। क्योंकि ईमान की सलामती इससे वाबस्ता है। शरीअत के मुताबिक दाढ़ियां रखो। सादा व सुथरा लिबास पहनो सरों पर अंग्रेजी बाल न रखो। निगाहो को झुकाऐ रखो। शर्मगाहो की हिफाजत करो। किसी अल्लाह वाले की दरगाह में ईमान बचाने के नियत से हाजिरी दिया करो। आपस में इत्तेफाक व मुहब्बत से रहो। अल्लाह करीम तबारक व तआला बतुफैल अपने हबीबे करीम व सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम और अहले बैत, हमें अहले सुन्नत व जमात के अकाइद व आमाल पर काइम रखे और खात्मा ईमान पर फरमाए। आमीन– सुम्म आमीन० बहुर्मते सय्यदल मुर्सलीन रहमतुल लिल आलिमीन शफीउल मुज़न्निबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम०

सुन्नी नौजवान

अनवर रज़ा खान